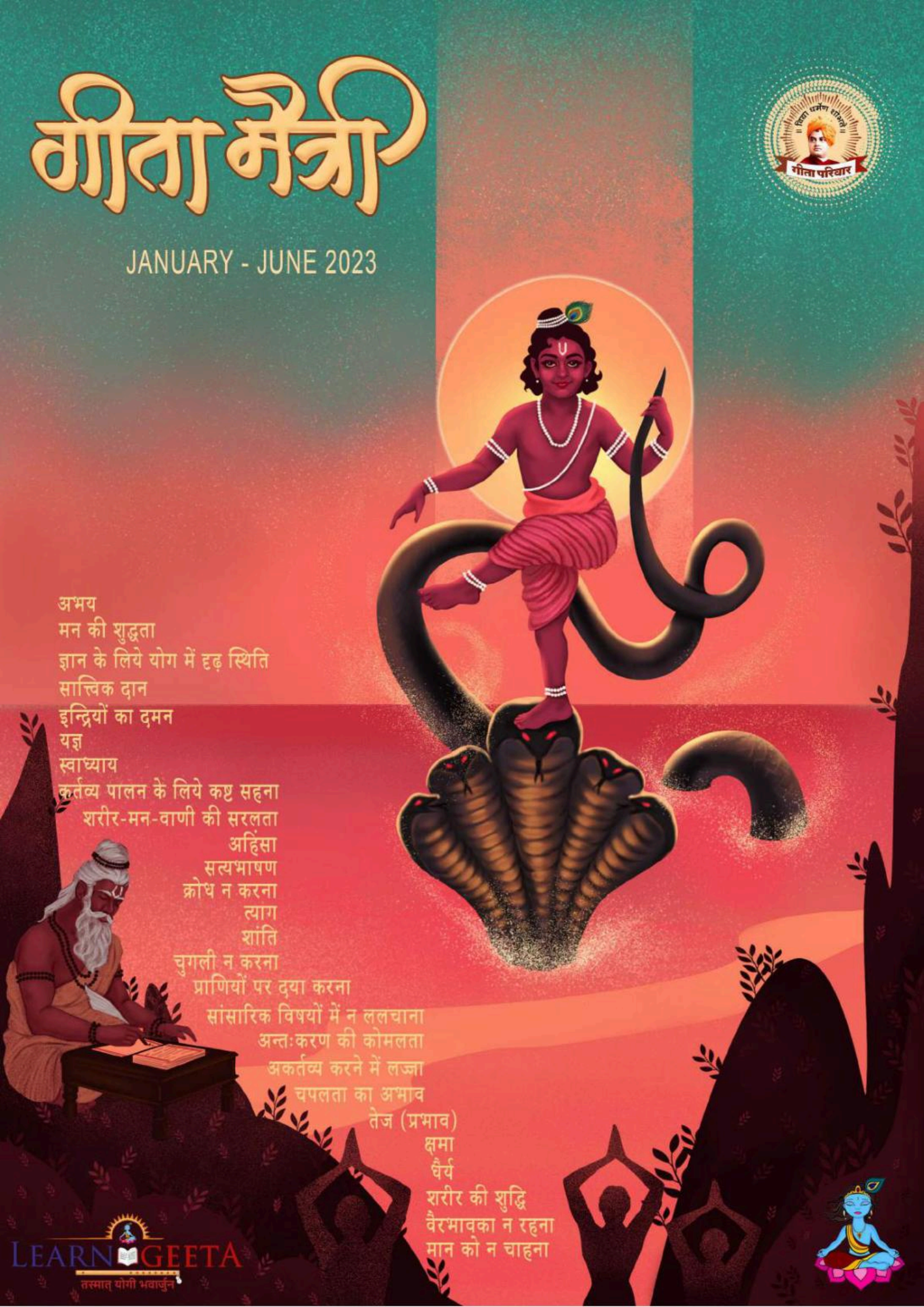
गीता मैत्री

JANUARY - JUNE 2023



अभय
मन की शुद्धता
ज्ञान के लिये योग में दृढ़ स्थिति
सात्त्विक दान
इन्द्रियों का दमन
यज्ञ
स्वाध्याय
कर्तव्य पालन के लिये कष्ट सहना
शरीर-मन-वाणी की सरलता
अहिंसा
सत्यभाषण
क्रोध न करना
त्याग
शांति
चुगली न करना
प्राणियों पर दया करना
सांसारिक विषयों में न ललचाना
अन्तःकरण की कोमलता
अकर्तव्य करने में लज्जा
चपलता का अभाव
तेज (प्रभाव)
क्षमा
धैर्य
शरीर की शुद्धि
वैरभावका न रहना
मान को न चाहना

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन



संस्थापक अध्यक्ष

प.पू. स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज

कार्याध्यक्ष

डॉ. संजय मालपाणी, संगमनेर

उपाध्यक्ष

श्री हरिनारायण व्यास (दक्षिणांचल प्रभारी)
डॉ. आशू गोयल (उत्तरांचल प्रभारी)
आ. प्रमिला माहेश्वरी (मध्यांचल प्रभारी)
श्री गोविन्द माहेश्वरी (पश्चिमांचल प्रभारी)
श्री सन्दीप माहेश्वरी (पूर्वांचल प्रभारी)

कोषाध्यक्ष

श्री महेन्द्र काबरा, मुम्बई

सचिव

श्री श्रीकान्त कासट, संगमनेर

सह सचिव

श्री गिरीश डागा

गीता मैत्री

A Learngeeta Six-Monthly Newsletter



मुख्य संपादक

डॉ. आशू गोयल

सह संपादक

सुश्री कविता वर्मा

लेखक एवं संकलनकर्ता

श्रीमती कविता तापड़िया – अहमदाबाद
सौ. सोनाली काला – पुणे
श्री सुनील कापडी – मुम्बई
श्री यतीश विजयवर्गीय – कोटा
श्री रमेश राटेरिया – कोलकाता
श्रीमती पुनीता प्रसाद – चेन्नई
श्री बिमल जैन – कोलकाता

मुख्यपृष्ठ

सुश्री कश्मीरा , ठाणे

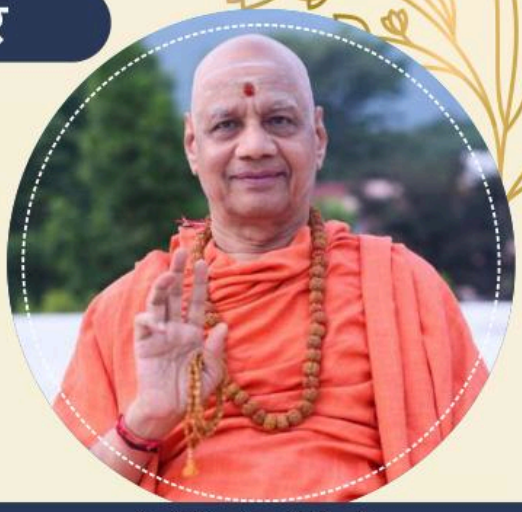
ई-बुक डिजाइनर

सुश्री शिप्रा सिंह
एक्सेल इलेक्ट्रोस्टेट, लखनऊ

अनुक्रमणिका

- संत उद्गार 3
  - प. पू. स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज
- गीता भाव गीत 4 - 5
  - डॉ. संजय जी मालपाणी (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार)
- सम्पादकीय 6
  - डॉ. आशू जी गोयल (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गीता परिवार)
- विभिन्न समारोह 7 - 12
- गीता चिन्तनिका सत्र 13 - 19
- आओ गीतासेवी बनें 20 - 24
- गीता भक्ति दिवस 25 - 26
- RAM PRATHISHTHA - App Launch 27 - 28
- वर्धिष्णु विश्ववन्दिता लर्नगीता - तृतीय वार्षिकोत्सव 29 - 32
- Hanuman Chalisa Abhiyan 33 - 36
- Linguistic Epiphanies 37 - 40
- विवेचन - सूत्र सञ्चालन समूह 41
  - सौ. कविता मानधने, परभणी
- गीता मैत्री मिलन 42 - 62
  - छत्तीसगढ़, संभाजीनगर, अकोला, कोलकाता, धुलिया, हैदराबाद, गुजरात
- आओ गीता खेलें 63 - 67
- Volunteer's Brigade 68 - 69
- गीताव्रती सूची 70 - 76
- आँकड़ों की नज़र में 77

संत उद्गार



प.पू स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज
संस्थापक अध्यक्ष-गीता परिवार, कोषाध्यक्ष-रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास

भगवद्गीता कितनी गहरी है ऐसा प्रश्न होने पर कहना होगा कि जितनी आपके चित्त की गहराई है उतनी गहरी है यह गीता। आकाश की अनन्तता का वर्णन करते हुए कहना होता है कि तितली अपनी क्षमता से उड़ती है, चिड़िया अपनी क्षमता से उड़ती है एवं गरुड़ अपनी गति से उड़ता है किन्तु कोई भी आकाश को पार नही कर पाता है उसी प्रकार भगवद्गीता की गहराई में जाते जाते अन्ततः ऐसा हो जाएगा कि आप भगवद्स्वरूप हो जायेंगे। केवल आप ही भगवद् स्वरूप हो जाएंगे, अन्य कुछ भी नही रह जायेगा। अतः श्रीकृष्णार्जुनसंवाद से पहले यह ब्रह्मविद्या है।

यह उसकी विद्या है जिसके द्वारा सारे संसार का जन्म हुआ। यह पंचमहाभूतात्मक सृष्टि जिसमे से निकली है यह उसकी विद्या है। उस तत्व से सिवाय अन्य कोई तत्व है ही नही, यह उस परम तत्व की विद्या है। यह संसार के परम स्त्रोत को जानने की विद्या है। और इतना ही नही क्योंकि इसका वर्णन तो उपनिषदों में भी मिलता है किन्तु भगवद्गीता की उपनिषदों से एक विलक्षणता है, वह है योगशास्त्र।

गीता में मात्र परमात्मविद्या नही है, ब्रह्मविद्या नही है किन्तु उसे व्यवहार मे कैसे उतारना है इसका प्रतिपादन भगवान ने भगवद्गीता में किया है। और विशेष बात है कि यह प्रतिपादन जैसा भगवद्गीता में किया है वैसा अन्य कहीं भी नही किया है।

उदाहरण के लिए भगवद्गीता में यज्ञ शब्द आया है उस यज्ञ शब्द को भगवद्गीताकार व्यवहार में ढालते ढालते बारह प्रकारों में उसका वर्णन करते हैं। और इस कारण वह यज्ञ शब्द जीवनव्यापी हो जाता है। यह यज्ञ शब्द भगवद्गीताकार ने वेदों से लिया किन्तु उसे इतना व्यवहारिक बना दिया कि यदि हम भगवद्गीता की दृष्टि से देखें तो हमारा सम्पूर्ण जीवन ही यज्ञमय ही दिखने लगे जायेगा।

भगवद्गीताकार यज्ञ, योग, भक्ति सभी को व्यवहार के एक एक अंग में डाल देते हैं और उसका परिणाम ऐसा होता है कि हमारा ऐहिक जीवन एवं आध्यात्मिक जीवन भिन्न भिन्न नही रह जाता है किन्तु एक ही हो जाता है। सम्पूर्ण जीवन को आध्यात्मिक बनाने का यह महान साधन है भगवद्गीता।

गीता सन्देश



डॉ. संजय मालपाणी

जीवन में यशस्वी वही सर्वदा
स्वयं से संतुष्ट रहे जो सदा !!

अर्जुन ने श्रीकृष्ण को स्थितप्रज्ञ व्यक्ति को कैसे पहचानें यह प्रश्न पूछा और भगवान् ने 18 श्लोकों में यह व्याख्या समझायी। जिसमें पहले ही श्लोक में भगवान् ने कहा-

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥

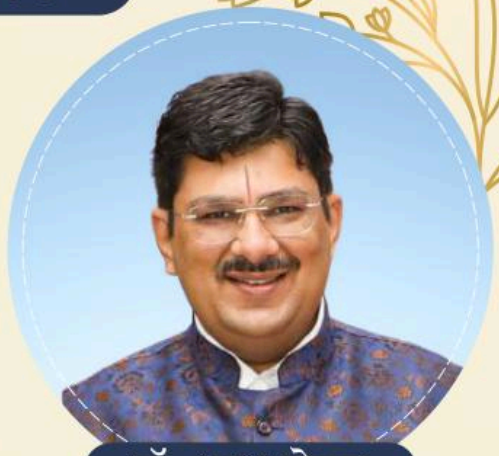
अर्थात् सभी कामनाओं को त्यागकर जब व्यक्ति स्वयं से स्वयं संतुष्ट रहता है तब वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है। हमारी संतुष्टि सदैव बाहरी बातों पर निर्भर करती है। मुझे यह सुख मिले तब मैं संतुष्ट बन जाऊँगा, मुझे यह बिषय मिल जाए, यह मेरे साथ ऐसा व्यवहार करे, मुझे मान सम्मान प्राप्त हो, वह मुझे यह वस्तु दे, मुझे जीवन में यह पद अथवा वह प्रतिष्ठा मिल जाए तब मैं संतुष्ट हो जाउँगा आदि... ये सारी बाहरी बातें हैं और क्षणभंगुर भी हैं। जो आप से आज अच्छा व्यवहार करे वह कल बुरा व्यवहार भी कर सकता हैं, आज मिला हुआ विषय कल पुराना होकर कालबाह्य होना ही हैं। पद और प्रतिष्ठा की अपनी कालमर्यादा हैं। यह सारी कामनाएँ सुख की हैं। सुख का अंतिम छोर दुःख ही होता है। अतः सुख की प्राप्ति से संतुष्टि अर्थात् शाश्वत आनंद की अनुभूति नही हो सकती। अनपेक्ष याने निरपेक्षता अर्थात् अपेक्षाओं का त्याग ही संतुष्टि का एक मात्र मार्ग है। कर्मयोग से इस मार्ग पर पहुँचा जा सकता हैं। केवल कर्म अपेक्षाओं को जन्म देता है। मैंने यह काम किया अब मुझे इससे यह लाभ होना चाहिए यह वृत्ति अपेक्षाओं की जन्मदात्री हैं। मैने कर्तव्य भावना से काम कर दिया, फल की अपेक्षा से नहीं किया, ऐसी मानसिकता कर्मयोग कहलाती है। 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' इस श्लोक का अर्थ है कि हम कर्म करते रहें परंतु फल की अपेक्षा ना करे। इस का यह अर्थ यह नहीं है कि आपको अपने कर्म का फल नहीं मिलेगा। कर्मानुरुप फल तो मिलेगा ही... बस अपेक्षा ना करे इतना ही पर्याप्त है। बिना अपेक्षा के कुछ भी मिल जाए तो मन प्रसन्न हो जाता है। परंतु यदि अपेक्षा के अनुकूल नहीं मिलता है तो मन खट्टा हो जाता हैं। ऐसी अवस्था में मन किसी काम में एकाग्र नहीं हो सकता। मन यदि स्थिर चित्त नहीं है तो फिर बुद्धि भी अस्थिर हो जाती है। इसीलिए भगवान् कहते हैं कि यदि प्रज्ञा प्रतिष्ठित करनी है तो अपेक्षा

से बाहर निकल जाओ। जब मन और बुद्धि स्थिर होगी तो अपने आप हमारी कार्यकुशलता बढ़ती है और निर्णय भी सही होते हैं। आगे भगवान् बताते हैं कि हम स्वयं से प्रसन्न रहना सीखें तो प्रज्ञा प्रतिष्ठित होगी। जब कोई कार्य निःस्वार्थ निरपेक्ष भाव से होता है तब हमें अपरिमित संतोष की अनुभूति होती हैं। इसी को कर्मयोग कहते हैं। हमारे दैनंदिन जीवन में प्रतिदिन कम से कम एक कार्य हमें सर्वजन हितार्थ करने से इस संतुष्टि का अनुभव होता है। गीता परिवार के गीता संथा कक्षा कार्य से जुड़े अनगिनत स्वयंसेवी सदस्य इस निरपेक्ष सेवा का आनंद लेकर संतुष्ट हो रहे हैं। इसी अनुभूति के कारण अन्य कामों को भी वे कुशलता से करते हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यावसायिक तथा सामाजिक कार्य में भी उनकी स्थिर मति के कारण उन्हें सफलता प्राप्त होती हैं। सफलता के लिए आत्मसंतुष्टि और आत्मसंतुष्टि के लिए कर्मयोग यही जीवन को सफल और सुंदर बनाने का गीता मार्ग हैं।

गीता भावगीत

तप्त मन जब शुष्क हो , हरि नाम का संस्मरण हो।
भाव जब निष्पर्ण हो तब, भक्ति का अंकुरण हो॥
शत्रुता मन में घिरे जब, मैत्री मंगल स्मरण हो।
धर्म का विस्मरण हो तब , कृष्ण का अवतरण हो॥
क्रोध की ज्वाला जले जब, सजगता से तरण हो।
मोह का आवरण हो तब , पार्थ सा जागरण हो॥
अभय से अंतर जगे जो, भयक्रांत मन संकीर्ण हो।
अज्ञान का जब तम घनेरा, ज्ञान रवि अवतीर्ण हो॥
जब कामना का ज्वर उठे, और लोभ का अभिसरण हो।
संयमन का ले सहारा, शुद्ध अंतःकरण हो॥
मृत्यु जब नर्तन करे, अमृत सुधा का वरण हो।
दंभ दानव घेर ले तब, दिव्य दैवी शरण हो॥
अभिमान का विष दंश हो तब, हृदय में श्री चरण हो।
मन करे सुमिरन सदा, और दर्प का संहरण हो॥
असत् की अवधारणा पर, सत्य का अवतरण हो।
तमस् के वातावरण में, ज्योति रश्मि किरण हो॥

सम्पादकीय



डॉ. आशू गोयल

ये अंक दैवी स्वभावयुक्त गीता मित्रों को भगवान श्री कृष्ण के 16वें अध्याय में वर्णित 26 प्रकार की दैवीय संपदा को अर्जित करने की प्रेरणा देता है। कोई पौधा जब बड़ा बनता है तो बढ़ते समय के अनुसार उससे पल्लवित और पुष्पित होने की भी आशा की जाती है। वो पौधा दिन प्रतिदिन पुष्ट हो रहा है, विकास को प्राप्त कर रहा है, उसमे नया सृजन हो रहा है और अब वह अन्य लोगो के लिये उपयोगी भी सिद्ध हो रहा है। उसमे एक आकर्षण, भव्यता, जीवन्तता प्रकट हो रही है। ऐसा ही हम अपनी गीता मैत्री पत्रिका से और अपने प्रिय आदरणीय प्रेमीजन पाठको एवं सदस्यों से भी आशा रखते हैं। जब पौधा अपने शैशव काल में था तो जो कीड़े मकोड़े भी उसको खा सकते थे, आज वह उस वृक्ष को अपना आश्रय बनाते हैं। जो गाय बकरी उस पौधे के विकास काल में उसे चर जाते थे, आज उसी वृक्ष से बाँध दिये जाते हैं। जो पौधा अधिक धूप में कुम्हला जाता था, आज वो मनुष्यों सहित अनेक जीव जन्तुओ को छाया का सुख दे रहा है। जो पौधा अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए भयभीत था, आज गीता के प्रथम दैवी गुण 'अभयम्' का प्रतीक बन गया। अब वह स्वयं के लिए नहीं, दूसरों को सुख देने, दूसरो के लिए उपयोगी होने के लिए अपना तना, छाल, पत्ते, पुष्प, फल, काष्ट, छाया, आक्सीजन देने वाला देवता बन गया। दैवीय गुण देवता बनाते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जैसे संत कवि भी उस वृक्ष की महिमा गाते हुए लिखते हैं।

"संत बिटप सरिता गिरि धरनी, परहित हेतु सबन की करनी।"

गीता माता की छत्र छाया मिलने से पहले हमें अपने जीवन में सार्थकता का अभाव सा भासता था।

आहारनिद्राभयमैथुनञ्च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥२५॥

ये सबके जीवन में है, मेरे भी जीवन में था, लेकिन सीखने से सिखाने की यात्रा में मुझे क्या क्या मिल गया जब इस पर ध्यान जाता है तो पूज्य स्वामी जी के आभारी हो जाते हैं, और अब जब मुख से 'अपने स्वामी' जी निकलता है तो उनसे अपना सम्बन्ध एक गर्व का अनुभव करवा देता है। एक दिन किसी छाया चित्र का एक गीत सुना तो स्वामी जी याद आ गयी। गीत के बोल थे- 'जब तुमको अपना कहते हैं, अपने पे गरूर आ जाता है।'

ऐसे ही किन्ही क्षणों को एक गीतकार ने लिखा - 'मै था इस जहाँ में जैसे खाली सीप होती, मेरी बढ़ गयी है कीमत तूने भर दिए हैं मोती।' मेरा पूर्ण विश्वास है कि हम सभी निश्चित ही गीताजी और स्वामीजी से जुड़कर उपरोक्त धन्यता का आनंद ले रहे हैं और अब चिरकाल तक इस आनन्द के सहभागी बने रहने को उत्सुक रहेंगे।

विभिन्न समारोह

23rd Batch - L1 Opening Ceremony - 09.01.23

https://www.youtube.com/live/HKP15Hab-JQ





कार्यक्रम का शुभारम्भ अमेरिका से श्रीमती चारुशिला दांडे द्वारा सुन्दर प्रार्थना से हुआ एवं तत्पश्चात् ध्रुव ग्लोबल स्कूल संगमनेर के 20 छात्र-छात्राये जिन्होंने खेलो इंडिया में योगासन में गोल्ड मेडल प्राप्त किये थे, सुंदर नृत्य के साथ दीप प्रज्ज्वलन स्तुति कर सबका मन मोह लिया।

लर्नगीता के 23वें बैच के उद्घाटन सत्र में 61 देशों से नये 42,000 नये साधकों का स्वागत करते हुए आ. आशू भैया ने सभी कि जून 2020 कोविड महामारी के दौरान प्रारंभ की गई ऑनलाइन गीता कक्षाओं में 142 देशों से अब तक 5,18,000 से अधिक लोग गीता कक्षाओं से जुड़ चुके हैं। ऐसा हमने नहीं सोचा था कि यह इतनी तेजी से विस्तारित हो सकता है परन्तु गीता के प्रति सम्पूर्ण विश्व का आकर्षण अद्भुद है। विश्व का एकमात्र ऐसा ग्रंथ, जिसकी जयंती मनाई जाती है। आदि शंकराचार्य ने तो यहाँ तक कह दिया कि यदि किंचित्मात्र भी गीता जी जीवन में धारण हो जाये तो इस मानव जीवन का ही कल्याण हो जाता है। इस नये बैच में पधारे साधक निश्चय ही अपने कल्याण पथ को गीता परिवार के साथ धारण कर सकेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

आ. संजय भैया ने गीता परिवार के संस्थापक अध्यक्ष प. पू. स्वामी श्रीगोविंददेव गिरिजी महाराज तथा कार्यक्रम के अतिथि रूप में विशेष रूप से पधारे प. पू. स्वामी श्रीविज्ञानानंद जी महाराज का पूजन व स्वागताभिनंदन किया एवं पूज्यवरों से आज विशेषरूप से गीता कंठस्थीकरण का प्रात्यक्षिक देने हेतु पधारे पांच साधकों 8 वर्षीय गीताव्रती निकुंज राठी, शेगांव, 48 वर्षीय विनीत जोशी, धार (म.प्र.) 31 वर्षीय शीतल खरग, यूके, 31 वर्षीय गीताव्रती वी. वी. लक्ष्मी, जयपुर तथा 31 वर्षीय अनुराधा वी. मूर्ति, बंगलूरु का परिचय कराया। दोनों पूज्यवरों ने सभी पधारे परीक्षार्थियों से विभिन्न अध्यायों से श्लोक पूछे एवं सभी को हतप्रभ करते हुए सभी परीक्षार्थियों ने अनुस्वार विसर्ग आघात पद्धति से अत्यन्त शुद्ध वाणी में कंठस्थ श्लोकों का सस्वर गायन करके जूम, यूट्यूब, फेसबुक आदि पर देश विदेश से जुड़े हजारों साधकों का मन मोह लिया व सभी को प्रेरणा दी कि हमे भी गीता कंठस्थ करनी है।

संजय भैया ने परमपूज्य स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरि जी महाराज का परिचय देते हुए बताया कि स्वामी जी के सान्निध्य व प्रेरणा से 1986 गीता परिवार की स्थापना से ही विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से सनातन धर्म का प्रचार- प्रसार किया जा रहा

है। 36 वेद पाठशालाओं का निर्माण भी पूरे देश में किया गया है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ न्यास ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष प. पू. स्वामी जी ने कहा कि आज लर्नगीता के एक अन्य विशाल बैच के उद्घाटन में बड़े महात्मा विज्ञानानंद जी जुड़े हैं। हमें आश्चर्य होता है कि आज हम 161 देशों में पहुंच गये हैं जो कि सब साधक कार्यकर्ताओं के परिश्रम का परिणाम है। वह विनम्रता और मधुरता से गीता के श्लोकों को सभी को सिखाते हैं। चाहे कितनी ही बार पूछें किन्तु वे नाराज़ नहीं होते हैं। 18वें अध्याय में श्रीकृष्ण ने कहा भी है कि जो गीता ज्ञान मेरे भक्तों को कहेगा वह मुझे अत्यंत प्रिय होगा।

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः...18/69

गीता परिवार द्वारा सरल पठनीय गीता के कन्नड़, हिंदी, मराठी संस्करण के बाद तेलुगु संस्करण का विमोचन प. पू. स्वामी जी द्वारा किया गया, शीघ्र ही गुजराती और अंग्रेजी में भी इसका प्रकाशन किया जा रहा है।

"गीता मैत्री" षड्मासिक पत्रिका के चतुर्थ संस्करण जुलाई 2022 से दिसंबर 2022 का विमोचन आशू भैया द्वारा किया गया। संजय भैया ने बताया कि कार्यक्रम के अतिथि IIT खड़गपुर के छात्र रहे हैं। इंजीनियर पूज्य स्वामी विज्ञानानंद जी महाराज एग्रीकल्चर, बैंकिंग, डिफेंस, फाइनेंस, ऐरोस्पेस आदि विभिन्न क्षेत्रों में पारंगत, विश्व हिंदू परिषद के संयुक्त महासचिव, विश्व हिंदू फाउंडेशन के संस्थापक, पाणिनि व्याकरण शास्त्र एवं हिन्दू तत्त्व ज्ञान के श्रेष्ठ अभ्यासक, कई संस्थाओं के मार्गदर्शक मनीषी आज हमारे उद्घाटन कार्यक्रम में साथ जुड़े हैं, आपके आशीर्वाद से हजार हाथियों का बल पाकर हम और भी अच्छा कार्य कर पायेंगे। विज्ञानानंद जी महाराज ने कहा स्वामी गोविंददेव गिरि जी जैसे 10 -20 संत देश में हो जाये तो हिंदू धर्म का कल्याण हो जाये। सर्वप्रथम गीता प्रेस गोरखपुर के माध्यम से धार्मिक पुस्तकों एवं गीता का प्रचार हुआ। प्रभुपाद जी ने गीता को पूरे विश्व में बहुत मान सम्मान दिलाया। स्वामी चिन्मयानंद जी ने गीता ज्ञान यज्ञ के माध्यम से पूरे विश्व में गीता का प्रचार किया। अब यह कार्य गीता परिवार उसके हजारों साधकों के द्वारा पूर्ण कर रहा है, जो बहुत ही आनंद की बात है। 21वीं शताब्दी की सबसे बड़ी चिंता यह है कि वेल्थ और टेक्नोलॉजी में मनुष्य बहुत प्रगति कर रहा है। कंफर्ट और लग्जरी की भी भरमार है किन्तु वैल्यू और संस्कार समाप्त हो रहे हैं। इंग्लैंड और अमेरिका की भी यही स्थिति है। हिंदू अभी भी नहीं जगा तो हमारे देश का क्या होगा। हमारे देश में यह भी दुष्प्रचार हुआ है कि गीता पढ़ने वाला तो साधु बन जाता है जबकि गीता सुनकर तो अर्जुन गृहस्थ रूप में ही रहे हैं। गीता जीवन में चरितार्थ करने से हम निर्भय बनते हैं। हेरोडोट्स का कथन था कि अलेक्जेंडर भारत पर आक्रमण करने आया तो पंजाब में लोगों ने इसका विरोध किया तो उसने यह सोचा कि ऐसा क्यों हो रहा है! वहां उसे पता लगा यहाँ साधु और ब्राह्मण जैसे लोग रहते हैं वह आत्मा को अजर और अमर मानते हैं और वह अपनी संस्कृति के लिये लड़ रहे हैं। क्रांतिकारियों के बारे में भी यह था कि दूसरे देशों में लोगों को फांसी के फंदे पर धक्का देकर चढ़ाया जाता था, लेकिन भारत में क्रांतिकारी भगवद्गीता लेकर दौड़ते हुये स्वयं ही फांसी का फंदा लगा लेते थे। एक मेरा व्यक्तिगत उदाहरण है कि मेरे मित्र आईआईएम के निदेशक थे बोस्टन अमेरिका में पीएचडी करने गये तो वहां टैक्सी वाले ने उनसे पूछा कि यहाँ क्या करने आये हो? उन्होंने कहा कि मैं यहां पीएचडी करने आया हूं तो टैक्सी ड्राइवर ने कहा कि आपके यहां तो भगवद्गीता जैसे बड़े-बड़े ग्रंथ हैं तो यहाँ क्या करोगे। मेरा आप सभी से यही कहना है कि भगवद्गीता बहुत सरल है, जैसा कि स्वामी जी ने कहा है कि 'गीता पढ़ें, पढ़ायें , जीवन में लायें'। प्रत्येक हिंदू को हिंदू धर्म की सेवा में थोड़ा समय लगाना ही चाहिये। अधिक से अधिक लोग जुड़ कर गीता का प्रचार करें। आप सभी को जो अभी गीता संथा वर्ग में जुड़ रहे हैं सभी को बहुत-बहुत शुभकामनायें। अंत में धन्यवाद ज्ञापन छत्तीसगढ़ से भूमिजा बन्डाले दीदी ने दिया जो कि 2021 से गीता परिवार में विभिन्न प्रकार की सेवाये दे रही हैं। समापन प्रार्थना सुनंदा नागोरी दीदी, मलेशिया में कॉस्टयूम डिजाइनर हैं, उन्होंने किया।

4th Batch - L4 (II) Opening Ceremony - 17-01-23

https: www.youtube.com live zBwjFcaBA4g





स्तर 4 बैच का शुभारंभ दिनांक 17 जनवरी 2023 को हुआ। इस बैच में 6 हजार से अधिक प्रशिक्षार्थियों ने रजिस्टर किया। एनीमेशन फ़िल्म के द्वारा गीता पढ़ने के महत्व को समझाया गया। प्रार्थना हेतु नेपाल से रुचि टोडी दीदी जो फरवरी 21 से गीता परिवार से जुड़ी हैं, को आमंत्रित किया गया। दिव्य दीप प्रज्ज्वलन रायपुर छत्तीसगढ़ से सीमा मिश्रा दीदी जो गीता परिवार से 2 वर्ष से जुड़ी हैं और विभिन्न प्रकार की सेवाये दे रही हैं, के द्वारा किया गया।

20 दिनों में 2 अध्याय का शुद्ध पठन, नि:शुल्क पीडीएफ, ऑडियो सामग्री एवं संस्कृत व्याकरण कक्षाओं के विषय में बताया गया।

इसके पश्चात् गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशू जी गोयल भैया को आमंत्रित किया गया, उन्होंने कहा कि हम सोचते हैं कि मैं गीता सीखूं, गीता पढ़ूँ किन्तु हमारे सोचने से कुछ नहीं होता है। भगवान ने हमें इस कार्य हेतु चुना है, हम भगवान के कृपा पात्र बने हैं। स्वामी रामसुखदास जी ने भी कहा है कि गीता सुनने, पढ़ने वालों की मुक्ति निश्चित है। अत: हमें गीता से पृथक् नहीं होना है। अपने सम्पूर्ण जीवन को गीता में लगाये एवं गीतमय बन जाये। इस ओजस्वी प्रस्तावना के पश्चात् गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी भैया ने अपने उद्बोधन में कहा कि चौथे चरण की यात्रा कुछ कठिन है, ये घाटी वाला धाम है इसमें बड़े अध्याय हैं लेकिन रुकना नहीं है, झुकना नहीं है, चलते रहना है।

चौथे स्तर में अपने आप को देखना प्रारंभ करना है ये आपको अपने धर्म की याद दिलाता है जो जिसका कार्य है वही उसका धर्म है, सभी को अपने-अपने धर्म की पालना करनी चाहिये। योगेश्वर श्रीकृष्ण 18वें अध्याय में कहते हैं।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज..... 18/66

इस श्लोक का अर्थ समझ लेंगे तो गीता की यात्रा पूर्ण हो जाएगी। भगवान् कहते हैं मेरे शरणागत हो जाओ। मन विचार शून्य हो जाये तो विकार शून्य हो जायेगा। बांसुरी बजाते श्रीकृष्ण का ध्यान करते हुए, भगवान के कमल पत्र जैसे चरणों को निहारते हुए भगवान में रम जाएं। इस प्रकार विभिन्न श्लोकों के माध्यम से गीता जी को अपनाने को प्रेरित किया।

अब चार विशेष प्रशिक्षार्थियों से सबका परिचय करवाया गया। हरिप्रिया दीदी आयु 8 वर्ष, पुणे से, इन्हें 12 अध्याय कण्ठस्थ हैं। सूर्य कुमारी दीदी आंध्र प्रदेश से, उषा सुब्रह्मण्यम दीदी उम्र 63 वर्ष ने 5 अध्याय श्लोकांक सहित एवं सम्पूर्ण गीता कण्ठस्थ करके

गीताव्रती बनी हैं , आपने ये दिखा दिया कि आयु किसी भी कार्य हेतु बाधक नहीं होती है । गुंजन गुप्ता दीदी दिल्ली से 6 अध्याय श्लोकांक सहित कण्ठस्थ करके गीताव्रती बनी हैं । आ. आशू भैया ने कहा कि गीता को कण्ठस्थ करने का प्रयास करें, सभी आयु के व्यक्ति अभ्यास से यह कार्य कर सकते हैं । इन सभी साधकों द्वारा सुन्दर कण्ठस्थीकरण का प्रत्याक्षिक प्रस्तुत किया गया।

गीता जी का हमारे मानस पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह दर्शाने हेतु जिन साधकों ने तीन स्तर पूर्ण कर लिये हैं, उनके मनोगत सुने गये जो कि संक्षिप्त में इस प्रकार हैं -

- हेमंत गोयनका जी - जीवन में धैर्य आने लगा है, मन को शांति मिलती है
- आशा जोशी दीदी - अनुस्वार का सही प्रयोग करने लगे हैं , गीता सिखाने वाले सभी बहुत अच्छे एवं धैर्यवान् हैं।
- शशांक जी - गीता परिवार से जुड़ने के बाद मस्तिष्क में आध्यात्मिक प्रश्न आते हैं ।
- प्रणव पंचोली जी - आज कार्य में तनाव बहुत है किन्तु गीता जी पढ़ने के बाद बी. पी. नॉर्मल हो गया है।
- अनीता आनंद दीदी - मैं गीता कक्षा में थी तभी माँ ने प्राण त्यागे तो उनके कान में जरूर गीता जी के श्लोक गये होंगे, उनको मुक्ति मिली होगी कृष्ण कृपा से।
- वेंकट सूर्यवंशी जी छोटी सी कविता सुनाई। जयंत काम्बले जी, सुकेतु शाह जी, सुधीर जी, दत्तात्रेय जी, गीतिका जी, गोविंदराम जी , प्रशांत जी, विवेक जी, कविता शर्मा जी, एस. बी. मोहता जी, पी . एल. बोन्दर दीदी आदि ने हृदय स्पर्शी मनोगत सुनायें।

औरंगाबाद से हनुमान दास बाहेती भैया, जो अक्टूबर 2020 से गीता परिवार से जुड़े हैं, ने धन्यवाद ज्ञापित किया। टोरंटो-कनाडा से डिंपल रूपरेलिया दीदी जो जनवरी 2022 से गीता परिवार से जुड़ी हैं, ने बहुत मीठे स्वर में समापन प्रार्थना की।

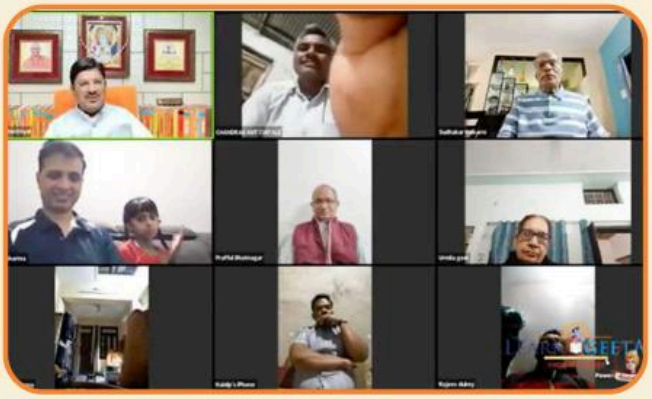
अंत में अनुजा भट्टड़ दीदी ने सभी को शुभकामनाये एवं धन्यवाद ज्ञापित किया ।



23rd Batch - Feb L2 Opening Ceremony - 17-02-23

https://www.youtube.com/live/SVN6tomgmQo





सूत्र संचालक नमिता जी मेहरा दीदी ने, स्तर 1 से स्तर 2 में प्रवेश किये हुये साधकों का स्वागत किया। कार्यक्रम का आरंभ प्रार्थना कर्नाटक से डॉ. शोभाजी नादगीर दीदी ने की। दीप प्रज्ज्वलन कोलकाता से शशी जी अग्रवाल दीदी के हाथों संपन्न हुआ। उसके पश्चात् ऑनलाईन गीता क्लासेस के प्रोग्राम डायरेक्टर तथा गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आ. डॉ आशू जी गोयल भैया ने प्रास्ताविक मार्गदर्शन किया। आदरणीय डॉ. आशू भैया ने फरवरी माह में स्तर 2के 23वें बैच के उद्घाटन समारोह में 144 देशों से जुड़े 21,000 साधकों का स्वागत व अभिनन्दन करते हुये कहा की आपको स्वयं भगवान् की कृपा प्राप्त हुई है और साक्षात् श्रीहरि ने आपका चयन किया है। इसिलिये आप सभी को इस लोक व परलोक दोनों में आपका कल्याण करने वाली श्रीमद्भगवद्गीता जी को सीखने का परम् सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।।

अद्भुत गीताजी को पढ़ने से बालक कुशाग्र, युवा वर्ग जीवन के हर क्षेत्र में विजयी, प्रौढ़ जीवन में असीम शांति का अनुभव करते हैं तथा बुजुर्ग पढ़ते हैं तो मुमुक्षुत्व को प्राप्त हो जाते हैं। आज लगभग 5,30,000 लोग, 144 देशों से, 18 समय सत्रों में, 12 भाषाओं में सोमवार से शुक्रवार तक नियमित 1300 ज़ूम क्लासेस में निष्काम गीता ज्ञान यज्ञ चल रहा है।

आ. भैया ने जिज्ञासु परीक्षा का अद्भुत, भावनिक अनुभव कथन किया। एक बहन जो भयंकर शारीरिक पीड़ा ग्रस्त है; जन्म से केवल बिस्तर पर है, उठ नहीं पाई है, बोल भी नहीं सकती थी। उनको गीताजी के सान्निध्य में आनेसे इतनी ऊर्जा मिली है; कि प्रयास करने पर पहले शब्द उन्होंने गीताजी के श्लोक ही बोले। आगे भैया ने कहा गीताजी के पठन से हजारों साधाकों को स्वास्थ्य लाभ हुये। डायबिटीज, डिप्रेशन की दवायें छूट गई। संबंधों में मधुरता, स्वभाव में सौम्यता की उपलब्धियां प्राप्त हुई। भैया ने आवाह्न किया कि गीतासेवा से जुड़ें। गीता प्रचार, प्रसार कर अपने साथ मित्र एवं परिवारजनों को ज्ञान यज्ञ से जोड़कर जीवन कल्याण का मार्ग और प्रशस्त करें।

आ. भैया ने आपने प्रास्ताविक मार्गदर्शन के बाद गीताव्रती साधकों के न प्रात्यक्षिक लिये। बैंगलौर से प्रभा अय्यर दीदी (आयु 63वर्ष), अहमदनगर से गीताव्रती निकुंज राठी भैया(आयु 8 वर्ष), मुंबई से गीताव्रती उषा सुब्रह्मण्यम दीदी (आयु 63 वर्ष), राजकोट से गीताव्रती ज्योत्स्ना आबानी दीदी (आयु 65 वर्ष) ने बहुत सुन्दर गीता कंठस्थीकरण का सुन्दर प्रात्यक्षिक दिया।

तत्पश्चात् स्तर 2 में पहुंचे साधाकों के मनोगत हुये। जहाँ साधको नें बताया कि संस्कृत भाषा को ना जानते हुये भी गीताजी को लगन व उत्साह के साथ सीखा। निरंतर श्रवण व पठन से अध्याय 12 व 15 कंठस्थ भी किया। कई साधकों ने अपने भीतर आत्मविश्वास बढ़ता हुआ पाया। तत्पश्चात् गुजरात से दिनेश जी अखानी भैया द्वारा धन्यवाद ज्ञापन हुआ। गोपीनाथ जी केतन भैया ने समापन प्रार्थना संपन्न की। पावन हनुमान चालीसा पाठ से सत्र का समापन हुआ।



अन्य स्वागत समारोह -

24th Batch - FEB L1 Welcome Ceremony - 27-02-23
https://www.youtube.com/live/98I0lXXADn0

11th Batch - Feb L3 Opening Ceremony - 14-03-23
https://www.youtube.com/live/Z9IJ74ajgjc

24th batch - Apr L2 Opening Ceremony - 03-04-23
https://www.youtube.com/live/m888WA4dkr8

25th Batch - Apr23 L1 Opening Ceremony - 18-04-23
https://www.youtube.com/live/hWCWvNBBROk

25th Batch - May L2 Opening Ceremony - 29-05-23
https://www.youtube.com/live/0QJNdi5fnnM

26th Batch - June23 L1 Opening Ceremony - 02-06-23
https://youtube.com/live/6o7bAvO91M0

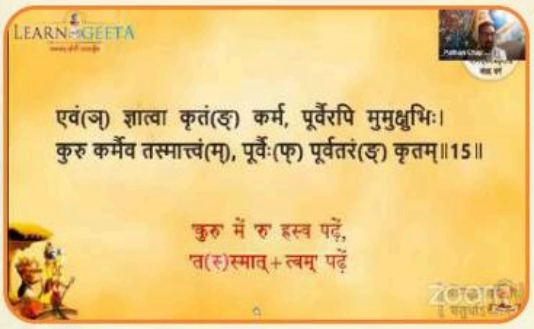
गीता चिन्तनिका

गीता चिन्तनिका सत्र - 4, 5, 6वाँ अध्याय - 02 01 23

https://www.youtube.com/live/SHA5j3vBEDM







* सूत्र संचालक - मीनू जी झंवर
* आरंभ प्रार्थना - अनीता जी बिलैया
* दीप प्रज्ज्वलन - मनीषा जी एवं कृति जी बर्धन
* चतुर्थ अध्याय पठन - गीताव्रती प्रदीप जी अग्रवाल
* पंचम अध्याय पठन - गीताव्रती डॉ. अपर्णा जी होलकुंडकर
* षष्ठम अध्याय पठन - गीताव्रती सरिता जी फडणवीस
* चतुर्थ अध्याय चिंतन - गीताव्रती श्रावणी जी नाईक
* पंचम अध्याय चिंतन - गीताव्रती अजीत जी काकड़े
* षष्ठम अध्याय चिंतन - गीताव्रती कुमुद जी गुप्ता
* धन्यवाद ज्ञापन - अनुजा जी लाहोटी
* तकनीकी सहायक - गोपाल जी नाथावत/सुनील जी धूत
* समापन प्रार्थना - गीताव्रती प्रिया जी अग्रवाल

चिंतन सार :

चतुर्थ अध्याय - गीताव्रती श्रावणी नाईक, पुणे

श्रीभगवान् ने अर्जुन से कर्म तथा पदार्थों का स्वरूप से त्याग करके तत्त्वदर्शी, अनुभवी और शास्त्रज्ञ महापुरुष के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करने की प्रचलित प्रणाली की प्रशंसा की और इसके लिये अर्जुन को आज्ञा दी। जो ज्ञान श्रीभगवान् ने सूर्य को, सूर्य ने अपने पुत्र मनु को और मनु ने पुत्र राजा इक्ष्वाकु को दिया था।

शरीर, मन, इंद्रियां, बुद्धि आदि वस्तुयें हमे परहित करने के लिये मिली है। नि:स्वार्थभाव से केवल दूसरों के हित के लिये कर्म करना ही कर्मयोग हो जाता है।

कर्म ईश्वर को अर्पण करना, भगवान् के नाम का जप, भगवद्कृपा प्राप्ति हेतु शास्त्र साधनों का अध्ययन ही 'यज्ञ' है और यज्ञ के अनेकों स्वरूप हैं।

पंचम अध्याय चिंतन - गीताव्रती अजीत काकड़े जी, पुणे

उन्होंने भगवान् के उपदेशों को अपनी भाषा में बोलना आरंभ किया कि जिसके मन, बुद्धि से सभी विकार, पाप, ताप, अहम, आसक्ति मिट जाते है, सृष्टि में निर्मित सभी प्राणिमात्र के साथ शास्त्र मर्यादानुसार यथायोग्य व्यवहार करते हुये भी आत्मबुद्धि एक ही रहती है और उनके सुख व दुःख में वह समभाव रखता है, वो योगी है। उसे परब्रह्म स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। ऐसा साधक भगवान् को सभी शुभकर्मों का भोक्ता मान, परमात्वतत्त्व को उसी का सुहृद दृढ़ता पूर्वक मान लेता है, उसे परमशांति की प्राप्ति होती है।

भगवान् के मत में ज्ञानयोग व कर्मयोग; दोनों का परिणाम एक ही है। दोनो ही साधनों की पूर्णता होने पर साधक संसार बंधन से मुक्त होकर आत्मसाक्षात्कार कर लेता है। अतः दोनों ही मोक्षप्राप्ति के साधन है।

कर्मयोगी जो संसार बंधनों से मुक्त है नित्य सन्न्यासी समझने योग्य है। कर्मयोग के बिना सांख्ययोग (जिसमें कर्म का उसके स्वरुप से त्याग, अलिप्तता) का साधन कठिन है। सांख्ययोग में कर्मयोग आवश्यक है पर कर्मयोग में सांख्ययोग की आवश्यकता नहीं। दोनों योग कल्याणकारी होने पर भी कर्मयोग को ही भगवान् श्रेष्ठ बताते है।

षष्ठम अध्याय चिंतन - गीताव्रती कुमुद जी गुप्ता, मुजफ्फरनगर

इसमें छठे अध्याय में भगवान् ने अर्जुन को ध्यानयोग का उपदेश देने का औचित्य समझा।अर्जुन के साथ साथ मानवमात्र के कल्याण के मार्ग प्रशस्त करते हुये निर्वाण, परमशान्ति के योग को भगवान् समझाते है। निर्विकार, जितेंद्रिय होकर, केवल परमात्मातत्त्व ही चराचर के कण कण में चिन्मय सत्तामात्र रूप से परिपूर्ण है यह निश्चय करें। अपने कुशासन या मृगछाला को स्थापन करें। अंतःकरण को राग द्वेषादि से मुक्त, साथ ही 'मैं' – 'मेरापन' के भाव से रहित भयमुक्त होकर, ब्रह्मचारी नियमों के पालन के साथ भगवत्प्राप्ति का शुद्ध उद्देश्य जो साधक रखता है, वो निःस्पृह योगी निर्वाण पद को प्राप्त करता है।

जब अर्जुन ने ध्यानयोग की सिद्धता में मन की चंचलता को बाधक माना, और अंतसमय में योग से विचलित साधक किस गति को प्राप्त होता है इस सन्देह को जब मधुसूदन से पूछा तो श्रीकृष्ण ने प्रश्न का समाधान करते हुये कहा कि कल्याणकारी मार्ग का नित्य क्रमण करने वाले ध्यानयोगी को दुर्गति नहीं मिलती। पारमार्थिक पूँजी योगभ्रष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होती। वह जीवनमुक्त बुद्धिमान योगियों के कुल में जन्म लेता है ।

'यतते च ततो भूयः संसिद्धौ' अर्थात् एक से अधिक जन्म लेने वाला सर्वप्रथम मनुष्य जन्म में कर्मादि साधना करके शुद्ध हुआ। तत्पश्चात् स्वर्गादि लोकों में जाकर भी भोगों से लिप्त होने से शुद्ध होता है। जो योगी प्रयत्नपूर्वक यत्न करता है, तथा जो अनेकों जन्मों से सिद्ध हुआ है और फिर श्रीमानों के घर में जन्म लेकर तत्परतापूर्वक साधन में लगकर शुद्ध होता है। इस प्रकार तीन जन्मों में शुद्ध होना साधक का अनेकजन्मसंसिद्ध होना है। भगवान् अर्जुन को योगी होने को कहते हैं। तपस्वियों, ज्ञानियों और कर्मियों से योगी श्रेष्ठ है। अतः भगवान् कहते हैं -

'तस्मात् योगी भवार्जुन'

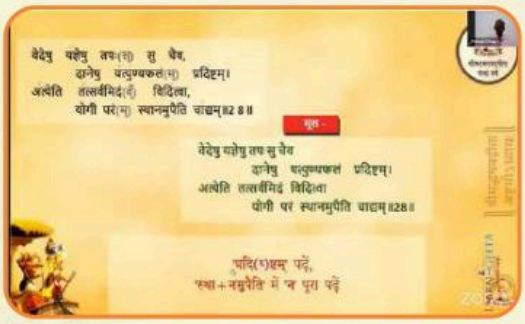
गीता चिन्तनिका

गीता चिन्तनिका सत्र - 7, 8, 9वां अध्याय - 01/02/23

https://www.youtube.com/live/arPGqYssKMs







सूत्र संचालक – श्रीमती रचना जी टंडन

आरंभ प्रार्थना – गीताव्रती कविता जी नेरलकर

दीप प्रज्ज्वलन – गीताव्रती अनीता जी बिलैया

अध्याय 7 पठन – गीताव्रती ऊषा जी धाबे

अध्याय 8 पठन – गीताव्रती डॉ. प्रकाश जी कोल्हे

अध्याय 9 पठन – गीताव्रती राजेश्वरी जी कोंडावत

अध्याय 7 चिंतन – गीताव्रती विष्णुकांता जी बाहेती

अध्याय 8 चिंतन – गीताव्रती कृति जी वर्धन

अध्याय 9 चिंतन – गीताव्रती डॉ. अपर्णा जी होलकुंडकर

आभार प्रदर्शन – गीताव्रती कुसुम जी मारू

तकनीकी सहायक – श्री गोपाल सिंह जी नाथावत एवं श्री सुनील जी धूत

समापन प्रार्थना – गीताव्रती श्रावणी जी नाईक

ज्ञानविज्ञान योग, अक्षरब्रह्म योग व राजविद्याराजगुह्य योग

इन अध्यायों में श्रीकृष्ण पार्थ को अपने समग्र स्वरुप वर्णन, यज्ञ, दान, तप से अर्जित पुण्यफल और भगवन्निष्ठा भाव का प्रयोजन समझाते है।

सप्तम अध्याय चिंतन - गीताव्रती विष्णुकांता जी बाहेती, औरंगाबाद

विष्णुकांता बाहेती जी ने 7वें अध्याय का चिन्तन करते हुये कहा कि पुरुषोत्तम श्रीभगवान् पृथानंदन से कहते है - सम्पूर्ण जगत् के कर्ता, कारण तथा कार्य एकमात्र भगवान् ही हैं। आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी - ये पाँच महाभूत तथा इनके कार्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गंध - ये पाँच विषय - इनके मूल कारण भी भगवान् ही हैं। सृष्टि में जो भी क्रिया या पदार्थ, भाव, आदि देखने–सुनने–समझने में आते हैं, उन सबके बीज भगवान् ही हैं। आगे श्रीकृष्ण कहते हैं कि सगुण - साकार, निर्गुण - निराकार यह मेरा ही समग्र रूप हैं। परा और अपरा यह मेरी (भगवान् की) दो प्रकृतियाँ (स्वभाव) हैं। संसार अपरा अर्थात् जड़ और अनित्य परिवर्तनशील है और जीव परा अर्थात् चेतन, नित्य अपरिवर्तनशील है।

भगवान् का स्वभाव होनेसे अपरा प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता नही हैं। परंतु जीव (परा प्रकृति) अपरा को सत्ता और महत्ता देकर उसके साथ अपना सम्बन्ध जोड़ता है। यह सम्बन्ध जीव दो प्रकार से मानता है - (1) अहंतापूर्वक; जैसे मैं शरीर हूं और (2) ममतापूर्वक; जैसे शरीर मेरा है। यह माना हुआ सम्बन्ध ही सम्पूर्ण प्राणियों में उत्पन्न होने का कारण है -

कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ।

परा और अपरा प्रकृति यह उस परमतत्त्व की, भगवान् की शक्तियाँ है, 'वासुदेवः सर्वम्' यह शरणागति लेनेसे; यह स्वीकारने से सर्वत्र भगवद्भाव हो जायेगा। 'भक्तियोग' सिद्ध हो जायेगा। शरीर, आत्मा, और परमात्मा की दृष्टि से हम सब एक है 'नेह नानास्ति किञ्चन' यह एकता स्वीकार करनेपर कर्मयोग सुगमता पूर्वक सिद्ध होता है।

व्यक्तिगत कोई कामना और ममता न होनेपर जो भी वस्तु है वह स्वतः दूसरों की सेवा में लगेगी। सम्पूर्ण जीवन में एकता स्वीकार करने पर सर्वत्र आत्मभाव हो जायेगा। ऐसा होनेसे 'ज्ञानयोग' सुगमतापूर्वक सिद्ध हो जायेगा ।

अष्टम अध्याय चिंतन - गीताव्रती श्री कृति जी बर्धन, लखनऊ

आठवें अध्याय के आरंभ में अर्जुन पूछते हैं कि हे मधुसूदन! ब्रह्म, अध्यात्म, कर्म क्या है? अधिभूत, अधिदैव, अधियज्ञ किसे कहते हैं? और वह इस देह में कैसे? आप में एकचित्त हुये मनुष्य को उसके अन्तकाल में आपकी कैसे प्राप्ति होती है?

श्रीभगवान बोले - परम अक्षर यह सर्वोपरि, अविनाशी, सच्चिदानंदघन ही ब्रह्म है। परा प्रकृति (जीव) को अध्यात्म और प्राणियों की सत्ता को प्रकट करने वाला कर्म त्याग कहा जाता है। पंचमहाभूतों से बनी, नाशवान, प्रतिक्षण परिवर्तनशील सृष्टि को अधिभूत कहते हैं। महासर्ग के आदि में भगवान् के संकल्प से सबसे पहले ब्रह्मा जी ही प्रकट होते हैं। वे अधिदैव हैं। और इस देह में अंतर्यामी रुप से मैं ही अधियज्ञ हूं।

जो मनुष्य अंतकाल में मेरे चिन्तन में रहेगा उसे मेरी ही प्राप्ति होगी। अर्थात् परमदयालु भगवान् ने विलक्षण बात बतायी है कि, अन्तिम क्षण में चिन्तन के अनुसार मनुष्य को उस उस योनि की प्राप्ति होगी। इसलिये वे अर्जुन से कहते हैं की तू नित्य मेरा स्मरण कर और युद्ध कर्म भी कर। तात्पर्य यह है कि साधक भगवान् के साथ सम्बन्ध स्वीकार करने पर उसके मन व बुद्धि स्वत: भगवान् को अर्पित हो जाते हैं।

नवम अध्याय चिंतन - गीताव्रती डॉ. अपर्णा जी होलकुंडकर, भोपाल

अंतत: अपर्णा दीदी ने ज्ञानविज्ञानयोग का वर्णन करते हुये कहा - भगवान् सम्पूर्ण देश, काल, वस्तु, व्यक्ति, घटना, परिस्थिति आदि में परिपूर्ण होने से प्राणिमात्र को नित्यप्राप्त है। सदा के लिये जब परमात्मतत्त्व अर्थात् निरपेक्ष तत्त्व की प्राप्ति होती है तो उस मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता। नवें अध्याय में भगवान् कहते हैं की अपने स्वरुप को जानना ज्ञान है। ज्ञान से संसार से मुक्ति होती है। और समग्र को जानना विज्ञान है। विज्ञान से भगवान् में प्रेम उत्पन्न होता है।

संसार की स्थिति का वर्णन करते हुये वासुदेव कहते हैं कि जिनकी दृष्टि में संसार की सत्ता है उन साधकों के लिये संसार मुझमें और मैं संसार में हूं। परन्तु जिन सिद्ध महापुरुषों के दृष्टि में संसार की स्वतंत्र सत्ता नही है, उनकी दृष्टि में एक मैं ही मैं हूँ।

जैसे वायु, आकाश से ही उत्पन्न, वहीं स्थित और वहीं लीन होती हैं, ऐसे ही सम्पूर्ण प्राणी महासर्ग में भगवान् से प्रकट होते हैं, भगवान् में ही स्थिर और महाप्रलय में भगवान् में ही लीन होते हैं। तात्पर्य है कि प्राणी प्रकृति के आश्रित हैं और प्रकृति भगवान् के आश्रित होती है। वास्तव में यही प्रकृति सृष्टि रचना का कार्य करती है। जैसे मनुष्य में शरीर (अपरा प्रकृति) - शरीरी (परा प्रकृति) का भेद होता है वैसे भगवान् में नहीं होता —

'सदसच्चाहमर्जुन'

इसलिये जो मनुष्य भगवान् को प्रकृति के आश्रित नहीं समझते, वे दैवी प्रकृति अर्थात् भगवान् के आश्रित होते हैं। ऐसे मनुज महात्मा कहलाते हैं। कर्मयोग शरीर (अपरा) की मुख्यता से, ज्ञानयोग शरीरी (परा) की मुख्यता से चलता है। परन्तु भक्तियोग भगवान् की प्रधानता से चलता है। इसीलिये भक्त को भगवान् ने महात्मा कहा है। वे भगवान् में नित्ययुक्त रहते हैं।

"नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्"।

साधक कई प्रकार के होते हैं और भिन्न भिन्न उपास्य देवताओं की उपासना करते हैं। परन्तु वे एक ही समग्र भगवान् की उपासना करते हैं।

अहं हि सर्वज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।

एक ही भगवान् अनेक रूपों में प्रकट हुये हैं। इस रहस्य को न जानकर जो लोग अपने उपास्य देव को भगवान् से अलग मानकर सकाम भाव से उनकी उपासना करते हैं। और वे जन्म –मरण को प्राप्त होते हैं।

अन्त में भगवान् कहते हैं - **मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु** - जो कुछ भी है वह मै ही हूं, मेरे अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। केवल मेरे परायण होकर मुझे प्राप्त कर।



गीता चिन्तनिका

गीता चिन्तनिका 10, 11, 12वाँ अध्याय - 16/02/23

https://www.youtube.com/live/grcpNE5DcCQ







हर एकादशी को होने वाले "गीता चिन्तनिका सत्र" की श्रृंखला में 16-02-23 की 'विजया एकादशी' को गीता जी के अध्याय 10, 11 और 12 का सुन्दर पारायण और चिन्तन "गीता परिवार" के 'गीताव्रती साधक सदस्यों' द्वारा सम्पन्न हुआ।

अपने स्वागत-भाषण में बहुमुखी प्रतिभा के धनी, दक्षिणांचल के प्रमुख व गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिनारायण जी व्यास ने इस कार्यक्रम से जुड़े सभी साधकों का स्वागत और अभिनन्दन किया। अपने स्वागत-भाषण में उन्होंने घोषणा की कि स्तर-4 पूर्ण कर आगे बढ़ने वाले 'गीता-साधकों' के लिये नया कुछ करने के प्रयास जारी हैं। उन्होंने 'शत कोटि हनुमान चालीसा' पूर्ण करने के तहत "राम-प्रतिष्ठा" ऐप से जुड़ने हेतु भी सभी साधकों का आह्वान किया।

गीता अध्याय पारायणः 10वाँ गीताव्रती श्रीमती कविता निरालकर जी, उस्मानाबाद, 11वाँ गीताव्रती श्री हरि तिडके जी, नागपुर, 12वाँ गीताव्रती श्रीमती अनुसूया शाह जी, अहमदाबाद द्वारा सुमधुर और भावपूर्ण वाणी में किया गया। जिससे सारा वातावरण दिव्य और गीतामय हो गया।

गीता अध्याय 10वें के 'विभूति योग', 11वें के 'विश्वरूपदर्शन योग' और 12वें के 'भक्ति योग' का सुन्दर चिन्तन क्रमशः गीताव्रती श्रीमती आरती जोशी जी, (ठाणे), गीताव्रती श्रीमती कुसुम मारू जी, (कोटा), गीताव्रती श्रीमती रूपा झरिये जी, (बैंकॉक) द्वारा किया गया।

10वें अध्याय में भगवान् अपने हृदय की अत्यन्त गोपनीय बातें बतला कर अन्त में यह बतलाते हैं कि सम्पूर्ण जगत् उनके एक अंश द्वारा स्थित है। 11वें अध्याय में भगवान् ने अपने विराट रूप का दर्शन अर्जुन को दिव्य चक्षु प्रदान कर करवाया और यह भी कहा कि उनके इस रूप को पूर्व में किसी ने नहीं देखा। वे स्वयं काल हैं और जगत् के समस्त जीव उनके विशाल और भंयकर मुख में प्रतिक्षण समा रहे हैं। ये भीष्म, द्रोण,कर्ण जयद्रथ आदि सभी योद्धा उनके द्वारा पहले ही मारे जाने निश्चित हैं-अर्जुन को तो 'निमित्तमात्र' बनना है। अध्याय के अन्त में भगवान् कहते हैं कि सारे कार्य उन्हें अर्पण कर आसक्तिरहित, वैररहित और अहंकाररहित होकर कर्म करने से मनुष्य उन्हें पा लेता है।

12वें अध्याय में भगवान् ने सगुण और निर्गुण उपासकों की तुलना में उन्हें सर्वश्रेष्ठ योगी बतलाया है जो अपने मन और बुद्धि को उन्हें अर्पित कर श्रद्धापूर्वक उनकी नित्य उपासना करते हैं। उन्होंने भगवद्प्राप्ति का सुगम उपाय यह बतलाया कि समस्त कर्मों

को उन्हें अर्पण कर देना चाहिये । उन्होंने अपने भक्तों के 39 लक्षण बताये कि किस प्रकार सबसे मैत्री-भाव वाले, सुख-दुःख, मानापमान, मित्रारि और शीत-उष्ण में सम रहने वाले भक्त उन्हें प्रिय हैं।

कार्यक्रम की समाप्ति पर धन्यवाद -ज्ञापन श्री सुनील धूत जी ने किया। उन्होंने 'गीता-चिन्तनिका की बागडोर सम्भाले रखने वाले- श्रीमती कविता जी मानधने, श्रीमती निर्मला जी मारू और श्री हरिनारायण जी व्यास का भी आभार व्यक्त किया।

समापन प्रार्थना मुंबई से गीताव्रती श्री अतुल जी कुलकर्णी द्वारा की गयी। कार्यक्रम के समापन पर सभी ने मिलकर सामूहिक रूप से व समवेत स्वर मे "हनुमान चालीसा" का पाठ भी किया।

अन्य चिन्तनिका सत्र -

गीता चिन्तनिका सत्र - 13, 14, 15वाँ अध्याय - 3/03/23
https://www.youtube.com/live/IDX4wV54-cc

गीता चिन्तनिका सत्र - 16, 17, 18वाँ अध्याय - 18/03/23
https://www.youtube.com/live/ma_D_UJz1eM

गीता चिन्तनिका सत्र - 1, 2, 3वाँ अध्याय - 2/04/23
https://youtube.com/live/h1HY_AVmzJg

गीता चिंतनिका सत्र - 4, 5, 6वाँ अध्याय - 16/04/23
https://www.youtube.com/live/YTGEyr1THO8

गीता चिन्तनिका सत्र - 7, 8, 9वाँ अध्याय - 1/05/23
https://youtube.com/live/IEiUl68opQI

गीता चिन्तनिका सत्र - 10,11,12वाँ अध्याय - 15/05/23
https://www.youtube.com/live/R4Y2srs0no4

आओ गीता सेवी बनें

Be A Geeta Volunteer - 05/02/23

https://www.youtube.com/live/R8KyOb0GqsQ



दिल्ली से श्री दिनेश जी पंडिता ने सत्र का प्रारंभ करते हुये कहा - अध्यात्म की पावन राह पर चारधाम की यात्रा का सेतु निर्माण कार्य करना है। इस सेतु को मजबूती व बल गीतासेवियों के अमूल्य योगदान से मिलेगा।

आरम्भ प्रार्थना पारुल जी भार्गव दीदी द्वारा संपन्न हुई।

प्रेरणा विचार-

लर्नगीता के प्रोग्राम डायरेक्टर, गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आदरणीय डॉ.आशू गोयल भैया ने गीता सेवियों को प्रेरणा देते हुये व मार्गदर्शन पर संभाषण में कहा कि भगवान् की मंगलमयी कृपा से हम सबके जीवन में ऐसी जागृति हुई है की इस जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिये, जीवन को नया आयाम देने के लिये हम गीता सेवी सत्र से जुड़े है। आगे उन्होंने कहा की जीवन में परिपूर्णता के मार्गों में हमने समाज और अन्य कई साधनों, सुविधाओं से सेवाये ली हैं। इसप्रकार बहुत ऋण हम सब के ऊपर हो जाते हैं, जिनसे उऋण होना हर समय संभव नहीं होता। सामाजिक ऋणों का निष्पादन करने का तरीका है कि जिसका ऋण मुझपर है, उनके लिये मैं कृतज्ञ भाव रखूं और अनुगृहीत होकर समाजसेवा करूँ। जितनी भी मात्रा में सेवा अर्पण करूं, कृतज्ञ भाव अर्पण करूं उससे मेरे भीतर बैठे परमात्मा इस कृतज्ञ भाव से प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिये मेरे हाथों नि:स्वार्थ सेवा होनी चाहिये।

समाज में हमारा स्तर चाहें जितना भी ऊँचा हो, सेवाधर्म का पालनकर्ता ही सबसे बड़ा कार्यकर्ता होता है। कार्यकर्ता का गुणधर्म नि:स्वार्थ भाव के साथ विनम्र रहके सेवा अर्पण करना होता है ।

गीता सेवी ऐसे ही नि:स्वार्थ रहकर शालीनता से व समय सूचकता के साथ निरंतर सेवा देते हैं। इतनी ऊर्जाभाव और सेवाभाव से किया यह कार्य भक्ति बन जाता है। आ. आशू भैया ने कहा कि पूज्य स्वामीजी महाराज ने अपने श्रीमुख से यह वाणीबोध किया हैं कि निष्काम, नि:स्वार्थ भाव से की हुई गीतासेवा यह साधना है। और इस सेवामात्र से ही भगवद्प्राप्ति हो जायेगी व कल्याण हो जायेगा।

आ. आशू भैया नें साधकों को अधिक से अधिक सेवाओं से जुड़ने हेतु प्रोत्साहन देते हुये कहा कि साक्षात् सर्वेश्वर की विशेष कृपापात्र आप हो गये हैं । इसलिये अपने भक्तों की सेवा करने हेतु गीता सेवी रूप में आपका चयन होने वाला है।

तत्पश्चात् सत्र को आगे बढ़ाते हुये गीता परिवार के विभिन्न 10 विभागों की कार्यपद्धति व उनसे जुड़ने हेतु आवश्यक जानकारी सभीं विभागों के वरिष्ठ सेवार्थियों द्वारा दी गई।

1) कॉलिंग ऐंड माइग्रेशन टीम (Calling and Migration Team)

प्रस्तुतकर्ता : श्री अभिजीत जी जोशी, (वड़ोदरा, गुजरात)

कार्य प्रणाली :

a) नये साधक या अगले स्तर के लिये अग्रसर साधकों को सहायता हेतु कॉल करना। उनकी समस्याओं का निवारण करना

b) सप्ताह में 4 से 5 दिन व प्रतिदिन 2 से 3 घंटे का योगदान

c) आयु मर्यादा : 16 से 70 वर्ष तक

d) स्मार्टफोन को उपयोग करने की जानकारी आवश्यक

2) तकनीकी सहायक (Technical Assistance)

प्रस्तुतकर्ता : श्रीमती कोमल जी नायडू (मुंबई, महाराष्ट्र)

आवश्यकतायें -

a) मोबाइल व लैपटॉप की सामान्य जानकारी

b) आयु मर्यादा : 16 से 65 वर्ष

c) ज़ूम ऐप की जानकारी

d) बढ़िया नेटवर्क स्रोत



3) समूह संचालक टीम (Group Co–oridinator's Team)

प्रस्तुतकर्ता : श्री. श्रीनिवासजी कोलारकर (नागपुर, महाराष्ट्र)

आवश्यकतायें -

a) मेनेजमेंट के गुण, मेनेजमेंट क्षेत्र में पूर्वानुभव

b) नये नये लोगों से बातकर उनकी समस्या निदान व सहायता का गुण

c) 24घंटे में कुल 2–3घंटों का समय योगदान

d) कंप्यूटर एवम् मोबाइल का ज्ञान

e) आयु मर्यादा : 25 वर्ष से ऊपर



4) एडमिशन डिपार्टमेंट : (Admission Department)

प्रस्तुतकर्ता : श्रीमती विनी जी माहेश्वरी (मुंबई, महाराष्ट्र)

आवश्यकतायें -

a) साधक को उनके चयन किये हुये समय व भाषा के व्हाट्सप ग्रुप में जोड़ना

b) परीक्षा देने वाले परीक्षार्थियों से कॉल करके कंफर्मेशन लेना

c) आयु मर्यादा : कम से कम 14 वर्ष

5) रचनात्मक लेखन : (Creative Writing Department)

प्रस्तुतकर्ता : श्रीमती माला जी नारायण (कन्नूर, तमिलनाडु)

यहाँ मुख्यत: तीन विभाग हैं -

a)विवेचन लेखन :

प्रत्येक शनिवार और रविवार के आयोजित विवेचन सत्रों का लेखन

b) ट्रांसलेशन विभाग

12 भाषाओं में संचालित लर्नगीता कक्षाओं में विभिन्न गतिविधियों की जानकारी के संदेश भेजना

c) गीता मैत्री न्यूजलेटर विभाग में लेखन

- गीता परिवार की विभिन्न गतिविधियों पर सुलेखन
- विभाग विषेषता
- समयबद्धता ही रचनात्मक लेखन विभाग का बल है।



6) ग्राफिक व डिजाइनिंग : (Graphic & designing)

प्रस्तुतकर्ता : सुश्री रोहिणी जी मल्लाडी (मुंबई, महाराष्ट्र)

आवश्यकतायें :

a)आयुमर्यादा 16 वर्ष से ऊपर

b)बताये गये टूल्स में रूचि एवं जानकारी

c) Knowledge of Tools : Photoshop, Canva , After Adobe After Effects.

7) सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट : (Software Development)

प्रस्तुतकर्ता : पंकज जी अग्रवाल (लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आवश्यकतायें :

a)LEARNGEETA.COM

b) REGISTRATION AND USER PORTAL

e) sewa.learngeeta.com

c) HELP PORTAL

d)VIVECHAN PORTAL

e)WEB CONTENT manage

f) sewa.learngeeta.com

Key Skills:

- WORDPRESS, DESIGNING
- CMS ADMIN, HTML/CSS/JS, PHP, MYSQL, YOUTUBE API, DBMS, SECURITY, LINUX, AUDIO/VIDEO, OPTIMIZATION

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर।।

उन्होंने गीता के सिद्धांत को इस कार्य से जोड़ते हुये कहा कि कर्म ऐसे करो जैसे भगवान् की पूजा की जाती है। पंकज भैया का निवेदन है कि; लर्नगीता के विशाल ज्ञानयज्ञ में अपने सॉफ्टवेयर स्किल्स के साथ कर्मयोग के इस ज्ञान को सार्थक करें।



8) बालसखा

प्रस्तुतकर्ता : तेजस जी पुजारी (बंगलौर, कर्नाटक)

आवश्यकताएं :

a) आयु मर्यादा 10 से 25 वर्ष
b) मैसेज भेजना
c) कॉलिंग
d) ग्रुप्स निर्माण तथा डिलीट करना
e) सोशल मीडिया द्वारा गीताजी का प्रचार व प्रसार करना

उपलब्धियाँ:

a) कौशल विकास
b) दिव्य कार्य में सक्रिय भागीदारी
c) आत्मविश्वास, विनम्रता, सेवाभाव के बीज बोये जाते हैं।

9) गीता प्रचारक विभाग : (Geeta Pracharak Team)

प्रस्तुतकर्ता : श्री राजीव जी गुप्ता (जयपुर, राजस्थान)



आवश्यकतायें :

a) संकल्प भाव
b) गीताजी से, मातृभूमि से, संस्कृति से प्रेम की, कुछ वापस देने की भावना।
c) व्हाट्सअप प्राचारक समूह से जुड़ना

प्रचार संपर्क साधन :

a) व्यक्तिगत
b) सामूहिक स्थानों में
c) सोशल मीडिया

d) पैंपलेट

e) बैनर

f) होर्डिंग्स द्वारा प्रचार



10) **प्रशिक्षक बनें** : (Be A Trainer)

प्रस्तुतकर्ता : श्रीमती रुचिका जी छांवगावकर (धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश)

40मिनट की ज़ूम कक्षाओं में गीता जी के श्लोकों का शुद्ध, सटीक उच्चारण सिखाना

जीवन मार्गदर्शिनी श्रीकृष्ण की वाणी हमारे द्वारा घर-घर पहुंचे

आवश्यकताएं :

a) गीता जिज्ञासु, गीता पाठक, गीता पथिक, गीताव्रती परीक्षाओं में 85%से ज्यादा अंक प्राप्त

b) आयु 18 वर्ष से अधिक

c) उत्तम इन्टरनेट

d) श्लोक उच्चारण एवं साक्षात्कार में उत्तीर्ण

इसके पश्चात् आ. आशू भैया एवं 10 विभागों का दिशादर्शन करते वरिष्ठ सेवियों द्वारा साधकों के प्रश्नों के उत्तर दिये गये।

तदनंतर श्री हनुमान चालीसा का पाठ हुआ।

सत्र समापन करते हुये श्रीमती रुचिका जी छांवगावकर दीदी ने समापन प्रार्थना गाई थी।

अन्य गीता सेवी सत्र -

Be a Geeta Volunteer - आओ गीता सेवी बनें - 26/03/23
https://www.youtube.com/live/n9ouJzz3vos

आओ गीता सेवी बनें - Be a Geeta Volunteer - 7/05/23
https://www.youtube.com/live/R6txbgTubFo

गीता भक्ति दिवस

https: www.youtube.com live dbPIGUS-yM

Geeta Pariwar Celebrates Swami Govind Dev Giri ji Maharaj's 74th Birthday with Shatkoti Hanuman Chalisa Pledge



Geeta Pariwar celebrated the 74th birthday (also known as Geeta Bhakti Divas) of P.P. Shri Swami Govind Dev Giri ji Maharaj, with great fervor and enthusiasm.

The occasion was graced by the presence of Yogarshi Swami Ramdev Maharaj, who blessed the event with his presence.

The celebration was a grand affair with sadhaks from 75 countries lighting diyas to commemorate the occasion. It was also an auspicious Shattila Ekadashi diwas. The highlight of the event was the pledge to recite 100 crore Hanuman Chalisa in the next 11 months.

The event started with a welcome note by Shri. Sanjay Malpani ji, followed by an initial Prarthana by Kavita Mandhane Didi from Beed district. It was followed by speeches by Shri. Sanjay Bhaiya ji and Shri Ashu Bhaiya ji.

Shri Sanjay Bhaiya Ji spoke about the tireless efforts of nearly 4500 volunteer of LearnGeeta who had been working round the clock in all countries. The occasion was marked by the Deep-Prajjwalan by Sadhaks from 75 countries.

Shri Ashu Bhaiya Ji spoke about the significance of Geeta Pariwar and how it had grown from a small organization to a global movement.

The celebration then continued with the participants from Geeta Pariwar, Pune, performing an aarti of Swami Govind Dev Giriji Maharaj. The women sadhikas, all dressed in pink sarees, and the men sadhaks from Pune, joined in and made it a memorable experience.

Swami Govind Dev Giriji Maharaj shared his divine words, starting with shloka from Ramraksha, and explaining the importance of Geeta for personal development and progress of the nation. He also spoke about the significance of Shattila Ekadashi and urged everyone to work together as a nation and never break away from each other. He emphasized that our country possesses tremendous strength and resilience, distinguishing itself as a formidable force that cannot be easily defeated. Swamiji spoke about the importance of Shattila Ekadashi and the usefulness of the Geeta for personal development and the progress of the nation. He also mentioned the huge work being done at Ayodhya and Mathura.

Swami Shri. Ramdev Ji Maharaj, the chief guest of the occasion, then spoke about his long-standing relationship with Swami Govind Dev Giriji Maharaj and how he learned a lot about Mahabharata, Geeta, and Ramayana from him. He also praised Swamiji's contribution to the spiritual and cultural heritage of India.

The highlight of the event was when Swami Govind Dev Giriji Maharaj requested Swami Ramdev Ji to lead the pledge to recite 100 crore Hanuman Chalisa in the next 11 months, which was then repeated by all the participants of Geeta Pariwar, Patanjali Pariwar, and Sanatani Sadhaks in India and abroad.

The celebration ended with a mesmerizing performance by school children who danced to Shri Shankaracharya's stotra - ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्. The audience was left spellbound by the performance.





RAM PRATHISHTHA -App Launch

http: rampratishtha.com
https: www.youtube.com live IsWCdUi0d4Y

Hanuman Chalisa is one of the most revered hymns dedicated to Shri Hanuman, a deity widely worshipped for his strength, wisdom, and devotion. P.P. Swami Shri. Govind Dev Giri ji Maharaj, the trustee of Rāama Janma Bhūmi, has taken a pledge to lead a campaign called “ShatKoti Hanuman Chalisa Abhiyan”. The aim of this campaign is to chant the Hanuman Chalisa 100 crore times as a collective devotion to Lord Hanuman. The campaign, which began on March 21, 2023, and will continue until January 15, 2024, aims to bring about cultural awakening in the nation and the universe through the collective effort of Shri Ram devotees. The dedicated "Ram-Pratishtha" app is available for tracking the daily recitation count and overall progress.

This campaign is a collective effort by Shri Ram devotees to offer 100 crore recitations of Shri Hanuman Chalisa for the cultural awakening of the nation and the universe. It is a divine mission that is open to everyone from the age of 5 to 100.

Hanuman, the beloved devotee of Shri Ram, is revered for his unwavering devotion, courage, and strength. He is an epitome of selflessness and service, who overcame numerous obstacles and challenges with his unwavering faith and devotion. The mere mention of his name brings positivity, confidence, and strength.

As the great Saint Shri Tulsidas ji has said in Ramcharit Manas:

"Jai Hanumana Gyana Guna Sagara, Jai Kapeesha Tihu Loka Ujagara."

Meaning: "Hail Hanuman, the ocean of wisdom and virtues, and the one who illuminates the three worlds."

The hymn is composed in the Awadhi language and consists of forty chaupais (verses) that describe Hanuman's qualities, his bravery, and his heroic acts. Reciting Hanuman Chalisa daily can help us to connect with our inner strength and to awaken our courage, confidence and determination.

It is said that reciting the Hanuman Chalisa with devotion and sincerity can bring about many benefits in our lives. Here are some of them:

Overcoming Negativity: In today's fast-paced world, negativity is all around us. Reciting the Hanuman Chalisa can help us overcome negative thoughts and emotions and fill us with positivity and hope.

Inducing Confidence: Shri Hanuman is known for his strength and courage. Reciting the Hanuman Chalisa can help us develop these qualities within ourselves and become more confident and assertive in our lives.

Providing Protection: Shri Hanuman is also known as a protector. Reciting the Hanuman Chalisa can help us feel safe and protected in challenging situations.

Improving Concentration: Reciting the Hanuman Chalisa regularly can also help improve our concentration and focus, which can be beneficial for students and professionals alike.

In one of the chaupais of Hanuman Chalisa, it is mentioned that "Bhoota Pishaacha Nikata Nahi Aave, Mahaveera Jaba Naama Sunaave" which means that no evil spirits or demons can come near a person who recites Hanuman Chalisa with devotion. This verse highlights the protective powers of Hanuman Chalisa and its ability to ward off negativity from our lives.

One of the most significant benefits of Hanuman Bhakti is that it helps us overcome fear and anxiety. Children and teenagers, in particular, face numerous challenges in their lives, including academic pressure, social anxiety and peer pressure. Reciting the Hanuman Chalisa can help them find the strength and courage to face these challenges with confidence and positivity. The Hanuman Chalisa is a beautiful composition that describes the virtues of Hanuman and his devotion to Shri Ram. It is a prayer that has the power to heal our minds and souls.

In the words of Sant Tulsidas, "Hanuman Chalisa is the medicine for all ailments." By reciting Hanuman Chalisa daily, we can overcome physical, mental, and emotional problems. We can develop a strong willpower, a calm mind, and a healthy body. The benefits of Hanuman Chalisa are countless, and it is an essential part of Hanuman Bhakti.

Religious scriptures like Ramcharitmanas and other saints' works highlight his qualities and virtues. For instance, Shri Tulsidas ji in his Hanuman Chalisa refers to Shri Hanuman as "Sankat Mochan" meaning the one who removes all obstacles.

To join the campaign, download the dedicated app named "Ram-Pratishtha" from the Play Store or App Store. The app helps to track daily recitation counts and overall progress. You can pledge how many recitations you can complete every day or update without pledging.

Reciting Hanuman Chalisa daily is a powerful way to connect with Shri Hanuman and seek his blessings. It is a divine mission that can bring positivity, strength, and courage to our lives. Let us join hands and offer our prayers to Hanuman for the cultural awakening of the nation and the universe.

In conclusion, I urge everyone to join the pledge of reciting Hanuman Chalisa as much as they can every day until January 15, 2024. This is a golden opportunity to connect with Shri Hanuman and receive his blessings. Let us unlock the power of Hanuman Bhakti and create a wave of positive energy that will uplift ourselves, our families, our communities, and our nation. By joining this pledge, we can connect with Hanuman and seek his blessings to overcome the challenges we face in our lives. As we recite the Hanuman Chalisa with devotion and sincerity, may we all be blessed with strength, courage, and wisdom.

As the Hanuman Chalisa says:

"Tumhare bhajana Raama ko pavai, Janama-janama ke dukha bisraavain"
Jai Shri Ram! Jai Hanuman!

Links for Ram Pratishtha website and Apps:

WEBSITE: https://rampratishtha.com

ANDROID App: https://play.google.com/store/apps/details?id=com.shatkoti

IOS App: https://apps.apple.com/in/app/ram-pratishtha/id1667822664

वर्धिष्णु विश्ववंदिता लर्नगीता - तृतीय वार्षिकोत्सव

वर्धिष्णु विश्ववंदिता तृतीय वार्षिकोत्सव गीता परिवार की पारंपरिक पद्धति के अनुसार कार्यक्रम का आरम्भ सुमधुर प्रार्थना से हुआ। तदुपरांत 300 गीता साधकों के द्वारा सुंदर, अति मनमोहक, सुशोभित, रमणीय दीप प्रज्ज्वलन किया गया। यह एक बहुत ही सुंदर व सौभाग्य की बात है कि एक साथ 300 लोगों ने दीप प्रज्ज्वलन एक साथ किया। यह गीता परिवार की तृतीय वर्ष गांठ है। आदरणीय संजय भैया ने कहा ! आज अत्यंत आनंद का दिन है हम सभी चौथे वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं।

आदरणीय संजय भैया जी ने कहा - इस कार्यक्रम का नाम वर्धिष्णु विश्ववंदिता इसलिये रखा गया है क्योंकि यह नाम छत्रपति शिवाजी महाराज की जो राजमुद्रा बनी थी उस पर यह लिखा गया था। यह प्रतिपदा के चंद्र की तरह है। गीता परिवार का यह लर्नगीता का प्रकल्प चंद्र की तरह ही दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है इसलिये इस प्रकल्प को वर्धिष्णु विश्ववंदिता कहा गया है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने उस समय शपथ ग्रहण किया था तथा कहा था कि भगवान् की इच्छा से ही राज्य व संपूर्ण कार्य चल रहा है। शिवाजी महाराज जीजा माता के द्वारा दिये गये संस्कारों के साथ बड़े हुये। भगवद्गीता पढ़कर बड़े हुये हैं एवं इसप्रकार का लोकतंत्र बनेगा इसकी इन्होंने उस समय शपथ ली थी और उनकी मुद्रा पर वर्धिष्णु विश्ववंदिता लिखा था। तत्पश्चात् स्वराज्य स्थापित किया अर्थात् लोककल्याण, लोकहित हेतु युद्ध करना गलत नहीं है यह भगवान श्रीकृष्ण, छत्रपति शिवाजी महाराज ने बता दिया। उसी तरह यह कार्यक्रम भी निश्चित ही परम पूज्य स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद से चल रहा है।



आज गीता परिवार 160 देशों तक फैल गया है। 6,50,000 साधक जुड़ गये हैं। 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' भगवान् इस कार्य को संभाल रहे हैं। इस लर्नगीता उपक्रम में गीता पुस्तक का भी प्रकाशन हुआ है। यह वंदन वाला कार्य है, आज भगवद्गीता का चिंतन करने का दिन है, भगवान को धन्यवाद देने का दिन है, भविष्य की ओर इस उपक्रम को कैसे ले जाए यह भी सोचने का दिन हैं। तृतीय वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर आदरणीय संजय भैया जी ने सभी गीता साधकों का अभिनंदन किया जिन्होंने गीता का गोवर्धन पर्वत उठाया एवं अपनी वाणी को विश्राम दिया।

लर्नगीता एकमात्र संस्था का कार्यक्रम नहीं यह एक औषधी है जिसने अनेक मनों व जीवनों को बदल दिया है। अनेकों चरित्रों को गढ़ दिया है, पत्थरों पर प्रेम माधुर्य, अनुशासन, सेवा भक्ति, साहस, सहानुभूति का एक चित्र उकेर दिया है।

आज से 3 वर्ष पूर्व कोरोना की त्रासदी से सकुचा विश्व त्रस्त एवं अस्त व्यस्त था तब कुछ कृष्ण भक्तों की टोली गीता जी गाने में मस्त थी। सनातन धर्म की, कृष्ण रंग में रंग जाने की, जो भक्ति सदियों पूर्ण विलुप्त हो गई थी इसका पुन: आरंभ किया गया,

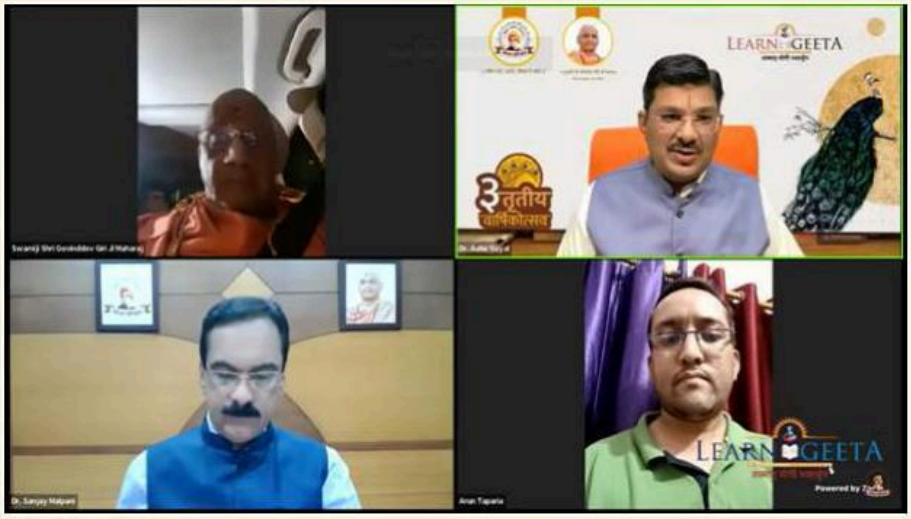
इससे ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से लोगों के घर-घर गीता, हर कर गीता के लक्ष्य को मन में स्थापित कर, कृष्ण भाव व कृष्ण लीला का परचम लहराया गया। हम सौभाग्यशाली हैं इस क्रांति अभियान अर्थात् लर्नगीता के साक्षी बनें।

लर्नगीता के कुछ पक्ष आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

- ★ प्रतिदिन कक्षा
- ★ विवेचन सत्र
- ★ परीक्षाओं का स्वरूप
- ★ सेवाओं का प्रकार
- ★ अन्य नवीन उपलब्धियाँ व कीर्तिमान

गीता कक्षा - इन कक्षाओं का एकमात्र उद्देश्य गीता पढ़ें, पढ़ायें और जीवन में लायें हैं।

विवेचन सत्र - विवेचन सत्र गीता परिवार का विविध व विशेष कार्यक्रम है। गीता विवेचक - आदरणीय संजय मालपाणी भैया जी, आदरणीय आशू गोयल भैया जी, आदरणीय विकास वैद्य भैया एवं आदरणीय श्री निवास वर्णेकर काका जी, आदरणीय वंदना वर्णेकर काकी जी, आदरणीय कविता दीदी, आदरणीय रुपल दीदी यह सभी हर शनिवार व रविवार को अत्यंत सुंदर व गुह्य अर्थपूर्ण विवेचन सत्र लेते हैं।



परीक्षाओं का स्वरूप - विश्व में संचालित हो रही यह गीता परीक्षायें अत्यंत ही अद्भुत है। इसने परीक्षा की परिपाटी बदल ही दी है। एक अत्यंत अनोखी परीक्षा है इसमें परीक्षा लेने वाला और परीक्षा देने वाला दोनों की होड़ लगी रहती है सभी ओर हर्ष उल्लास व प्रेम का वातावरण होता है यह कृष्ण की कृपा है।

प्रशिक्षण की भी अत्यन्त अनोखी रीति है यहां। कार्यकर्ताओं की ऊर्जा देखने लायक होती है यह कभी नहीं थकते, न रुकते हैं निरंतर चलते ही रहते हैं। गीता परिवार का कार्य 35 विभागों में चल रहा है। 18 समय विकल्पों के साथ 13 भाषाओं में गीता सिखाते हैं। 9 भाषाओं में गीता की पुस्तक प्रकाशित की गई है। इस संपूर्ण कार्यक्रम की डॉक्यूमेंट्री कार्यक्रम में दिखाई गई। इसके पश्चात् गीता पर आधारित 5 वर्ष से 65 वर्ष तक के सभी वर्ग के गीता साधकों के द्वारा रुचिपूर्वक अंत्याक्षरी संपन्न की गयी। बहुत ही रोमांचक अंत्याक्षरी थी। परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरी जी महाराज कार्यक्रम में पधारे हैं। स्वामी जी ने 141 कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया जो लोग पहले दिन से जुड़े हुये हैं।

कार्यक्रम में परम पूज्य स्वामी जी के आशीर्वचन -

परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी ने कहा कि जो इस गीता सेवा में समर्पित हैं उनकी सभी सेवायें अद्भुत है। यह 141 कार्यकर्ताओं के नाम नहीं, यह नामावली हैं। सभी कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया। परम पूज्य स्वामी जी ने कहा कि सभी ने लॉकडाउन में अद्भुत कार्य किया है। छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन जिन मूल्यों पर आधारित है वे सभी जीवन मूल्य

भगवद्गीता में उपलब्ध है। वास्तव में भगवद्गीता ही जीवन उत्थान का आधार है और यह आधार जिन-जिन लोगों को प्राप्त हो जाये वे निश्चित ही चमकेंगे। भगवान् इस प्रकार का कार्य गीता परिवार के कार्यकर्ताओं द्वारा करा रहे हैं यह देख कर मन प्रसन्न हो जाता है। हम 'गीता पढ़ें, पढाये, जीवन में लायें' सूत्र को प्रमाणित कर अपने जीवन का उत्थान करेंगे, उसी प्रकार हमें इस कार्य को करते रहना चाहिये। अभ्यास करते रहें। अभ्यास करते रहने से हम आगे बढ़ेंगे। गीताव्रती हम बन ही गये हैं, अब हमें गीता मनीषियों को भी आगे लाना चाहिये एवं गीता समर्पित जीवन जीने वालों की भी अपेक्षा रहेगी यह कार्य भगवान् स्वयं अपनी इच्छा से निर्माण करके अपनी शक्ति से चला रहे हैं। भगवान् में मन लगाने वाले कार्यकर्ताओं को हमें अगले वर्ष तक आगे लाना होगा। गीता जीवनव्रती निर्माण करना होगा। हम आदर्श रख सकते हैं जो अनेक क्षेत्रों से हैं।



परम पूज्य स्वामी जी ने गीता प्रेस का भी अभिनंदन किया है। परम पूज्य स्वामी जी ने कहा चुनौतियों का सामना हमें करना होगा। जैसे छत्रपति शिवाजी महाराज ने एक प्रकाश संसार को दिया उसी प्रकार गीता परिवार एक प्रमाण और प्रकाश भारतवर्ष को और पूरे विश्व को देगा। ऐसा मेरा विश्वास है इसलिये अपने मार्ग पर सुदृढ़ रहने का मार्गदर्शन दिया। गीता मनीषियों को बनाने का आग्रह किया। शतकोटी हनुमान चालीसा के प्रसंग की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है यह परम पूज्य स्वामी जी ने कहा एवं गंगा मैया से प्रार्थना की, सबको आशीर्वाद दिया और अभिनंदन किया। आदरणीय आशू भैया जी ने परम पूज्य स्वामी जी के वचनों को ग्रहण किया एवं स्वामी जी को सुनिश्चित किया कि वह उनके आशीर्वाद से यह कार्य पूर्ण करेंगे ऐसा आश्वासन दिया।

आदरणीय संजय भैया ने कहा - यह गीता भक्ति, शक्ति, साधना मार्ग है। 5000 से अधिक गीता सेवी इस कार्य को मन लगाकर निरंतर कर रहे हैं। गीता सेवी जो जून 2020 से जुड़े हैं उनका आदरणीय आशू भैया जी एवं संजय भैया जी ने स्वागत किया।

साधकों के मनोगत -

★ **श्रीमती किरण मुंदडा जी -** यह विश्वव्यापी कार्य चलता रहे। यह कार्य गीता परिवार का महान कार्य है। योगेश्वर भगवान् कृष्णजी से यही वरदान मिलता रहे।

★ **संगीता जी -** अमेरिका में गीता का प्रचुर मात्रा में इन्होंने प्रचार प्रसार किया एवं इतनी अच्छी और सुंदर सेवा मिली है, जैसे भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं गीता का प्रचार और प्रसार कर रहे हैं। कहा जब हम एक कदम बढ़ाते है तो भगवान् चार कदम बढ़ाते हैं। यह उनका अनुभव है।

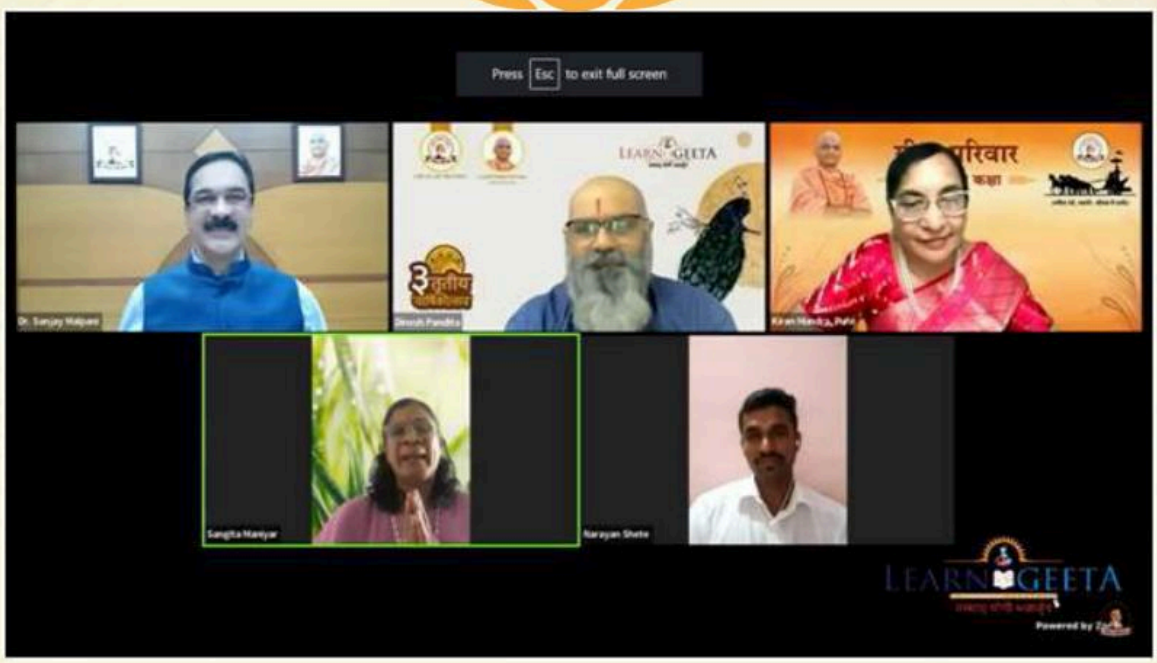
★ **नारायण शेट्टे जी -** ये गीता व्याकरण की कक्षाओं का गीता परिवार में संचालन करते हैं। इनकी व्याकरण में अच्छी पकड़ है इन्होंने परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरी जी महाराज के आश्रम आळंदी में शिक्षा प्राप्त की है। इन्हें वहीं से भिक्षा भी प्राप्त होती थी। बाद में ये घर आ जाते थे और सोचते थे कि इस दान को मैं कैसे भगवान को लौटाऊँगा। एक दिन वे कविता वर्मा दीदी से व रूपल शुक्ला दीदी से मिले। इन्होंने अपना सौभाग्य समझा और अपनी सेवायें गीता परिवार में देना आरम्भ कर दिया।

आदरणीय आशू भैया जी ने कहा यह बड़ा प्रकल्प महापुरुषों के संकल्प से पूर्ण हो रहा है। कार्य करने की हमारी विशेषता के साथ हमें भगवान् का आशीर्वाद भी चाहिये। जो गीता संथा वर्ग इतना ऊपर पहुंच गया, देश- विदेश में पहुंच गया हैं। यह भगवान श्रीकृष्ण स्वयं करा रहे हैं।

गीता संवाद कार्यक्रम के आरंभ की उद्घोषणा आदरणीय संजय भैया जी मालपाणी ने किया और यह जुलाई महीने के प्रथम रविवार से आरम्भ किया गया।

इसप्रकार से देविका कुलकर्णी जी के द्वारा कार्यक्रम का समापन प्रार्थना से किया गया एवं दिनेश पंडिता भैया जी के सूत्र संचालन ने कार्यक्रम को एक तार में बांधे रखा। आनंदमयी वातावरण में दिनेश भैया ने कार्यक्रम को संभाला।

सभी साधकों का व कार्यकर्ताओं का अभिनंदन करते हुये कार्यक्रम का समापन हुआ।



HANUMAN CHALISA ABHIYAN

Session with College Students to clear their doubts

(In the following discussion, Akash is a Volunteer Sadhak from Hanuman Chalisa Abhiyan. Amit, Riya, Nimish and Mihir are all teenagers asking him questions.)

Akash: Namaste everyone, my name is Akash and I am a Sadhak from the ShatKoti Hanuman Chalisa Abhiyan. I'm happy to be here to answer your questions about reciting Hanuman Chalisa. So, who would like to start?

Amit: Hi, my name is Amit and I'm a Science student. Could you please tell us, why should we recite Hanuman Chalisa? I mean, what's the point?

Akash: Great question, Amit! Reciting Hanuman Chalisa has many benefits, such as increasing your focus, reducing stress, and boosting your confidence. It can also help you overcome negativity and bring positivity into your life.

Amit: Can you explain how reciting Hanuman Chalisa can help me with my studies?

Akash: Well, Hanuman Chalisa is not a magical spell that will help you pass exams without studying. However, it can help you develop a focused and disciplined mind, which is essential for learning and retaining knowledge.

Riya: Hi, my name is Riya and I'm a Commerce student. I'm more interested in how Hanuman Chalisa can help me in my career. Can you shed some light on that?

Akash: Absolutely. By reciting Hanuman Chalisa, you can develop qualities like perseverance, determination, and courage, which are essential for success in any career. Hanuman Chalisa can also help you stay grounded and humble, which is crucial for ethical and moral decision making.

Nimish: I study Arts, and I believe in expressing myself creatively. How can Hanuman Chalisa help me with that?

Akash: That's a great question. By reciting Hanuman Chalisa, you can develop inner peace and clarity, which can help you unlock your creative potential. Hanuman Chalisa can also help you stay focused and disciplined, which is necessary for any artistic pursuit.

Mihir: I'm not a student because I come from a poor family, and I have to help my dad in his small business. Can you explain how Hanuman Chalisa can help me in my work?

Akash: Of course. By reciting Hanuman Chalisa, you can develop qualities like hard work, dedication, and loyalty, which are crucial for success in any business. Hanuman Chalisa can also help you stay positive and motivated, which is essential for overcoming any obstacles in your work.

Riya: That sounds interesting, but how can reciting a prayer bring me success in my studies or career?

Akash: Well, Riya, Hanuman Chalisa is not just any prayer. It is a powerful hymn that has been recited by millions of people for centuries. It can help you develop inner strength and unlock your potential. With a strong and focused mind, success in your studies or career will come naturally.

Amit: I'm not really religious, so why should I recite Hanuman Chalisa?

Akash: Good question, Amit. Hanuman Chalisa is not just about religion. It's about connecting with a higher power and tapping into your inner potential. Even if you're not religious, reciting Hanuman Chalisa can still help you lead a more fulfilling life.

Mihir: I don't have time to recite Hanuman Chalisa. I'm too busy helping my dad in his business.

Akash: I understand, Mihir. But reciting Hanuman Chalisa doesn't have to take up a lot of time. You can recite once while you're working or taking a break. It's all about making it a part of your daily routine.

Amit: How do we know that Hanuman Chalisa actually works? Is there any scientific evidence to support it?

Akash: Well, Hanuman Chalisa is a spiritual practice, and spirituality is not something that can be measured by science. However, there are countless people who have experienced the benefits of reciting Hanuman Chalisa, and that is proof enough.

Riya: What if I don't believe in Hanuman or any other deity? Can I still recite Hanuman Chalisa?

Akash: Absolutely. Hanuman Chalisa is not just a religious practice but a spiritual one that can benefit anyone, regardless of their faith. You can recite Hanuman Chalisa as a form of meditation, to develop inner peace and focus.

Riya: I'm still not convinced. Can you share some real-life examples of people who have benefited from reciting Hanuman Chalisa?

Akash: Sure, Riya. There are countless stories of people who have overcome their obstacles and achieved success with the help of Hanuman Chalisa. One such example is that of a businessman who recited Hanuman Chalisa every day and was able to turn his struggling business into a successful one.

Riya: That's amazing! Can you recite a few lines from Hanuman Chalisa for us?

Akash: Of course, Riya. Here are a few lines from Hanuman Chalisa:



Jai Hanuman Gyan Gun Sagar|

Jai Kapis Tihun Lok Ujagar||

Amit: That sounds beautiful. Can you explain the meaning behind those lines?

Akash: The first line means "Hail Hanuman, the ocean of knowledge and virtues." The second line means "Hail Hanuman, who illuminates all three worlds with his glory." It's a powerful reminder of Hanuman's strength and virtues.

Nimish: How long does it take to see the benefits of reciting Hanuman Chalisa?

Akash: Ah, that's a great question. The benefits of reciting Hanuman Chalisa can be experienced immediately, as it helps calm and focus the mind. However, the long-term benefits come with consistent and dedicated practice. You see, Hanuman Chalisa is not just a religious text but also a spiritual one. It's a powerful tool that can help you tap into your inner strength, build self-confidence, and overcome negativity. And these benefits are not just limited to spiritual growth but can also positively impact your personal and academic life.

Amit: How is that possible? Can reciting Hanuman Chalisa actually improve my grades in science?

Akash: Well, as a Science student, you must know that positive thoughts and emotions can improve cognitive function and enhance memory retention. By reciting Hanuman Chalisa, you can tap into a sense of inner peace and positivity, which can help improve your academic performance.

Mihir: How can I recite Hanuman Chalisa if I don't know how to read?

Akash: You don't have to know how to read to recite Hanuman Chalisa. You can listen to it being recited or learn it by listening to others. There are also many audio and video resources available to help you learn and recite Hanuman Chalisa.

Amit: Is there a specific time or place that is best for reciting Hanuman Chalisa?

Akash: There is no specific time or place that is best for reciting Hanuman Chalisa. You can recite it anytime.

Riya: Okay, but I still have one doubt. How can reciting Hanuman Chalisa help me in my future career?

Akash: Good question! As a Commerce Student, you must be aware of the importance of networking, communication, and leadership skills in the business world. Reciting Hanuman Chalisa can help you build these skills by improving your confidence, focus, and decision-making abilities.

Nimish: I'm not really interested in business or science. How can Hanuman Chalisa benefit me as an artist?

Akash: As an artist, you need to tap into your inner creativity, imagination, and intuition. Reciting Hanuman Chalisa can help you connect with these qualities by removing mental blockages and fostering a sense of clarity and inspiration.

Mihir: I don't have the luxury of studying or pursuing art. I need to work to support my family. How can Hanuman Chalisa help me?

Akash: That's a valid concern, my friend. But you see, the benefits of Hanuman Chalisa are not limited to academic or career success. It can help you build inner strength, resilience, and positivity, which can help you overcome challenges and succeed in any field of work.

Amit: But how much should we recite it? Is there a set number or frequency?

Akash: The Shatkoti Hanuman Chalisa Abhiyan encourages participants to recite as much as they can and pledge to a daily count until January 15, 2024. But there is no set number or frequency. You can recite it once a day or multiple times, depending on your convenience and intent.

Riya: And what if we miss a day or can't complete our pledged count?

Akash: It's okay. Life happens, and we understand that. The point is not to stress about achieving the pledged count but to make a daily habit of reciting Hanuman Chalisa and reaping its benefits.

Mihir: I don't have a smartphone to download the app. How can I keep track of my progress?

Akash: That's not a problem. You can simply maintain a tally of your daily count in a notebook or a piece of paper. The important thing is to keep the practice going and reap its benefits. You can upload it later using someone else's mobile, or using our website. Our volunteers would be glad to help you in such cases.

Mihir: Thank you for explaining that. I think I might give it a try.

Akash: Well, that's all the time we have for today. I hope I was able to answer your questions and clear your doubts. Thank you all for joining me today, and I wish you all the best in your endeavors. Remember, Hanuman Chalisa is a powerful spiritual practice that can bring immense benefits to your life, no matter who you are or what you do, and I encourage you all to give it a try.

All: Thank you Akash ji. We will definitely give this a try.

(This dialogue is a creative synthesis of various authentic conversations that the author has observed or listened to in different contexts, both online and offline. It is a fictional work that tries to convey the curiosity and the insight of the questions from the seekers and the responses from various senior Vivechaks of Geeta Pariwar. We hope you have fun reading it and find it relevant.)



Links for Ram Pratishtha website and Apps:

WEBSITE: https://rampratishtha.com

ANDROID App: https://play.google.com/store/apps/details?id=com.shatkoti

IOS App: https://apps.apple.com/in/app/ram-pratishtha/id1667822664

linguistic Epiphanies

મારી ગીતા ચાર ધામ યાત્રા

મારી ગીતા ચાર ધામ યાત્રા જુલાઇ ૨૦૨૧થી શ્રી હરિશ્ચંદ્ર સિંગજી ના માર્ગદર્શનમાં લેવલ ૧ થી પ્રારંભ થઇ. તેમનો વિનમ્ર સ્વભાવ, નિ:સ્વાર્થ સેવા અને સાધકોને આપેલ પ્રોત્સાહન કેમ ભુલાય ? અમારા સહુના ઉચ્ચારણમાં થતી ક્ષતિઓને ખૂબ જ પ્રેમ પૂર્વક સુધારી ને આગળ વધારવા પ્રયત્ન કરતા. પ્રથમ લેવલમાં ઓડિયો સુધારીને વિડિયો તૈયાર કરવા માટે વિવિધ સૂચનો કરતા,ઉત્સાહ આપીને આગળના સ્તરની નોંધણી સુનિશ્ચિત કરતા હતા. તેમની પાસેથી પાયાનું જ્ઞાન મેળવીને અમે સહુ સદ્‌ભાગી બન્યા. અંતમાં આનંદોત્સવ યાદગાર બની રહ્યો હતો.

લેવલ ૨,૩,અને ૪ માં - ઑગસ્ટ ૨૦૨૧થી ડીસેમ્બર ૨૦૨૨ સુધી મીનળદીદી દાણી અમારા પ્રશિક્ષક રહ્યા. તેમની પાસે ગીતા શીખવાનો અનેરો લાભ જીવનનો અભૂતપૂર્વ લહાવો બની રહ્યો. તેમની કૃતિભક્તિમાં જ્ઞાન અને વિનમ્રતાનો સમન્વય છે.મીનળદીદી સ્તર મુજબ મૂળભૂત સિધ્ધાંતો બતાવીને સમજણના આગલા સ્તર સુધી લઇ જતા. ગીતાજીના શ્લોકો આઘાત, હ્રસ્વ દીર્ઘ , અનુસ્વાર, અવગ્રહ અને વિસર્ગ સાથે શુધ્ધતાપૂર્વક , લયબધ્ધ કેવી રીતે ગવાય તે બહુ જ સરળતાથી શીખવતા હતા. એકલ અનુપઠન વખતે થયેલી ભૂલોનું નિવારણ ધીરજ અને પ્રેમથી કરતા. અર્થ વિવેચન અને વ્યાકરણ સત્રનો સમયાનુસાર લાભ લેવા તેઓ અચૂક ભલામણ કરતા જેથી સમજણ વધી શકે. ચોથા લેવલમાં મૂળ ગીતા પ્રમાણે કઇ રીતે પાઠ કરવો તે પણ જાણવા મળ્યું.

દરેક આનંદોત્સવ મા સાધકો જ્યારે જ્યારે તેમનો વ્યક્તિગત આભાર પ્રગટ કરીને તેમને ધન્યવાદ આપતા ત્યારે તેઓ અત્યંત નમ્રતાથી પોતે "નિમિત્તમાત્ર" છે તેમ કહીને ખરો યશ કૃષ્ણ ભગવાન અને પરમપૂજ્ય ગુરુજી ગોવિંદગિરિજીને- ગીતા પરિવારને અર્પણ કરતા.

ગીતા પરિવારના અન્ય ઉપક્રમો જવા કે રામરક્ષા સ્તોત્ર અને વિષ્ણુ સહસ્રનામમા જોડાવા માટે આગ્રહ કરતા.સાધકોને પરીક્ષા આપવા માટે પ્રેરણા આપીને જરુરી તૈયારી કરાવતા.

સાધકોની યોગ્યતા, પસંદગી અને રુચિ અનુસાર વિવિધ ક્ષેત્રોમાં સેવા માટેની તકોની માહિતિ વખતોવખત આપીને ઉત્સાહ વધારતા. કોઇને પણ કોઇ પણ સેવા ક્ષેત્રમાં તક મળતી ત્યારે તેઓ અભિનંદન પાઠવીને બીજા બધાને પ્રોત્સાહિત કરતા. પ્રત્યેક વર્ગની આતુરતાપૂર્વક રાહ જોવાતી અને દરેક વર્ગનો વિશિષ્ટ આનંદ રહેતો.

અંતમાં બંને પ્રશિક્ષકોએ તેમની નિ:સ્વાર્થ સેવા, સમયદાન અને સૌમ્ય વર્તન દ્વારા સકારાત્મક ઉર્જા આપી છે.

"તમસો મા જ્યોતિર્ગમય" નો પ્રત્યક્ષ અનુભવ એટલે જ ગીતા પરિવાર। !!!

મને આ મનોગત વ્યક્ત કરવાની તક આપવા બદલ ગીતા પરિવારનો હું ઋણી છું. ગીતા પરિવારના " હર કર ગીતા, હર ઘર ગીતા" ના સૂત્રને ચરિતાર્થ કરવા અમે દંપતિ રુપે કટિબધ્ધ છીએ.

- દેવરાજ મજમુદાર

लर्नगीता में विभिन्न परीक्षायें

गीताजी को कंठस्थ कर अनेको दैवी गुणों से युक्त साधकों का परीक्षण करना अपने आप मे ही एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सेवा है, यह परीक्षक को भी बहुत कुछ सिखाती है।

हम गीता परिवार के सदा ऋणी रहेंगे जो जीवन के अनेकों पहलुओं से हमें आत्मसात् करवाते हुये जीने की कला सिखाती है। निश्चित ही परीक्षार्थीयों के मन में विभिन्न भाव आते हैं। कुछ अर्जुन समान अनपेक्षित भय से घबराये होते है, कुछ कृष्ण कृपा से अत्यंत सरलता और सहजता से यह परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं। गीता परिवार का विशेष लक्ष्य ऐसे साधकों पर है जिनके अंतरमन मे भय है कि क्या यह सम्भव है? क्या हमें परीक्षा में सफलता मिलेगी?

परीक्षा के समय, सर्वप्रथम परीक्षक उन्हे बतलाते है कि यह अद्भुत बात अवश्य ही सम्भव है, क्यूंकि गीताजी हमें जीवन में निर्भय होना सिखाती है। परीक्षा के समय साधकों को यह आश्वासन दिलाया जाता है कि गीताजी ने आपका हाथ थामा है इसलिए आप के भीतर यह आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है।

जीवन में कोई परीक्षा साधारण नही होती उसी प्रकार यह केवल कण्ठस्थीकरण मात्र की परीक्षा नही है। गीताजी अमृत है जिसका उन्होंने रसपान किया है। इस दैवी संवाद के केवल श्रवण मात्र से जीवन पावन हो जाता है और जो साधक परीक्षा मे बैठे हैं उन्होने अत्यंत सुंदर मधुर ईश्वर की वाणी को अपने कंठ मे उतारने का अद्भुत प्रयास किया हैं। एक चरण बोलते ही धीरे धीरे पूरा श्लोक स्मरण में आ जाता है। कई बार श्लोक याद नही आते, ऐसी परिस्थिति में साधकों को दिलासा देते हुये दोबारा कंठस्थ कर परीक्षा देने की प्रेरणा देते हैं। पूरी ऊर्जा के साथ ऐसे साधक दोबारा परीक्षा में अवश्य बैठते है एवं उनका आत्मबल पहले से और अधिक बलवान होता है, वह स्वयं को पूर्व अनुभव के आधार पर और अधिक धनी होने का अनुभव करते है।

-गीताव्रती श्री मुनीश अग्रवाल



गीता प्रेरणा

जैसा कि हमें पता है "गीता में भगवान् गुरु हैं, और शिष्य मानव"; हमें यह स्पष्ट होना चाहिये कि गीता की मुख्य शिक्षा व मर्म हमारी बुद्धि में एक चित्रकार की रचना की भांति यह चित्रित कर देता है कि अकर्म की अपेक्षा कर्म ही श्रेष्ठ है। कर्म की श्रेष्ठता इस बात में है कि हम हमारी क्षमता, कौशल, शक्ति, बुद्धि, कुशाग्रता का पूर्ण उपयोग करें, कुछ पा लेने की खुशी और उसे खो देने के डर से होने वाले अवसाद, चिंता, विलाप से परे होकर उस परम पुरुष को सब कुछ अर्पण कर दें। जिससे हम सफलता में विनम्र और असफलता में स्थिर व सहनशील होकर प्रसन्न रह सकें।

श्लोकों का संस्कृत में पाठ सीखने के साथ उनका अर्थ जानने की तीव्र इच्छा, फिर उन अर्थों का व्यक्तिगत जीवन से मिलान ये कुछ अद्भुत अनुभव मुझे व मेरे साथ के साधकों को हुये, जहाँ किसी ने अपनो को खोकर कैसे अपने आप को अकेले संतुलित किया तो किसी ने यह जाना कि आर्थिक हानि के कारण अपने को अवसाद से बचा कर फिर सफलता कैसे पायी जाय! तो कुछ अद्भुत गीताव्रतियों बालगोपाल ने तो दूसरों को प्रेरणा देने कि योग्यता भी प्राप्त कर ली।

अपने अंत:करण की प्रसन्नता पर ध्यान केंद्रित कर पुरुषोत्तम ईश्वर के शरणागत होने से अच्छा इस जीवन में कुछ नहीं।



घर घर गीता, हर कर गीता

গীতাৰ অনলাইন শ্ৰেণীত অংশগ্ৰহণ কৰিব পৰাটো আমাৰ পৰম সৌভাগ্য। গীতাৰ শ্ৰেণীৰ প্ৰশিক্ষণৰ সৈতে জড়িত প্ৰশিক্ষক, অনুষ্ঠানটিৰ পৰিচালনা, কাৰিকৰী বিভাগ, অনুবাদ, সাহিত্য বিভাগ, কলিং আৰু মাইগ্ৰেচন বিভাগ, প্ৰচাৰ বিভাগ আদি আটাইকেইটা বিভাগৰ প্ৰতিগৰাকী সদস্যৰ নিস্বাৰ্থ সহযোগ অতি মন কৰিবলগীয়া। এনেক্ষেত্ৰত এই শ্লোকটো মনলৈ আহে....

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरूष:।।3.19।।

অবৈতনিক অথচ আটায়ে ইমান সমৰ্পিত ভাৱেৰে নিজ নিজ কৰ্তব্যসমূহ সুকলমে সমাপন কৰে । গীতা পৰিৱাৰৰ সৈতে জড়িত হ'ব পৰাটো অতি সৌভাগ্যৰ কথা বুলি বোধ হয়।

এগৰাকী প্ৰশিক্ষাৰ্থী হিচাপে গীতা শ্ৰেণীত অংশগ্ৰহণ কৰিলোঁ। পূৰা চাৰি বজাত উঠি গা ধুই গীতা পঢ়াৰ এটা অভ্যাস হ'ল। বৰ্তমান আমি অনুবাদ আৰু কলিং আৰু মাইগ্ৰেচন বিভাগত সেৱা আগবঢ়াবলৈ সুযোগ লাভ কৰিছো।

পাঠ কৰাৰ সমান্তৰলভাৱে সংস্কৃত ব্যাকৰণ শিকোৱা, দেশ বিদেশৰ অনেক ভাষাত শিকোৱা অনলাইন শ্ৰেণী মানৱ জীৱনলৈ আশীৰ্বাদ স্বৰূপ। ব্যাকৰণৰ অতিৰিক্ত শ্ৰেণী, বিভিন্ন দিৱসৰ লগত সংগতি ৰাখি আয়োজিত অনুষ্ঠান, অৰ্থবিবেচন সত্ৰ, প্ৰতি বিভাগৰ সদস্যৰ মাজত সুন্দৰ যোগাযোগ মন কৰিবলগীয়া কথা।

कर्मन्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।।2.47।।

কেৱল শাস্ত্ৰ বিহিত কৰ্মসমূহ কৰি যোৱাৰ বাবেহে তোমাৰ অধিকাৰ আছে, কিন্তু তাৰ কৰ্মফলৰ ওপৰত তোমাৰ অধিকাৰ নাই। গীতা জীৱনত প্ৰয়োগ কৰি কৰ্মব্ৰতী হৈছে এই গীতাসেৱীসকল।

গীতাৰ বাণী - যি হৈছিল ভালৰ বাবেই হৈছিল, যি হৈছে ভালৰ বাবেই হৈছে, যি হব ভালৰ বাবেই হ'ব - এই বাক্য শাৰীয়ে জীৱনত অতি গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰভাৱ পেলায়। Depression, anxiety ইত্যাদি সমস্যাৰ পৰা নিশ্চিতভাৱে জীৱনত পৰিত্ৰাণ পাব পাৰি। যিসকলে গীতাৰ বাণী নিজৰ জীৱনত পালন কৰিছে, উদাহৰণ স্বৰূপে মহাত্মা গান্ধী, আইনষ্টাইন আদি মহান ব্যক্তি সকলৰ, নিশ্চিতভাৱে জীৱনৰ দৰ্শন সলনি হৈ পৰিছে। গীতাৰ বাণীসমূহ উন্নতিৰ শিখৰলৈ বগাব পৰা জখলা। শ্লোকসমূহৰ ঘাট, উচ্চাৰণসমূহে অতি বৈজ্ঞানিকভাৱে মানুহৰ শৰীৰ মন মগজুত প্ৰভাৱ পেলায়। চিন্তা চেতনা জাগ্ৰত কৰি প্ৰকৃত মানুহ হোৱাৰ সমল গীতা। সেয়েহে আজি বিশ্বত গীতা অনুপ্ৰেৰণাদায়ক (motivational) কিতাপ হিচাপে সৰ্বজন সমাদৃত আৰু সৰ্বজন বিদিত।

- Nirmali Gogoi

ଊର୍ମ୍ମିଳା

ଊର୍ମ୍ମିଳେ ନୀଯେନ୍ତେ ଜାନକିଯାଯୀଲ
ଜନକൻറെ പുത്രി താനല്ലോ നീയും
പൈത്യകപെരുമതൻ ജൻമമാണെങ്കിലും
പാരിതിലാരും അറിഞ്ഞില്ല നിന്നെ
താതൻറെ സത്പുത്രിയാണു നീയെങ്കിലും
വളർത്തു പുത്രിയല്ലോ വൈദേഹിയായി..!
നിസ്തുലസ്നേഹ പ്രഭാവമായിട്ടും
നിനക്കായൊരു സ്തുതിയാരും ചൊല്ലിയില്ല....നിന്നെ
വേൾക്കാനായാരും അമ്പെടുത്തില്ല
നിനക്കായൊരു ശൈവചാപവും പണിതില്ല..!
പതിനാലു സംവത്സരം ഏകയായ് പതിതൻ ഭാത്യഭക്തിയാൽ വിരഹിണിയായി..
അശ്രുപൊടിയുമക്ഷികളാലന്തപുരത്തിൽ
അഹോരാത്രം വ്യഥ പൂണ്ടു വസിച്ചതും നീ.
രാമന് തുണയായി സീതക്ക് കാവലായി
പ്രാണൻറെ പാതിയാം ലക്ഷമണൻ
യാത്ര ചോദിക്കവേ..
അരുതെന്ന് വിലപിച്ചു നീ യെങ്കിലും
ജ്യേഷ്ഠഭ്രാതാവല്ലോ സർവ്വവും
എനിക്കെന്നോതീ സൗമിത്രനുമപ്പോൾ..!
വിരഹത്തിൻ കനലൂതി നീറിപ്പിടയുവാൻ
എനിക്കെന്തിനീ കൊട്ടാരവും സൗഖ്യവും ആടയാഭരണങ്ങളുമെന്ന് നീ കേണതും
ഈരേഴു വത്സരങ്ങൾക്കപ്പുറം
കാണും വരെ മാതൃസേവ ചെയ്യ് തുണയേകണം ഭവതിയെന്ന്
ചൊല്ലിയതും നിൻഭവാനല്ലോ..!
നിർവ്വികാരമോടെ രാമപാദങ്ങളെ നോക്കി യാത്രയാം പ്രിയകാന്തനോ
ഇതിഹാസമെഴുതിയ വാല്മീകിയോ സ്മരിച്ചില്ല ചുടുകണ്ണീരാൽ ഹോമിച്ചു തീർത്ത നിൻ യൗവ്വനവും പ്രണയവും..!
ഭൂമിപുത്രിയല്ല ഭൂമിയേക്കാൾ ക്ഷമയുള്ള
രാമായണം വാഴ്ത്തിപാടാത്ത പതിവ്രതേ.. മറന്നുവോ നിന്നെ ആദികവിയും..!
ഊർമ്മിളേ നീയൊരു വിലാപകാവ്യം
നിൻറെ കരൾകത്തുമഗ്നിജ്വാലയിൽ കറയേതു മില്ലാതെ വിളങ്ങുന്നു നീ..
കറയേതുമില്ലാതെ വിളങ്ങുന്നു നീ..!

- Hemalatha Krishnadas.

ଜୀବନ ପ୍ରବାହରେ ଲର୍ଣ୍ଣ ଗୀତାର ପ୍ରଭାବ

ଶ୍ରୀ ଭଗବାନ ଗୀତାରେ କହିଛନ୍ତି ;
ଯଦା ଯଦା ହି ଧର୍ମସ୍ୟ ଗ୍ଲାନିର୍ଭବତି ଭାରତ ।
ଅଭ୍ୟୁତ୍ଥାନମଧର୍ମସ୍ୟ ତଦାତ୍ମାନଂ ସୃଜାମ୍ୟହମ୍ ।। 4/7
ବା ରୂପାନ୍ତରରେ ଓଡିଆ କବି କହିଲେ ;
ଧର୍ମ ବ୍ୟଭିଚାର ହେଲେ ଜଗତରେ, ଆସ ତୁମେ ଅବତରି ।
ଧର୍ମର ସଂସ୍ଥାର କର ବାରମ୍ବାର ,ନୂଆ ନୂଆ ରୂପ ଧରି ।।

ଏହି ଉକ୍ତିର ଯଥାର୍ଥତା ଆମେ ଯୁଗ ଯୁଗରୁ ଦେଖି ଆସୁଛୁ । ତ୍ରେତୟାରେ ପ୍ରଭୂ ଶ୍ରୀରାମଙ୍କ ରୂପରେ, ଦ୍ୱାପରରେ ଯୋଗେଶ୍ୱର ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କ ରୂପରେ ଏବଂ କଳିରେ ପ୍ରଭୂ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ରୂପରେ ଆବିର୍ଭାବ ହୋଇ ସର୍ବଦା ମାନବ ଧର୍ମର ରକ୍ଷା କରିଆସୁଛନ୍ତି । ଯେତେବେଳେ ସମଗ୍ର ଭାରତ ବର୍ଷ ଅଧର୍ମଙ୍କ କବଳରେ ପଡି, ତାହାର ସନାତନ ସଂସ୍କୃତିର ଅଧଃପତନ ହେବାକୁ ଲାଗିଥିଲା, ସେତେବେଳେ ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ମହାପୁରୁଷ ମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଆବିର୍ଭାବ ହୋଇଥିଲେ ସ୍ୱାମୀ ରାମକୃଷ୍ଣ ପରମହଂସ ଏବଂ ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ । ସେମାନଙ୍କ ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତି ରକ୍ଷା କରିବାରେ ଦାନ ଅତୁଳନୀୟ ।ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ ଥିଲେ ଯୁଗ ପୁରୁଷ, ଯେ କି ସମଗ୍ର ଭାରତ ବର୍ଷ ସହିତ ବିଦେଶରେ ମଧ ସନାତନ ସଂସ୍କୃତିର ରକ୍ଷା ପାଇଁ ଏକ ଜନ ଜାଗରଣ ସୃଷ୍ଟି କରିଥିଲେ ।ତାଙ୍କର ପ୍ରଧାନ ମନ୍ତ୍ର ଥିଲା ' ମନୁଷ୍ୟ ଗଠନ ଓ ରାଷ୍ଟ୍ର ନିର୍ମାଣ '।ସେ ତାଙ୍କର ଏହି ମନ୍ତ୍ରଦ୍ୱାରା ଭାରତୀୟ ଜନସାଧାରଣକୁ ପ୍ରବର୍ତ୍ତିତ କରାଇଥିଲେ । ଏହି ପୃଷ୍ଠ ଭୂମିରେ, 1986 ମସିହାରେ, ମହାରାଷ୍ଟ୍ର ପ୍ରଦେଶର ଏକ ଛୋଟିଆ ସହର ସଂଗମନେର ରେ ପ. ପୂ. ସ୍ୱାମୀ ଗୋବିନ୍ଦଦେବ ଗିରିଜୀ ମହାରାଜ ଗୋଟିଏ ଚାରା ଲଗାଇଥିଲେ, ଯାହାର ନାମ ' ଗୀତା ପରିବାର ' ।ସେହି ଚାରା ଆଜି ଏକ ବିଶାଳକାୟ ବୃକ୍ଷର ରୂପ ନେଇଛି, ଯାହାର ଶାଖା ପ୍ରଶାଖା ବର୍ତ୍ତମାନସୁଦ୍ଧା 167 ଦେଶରେ ବିସ୍ତାରିତ ହୋଇଛି ।ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ମନ୍ତ୍ରକୁ ପ୍ରାକୃତ ସ୍ତରରେ ରୂପଦେବାପାଇଁ ଗୀତା ପରିବାର ସଂକଳ୍ପବଦ୍ଧ । ଏହି ସଂକଳ୍ପ ଦିଶାରେ ସ୍ୱମୀଜୀ ଏକ ଲକ୍ଷ ନିର୍ଧାରଣ କରିଛନ୍ତି, ଯାହାର ନାମ ' ଗୀତା ପଢନ୍ତୁ, ପଢାନ୍ତୁ ଏବଂ ଜୀବନରେ ଆପଣାନ୍ତୁ ' । ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବଦ୍ଗୀତା ମାଧ୍ୟମରେ ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ଅଭିପ୍ସା ପୂର୍ଣ୍ଣ ହୋଇପାରିବ, ଏହା ସ୍ୱାମୀ ଗୋବିନ୍ଦଦେବ ଗିରିଜୀଙ୍କ ଦୃଢ ବିଶ୍ୱାସ । ଯେହେତୁ ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବଦ୍ଗୀତା ସ୍ୱୟଂ ଭଗବାନଙ୍କ ଶ୍ରୀମୁଖ ନିଃସୃତ ବାଣୀ, ଯାହାକୁ ପଞ୍ଚମ ବେଦ ବି କୁହାଯାଏ , ତାକୁ ଜୀବନ ଶାସ୍ତ୍ର ରୂପରେ ସ୍ୱମୀଜୀଙ୍କ ଲକ୍ଷକୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ କରିବା ଉଦ୍ଦେଶରେ ଗ୍ରହଣକରି, ଜନ୍ମ ନେଲା 'ଲର୍ଣ୍ଣ ଗୀତା ' କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ।

ସ୍ୱାମୀଜୀଙ୍କ ତିନୋଟି ଲକ୍ଷକୁ ରୂପାନ୍ତରିତ କରିବପାଇଁ, ଲର୍ଣ୍ଣ ଗୀତା ଗୋଟିଏ ପଥ ଚିତ୍ର (Road Map) ଅଙ୍କନ କରିଛି, ଯଦ୍ୱାରା ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱର ଜନତା ଅତି ସହଜରେ ଗୀତା ଅଧ୍ୟୟନ ଶିଖିପାରିବେ । ପ୍ରଥମ ଲକ୍ଷ - ଗୀତା ପଢନ୍ତୁ କୁ ସହଜ ସୁଗମ କରିବାପାଇଁ, ସର୍ବ ପ୍ରଥମ ଆବଶ୍ୟକତା, ଶୁଦ୍ଧ ଉଚ୍ଚାରଣ ଓ କଣ୍ଠସ୍ଥିକରଣ ଶିଖାଇବା ସକାଶେ ତାଲିମପ୍ରାପ୍ତ ଦକ୍ଷ ପ୍ରଶିକ୍ଷକ, ଯାହା ଗୀତା ପରିବାର ନିର୍ମାଣ କରେ। ତା ସହିତ ଶିକ୍ଷାର ସହାୟତାପାଇଁ ସମସ୍ତ ପ୍ରକାର ପିଡିଏଫ୍, ଅଡିଓ ଓ ଭଡିଓ ଇତ୍ୟାଦି ଯୋଗେଇଦିଆଯାଏ ।ସବୁଠାରୁ ବଡ ଖୁସିର ବିଷୟ ଏହା ଯେ ଶ୍ରେଣୀ ସ୍ୱ ସ୍ୱ ଘରର ସୁବିଧାରୁ ଅନଲାଇନ ମାଧ୍ୟମରେ ହୁଏ । ତାହା ପୁଣି ସକାଳ 5ଟାରୁ ରାତ୍ରୀ 2ଟା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ 18ଟି ସମୟ ସାରଣୀରେ ଜୁମ୍ ମାଧ୍ୟମରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୁଏ ।ଏହିପରି ଦକ୍ଷ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରଣାଳୀଦ୍ୱାରା, ପ୍ରଶିକ୍ଷାର୍ଥୀମାନେ ଅନାୟାସରେ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ 18 ଅଧ୍ୟାୟର ଶୁଦ୍ଧ ସଂସ୍କୃତ ଉଚ୍ଚାରଣ ଚାରୋଟି ସ୍ତରରେ ଶିକ୍ଷା କରନ୍ତି । ଆଜିର ଉତ୍ତମ ପ୍ରଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ତାଲିମ ଲାଭକରି କାଲିର ପ୍ରଶିକ୍ଷକ ହୁଅନ୍ତି । ଏହିପରି ଦ୍ୱିତୀୟ ଲକ୍ଷ - ପଢାନ୍ତୁର ରୂପାନ୍ତରଣ ହୁଏ। ଯେପରି ପ୍ରଥମ ଓ ଦ୍ୱିତୀୟ ଲକ୍ଷର ରୂପାନ୍ତରଣ ହୁଏ, କାଳକ୍ରମେ ସାଧକଙ୍କ ଜୀବନ ଶୈଳୀବଦଳିବାକୁ ଲାଗେ । ଏହାର ଭୁକ୍ତଭୋଗୀ ଅନେକ ସାଧକ, ତାଙ୍କ ଜୀବନରେ ଆସିଥିବା ସକାରାତ୍ମକ ପରିବର୍ତ୍ତନ ବ୍ୟକ୍ତ କରିଥାନ୍ତି ।ସପ୍ତାହନ୍ତେ ହେଉଥିବା ଅର୍ଥ ବିବେଚନ ସତ୍ର ପରିବାରର ଏକ ଅଭିନବ କଳ୍ପନା ।ବରିଷ୍ଠ ଅନୁଭବ ସଂପନ୍ନ ପ୍ରଶିକ୍ଷକ, ଯେଉଁମାନଙ୍କ ଜୀବନ ପରିପ୍ରେକ୍ଷିରେ ଗୀତାର ପାରଦର୍ଶିତା ଅଛି, ସେମାନେ ଏହି ଅର୍ଥ ବିବେଚନ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତି । ଏହି ବିବେଚନ ସତ୍ର ଅନ୍ତରେ ସିଧା ସଳଖ ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତରୀଦ୍ୱାରା ସାଧକମାନଙ୍କ ଅନେକ ସଂଶୟର ଦୂରିକରଣ ହୁଏ ଏବଂ ସେମାନେ ବହୁତ ଲାଭାନ୍ୱିତ ହୋଇଥାନ୍ତି ।ଏହି ପ୍ରକାରେ ତୃତୀୟ ଲକ୍ଷ - ଜୀବନରେ ଆପଣାନ୍ତୁର ଧିରେ ଧିରେ ରୂପାନ୍ତରଣ ହୁଏ । ଏହି ପ୍ରକଳ୍ପରେ ସବୁଠାରୁ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ, କିନ୍ତୁ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ଭବ ବିଷୟ ହେଉଛି, ଉକ୍ତ ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଭାବରେ ନିଃଶୁଳ୍କ ।ତେଣୁ ଏହା ଏକ ବିଶ୍ୱ ସ୍ତରୀୟ ନିଃସ୍ୱାର୍ଥପର ସେବାରେ ପରିଣତ ହୋଇପାରିଛି। ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱରେ 5000ରୁ ଅଧିକ ସ୍ୱେଚ୍ଛାସେବୀ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ଅହରାତ୍ର ଏହି ମହା ଯଜ୍ଞରେ ନିଯୁକ୍ତ ଅଛନ୍ତି ।

ଶ୍ରୀ ଭଗବାନଙ୍କ ଗୀତାର ମହାନ୍ ବାଣୀ ' କର୍ମଣ୍ୟେବାଧିକାରସ୍ତେ ମା ଫଳେଷୁ କଦାଚନ 'ର ଏହି ସେବା ଏକ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଦୃଷ୍ଟାନ୍ତ ।

ଏହିପରି ଲର୍ଣ୍ଣ ଗୀତା ମାଧ୍ୟମରେ ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ସଂକଳ୍ପ ପୂର୍ଣ୍ଣକରିବା ସକାଶେ ସ୍ୱାମୀ ଗୋବିନ୍ଦଦେବ ଗିରିଜୀଙ୍କ ପ୍ରଦର୍ଶିତ ମାର୍ଗରେ ଲର୍ଣ୍ଣ ଗୀତାଏକ ସକାରାତ୍ମକ ପ୍ରୟାସ । ଆସନ୍ତୁ ଗୀତା ପଢିବା, ପଢେଇବା ଏବଂ ଜୀବନରେ ଆତ୍ମସାତ୍ କରିବା, ତଦ୍ୱାରା ନିଜର ମନୁଷ୍ୟତ୍ୱର ବିକାଶ ସହିତ ରାଷ୍ଟ୍ର ନିର୍ମାଣ କାର୍ଯ୍ୟରେ ନିଯୁକ୍ତ ହେବା ।

- Shri Keshav Petro

Voice of Bengal

এই আনন্দময় পৃথিবীতে আপনি কি বিষাদগ্রস্থ কিংবা মানসিক অবসাদে ভুগছেন, কাজের প্রচণ্ড চাপ আছে অথবা আপনার ভবিষ্যৎ নিয়ে চিন্তিত; তাহলে শুনুন আজ থেকে পাঁচ হাজার বছর আগে স্বয়ং অর্জুন ভীষণভাবে মানসিক অবসাদে বিধ্বস্ত হয়ে পড়েছিলেন। ভগবান শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে নানানভাবে সূত্র বা উপদেশ দিয়ে তখনকার মানসিক অবস্থা থেকে উদ্ধার করেছিলেন।অর্জুনকে উজ্জীবিত করেছিলেন যুদ্ধের জন্য এবং সেই যুদ্ধে বিজয়ী হন অর্জুন।

তাহলে ভাবুন সেই ক্রমাগতভাবে একই সমস্যা যুগ যুগ ধরে চলে আসছে এবং তার সমাধানের উপায় ভগবান শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং গীতার মাধ্যমে আমাদের দিয়ে গেছেন। আমরা জেনেও না জানার ভান করে আছি। অথবা মনেপ্রাণে হৃদয়ের আকুতি হচ্ছে না। সমস্যা কিন্ত একই আছে। এখনও অনেকেই মানসিক অবসাদে বা অশান্তির মধ্যেই জীবন অতিবাহিত করছেন । তাই আমাদের সকলের উচিত গীতা পড়া এবং সকলকে পড়ার জন্য অনুপ্রেরণা দেওয়া। শ্রীমদ্ভগবদগীতা হল জীবনকে মধুময় এবং সুন্দরতম করে তোলার এক অপূর্ব গ্রন্থ। জীবনকে মধুময় এবং আনন্দময় করে তোলার সহজ উপায় এই গ্রন্থে পাই।

শ্রীমদ্ভগবদগীতা বা গীতা একটি সাতশো শ্লোকের একটি ধর্মগ্রন্থ, তাই একে সপ্তশতী বলে।

হিন্দুরা গীতাকে ভগবানের মুখনিঃসৃত বাণী মনে করেন। মানবধর্ম, দর্শন ও সাহিত্যের ইতিহাসে গীতা এক বিশেষ স্থানের অধিকারী। গীতার কথক শ্রীকৃষ্ণ হিন্দুদের দৃষ্টিতে ঈশ্বরের অবতার পরমাত্মা স্বয়ং। গীতায় তাকে বলা হয়েছে শ্রীভগবান। গীতা সমগ্র মানবজাতির জীবনচর্যা একটি ব্যবহারিক পথনির্দেশিকা।

গীতাকে মোক্ষশাস্ত্র নামেও অভিহিত করা হয়।

ভগবদগীতা মানবজাতির জন্য শ্রীকৃষ্ণের অন্যতম শ্রেষ্ঠ উপহার। প্রকৃতপক্ষে তার উদ্দেশ্য ছিল মানবজাতিকে জড় জাগতিক অজ্ঞতা থেকে উদ্ধার করা। কুরুক্ষেত্রের যুদ্ধে অর্জুন যখন কৌরবপক্ষে তার আত্মীয়দের বিরুদ্ধে লড়াই করতে ইতস্তত বোধ করছিলেন। তখন শ্রীকৃষ্ণ সত্য , কর্ম, জ্ঞান, ধ্যান এবং ভক্তির দর্শন তাঁর কাছে ব্যাখ্যা করেছিলেন, যার ফলে বিশ্বের অন্যতম বড় ধর্মগ্রন্থ ভগবদগীতার উৎপত্তি হয়।

আমরা সকলে ধর্মপরায়ণ। আমাদের যে হিন্দু ধর্ম - স্বামীজীর কথায় বৈদিক বা বৈদান্তিক ধর্ম তার ভিতরে কি আছে তা জানা আমাদের অবশ্য কর্তব্য।

স্বামী বিবেকানন্দ একবার কাশ্মীরে গিয়ে একজন দরিদ্র মুসলমান বৃদ্ধা রমণীকে প্রশ্ন করেছিলেন - 'মা, তোমার ধর্ম কি?' তাতে সেই রমণী বলেছিলেন 'খোদা কি মেহেরবানী সে ম্যায় তো মুসলমানি হু' অর্থাৎ ভগবানের দয়ায় আমি মুসলমান। সনাতন হিন্দু ধর্মের অধিকাংশ লোকই ঠিক এই ভাবে অনুভব করে না, যে ভগবানের অপার করুণায় আমরা হিন্দু। হিন্দু ধর্মালম্বীদের এই প্রশ্ন করা হলে অনেকেই ভালো করে কিছু বলতে পারবেন না। কিছু কেউ কিছু কাহিনী পুরাণ কাহিনী অথবা শিব, কালী ও দুর্গার ধারণা নিয়ে কিছু হয়তো বলতে পারবেন। আমরা আমাদের পরবর্তী প্রজন্মের ওপর সনাতন হিন্দু ধর্মের প্রভাব ফেলতে পারিনা কারণ আমাদের অনুভবের অভাব, ঈশ্বরের প্রতি টানের অভাব। আচারগত ভাবে আমরা হিন্দু ধর্মকে গ্রহণ করেছি। আমাদের অধিকাংশ ধর্মীয় অনুষ্ঠানই হচ্ছে আচারগত। কিন্তু বৈদিক ধর্ম কে আমরা বুঝতে পারি না কারণ বেদের ভাষা কঠিন, বোঝা সহজ নয়।

ভগবান শ্রীকৃষ্ণ গীতার মাধ্যমে বেদান্ত তত্ত্ব উপস্থাপিত করেছেন যাতে আমরা বৈদিক ধর্মের যে শিক্ষা, সেই শিক্ষা লাভ করতে পারি। তাই গীতা হচ্ছে হিন্দুদের অবশ্য পাঠ্য গ্রন্থ। শুধু হিন্দু নয়, যে কোনও ধর্মের মানুষের জন্য এই গ্রন্থ টি প্রযোজ্য। এতে সাধারণ মানুষের কি করণীয় তার সম্বন্ধে সম্যক জ্ঞান হয়। ভগবান শ্রীকৃষ্ণ কে খ্রিস্টপূর্ব তিন হাজার বৎসর পূবের মানুষ বলেই আমরা গ্রহণ করি । গীতার ধর্মে একটা নতুন কিছু রয়েছে যার জন্য তাকে সমস্ত বৈদিক ধর্মের সারসংগ্রহ বলা যায়।

গীতার প্রধান শিক্ষা হচ্ছে কর্মযোগ, শুধু তাই নয় একটু ভালোভাবে অনুশীলন করলে আমরা দেখতে পাবো এটি একটি অপূর্ব সমন্বয় গ্রন্থ। এর ভেতরে কর্মযোগ, জ্ঞানযোগ ও ভক্তিযোগের কথা বলা হয়েছে। বৈদিক ধর্মের যত কিছু চিন্তা ধারা ছিল সমস্ত চিন্তাধারাকে গ্রহণ করা হয়েছে।

আগেকার দিনে মতবাদ ছিল যে সংসার ত্যাগ করে সন্ন্যাসী হয়ে সমস্ত কর্ম ছেড়ে না দিলে জীবনের চরম উদ্দেশ্য সিদ্ধ হবে না। অর্জুনকে আমরা তাই বলতে শুনি আমি ভিক্ষাবৃত্তি অবলম্বন করব, সন্ন্যাস গ্রহণ করব, আমি যুদ্ধ করব না। তখন শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে বললেন - না, কর্মের প্রয়োজন আছে কর্ম ছেড়ে কেউ এক মুহূর্ত বাঁচতে পারে না। শরীর যতক্ষণ আছে কর্ম কতক্ষণ আছে। সেটা শারীরিক বা মানসিক কর্ম হতে পারে। কর্মের মধ্য দিয়েই - অর্থাৎ নিষ্কাম কর্মের দ্বারাই কর্ম বন্ধন মোচন হয়। চিত্ত শুদ্ধ হয়, সেই শুদ্ধ চিত্তে আত্মসাক্ষাৎকার হয়। কর্ম মানুষকে করতেই হবে, কর্ম ছাড়া মানুষ থাকতে পারে না। তাই কর্মের প্রতি দৃষ্টিভঙ্গি দিলেন দৃষ্টিভঙ্গিটাই পালটে দিলেন। ভগবান অর্জুনকে বলেছেন বলছেন "শাস্ত্রবিহিত কর্ম সর্বদা তুমি করো।"

তখন সাধনার নানা পন্থা ছিল। কেউ জ্ঞানসাধনা করত, কেউ ভক্তি সাধনা বা কেউ যোগ সাধনা। এসব পন্থা নিয়ে পরস্পর পরস্পরের মধ্যে দ্বন্দ্ব লেগেই থাকত। ভগবান শ্রীকৃষ্ণ দেখিয়ে দিলেন যে সকল পন্থাকে সমন্বিত ভাবে গ্রহণ করতে হবে। কর্ম, ভক্তি, জ্ঞান ও যোগ এই চারটি প্রত্যেকটি পৃথক পথ। কিন্তু অবশেষে সব পথই এক তত্ত্বে মিলিত হবে। কর্ম সম্বন্ধে শ্রীকৃষ্ণ বললেন - 'অনাসক্ত হয়ে' কর্ম করলে মানুষ পরমগতি প্রাপ্ত হয়। গীতাতে বিভিন্ন ধরনের লোক নিয়ে (সাত্ত্বিক, রাজসিক, তামসিক) বিভিন্ন ধরনের আহার নিয়ে বিচার করা হয়েছে। কোন ধরনের লোকের কি খাবার ভালো লাগে এবং ইচ্ছে করলে মানুষ কিভাবে তমঃ থেকে রজঃ ও রজঃ থেকে সত্ত্বঃ তে যেতে পারে - তাও তিনি দেখিয়ে দিয়েছেন। এইভাবে বিভিন্ন তত্ত্ব, সাধনা পন্থা, অধিকারী ভেদ, সাধকদের স্বভাব, রুচি - সবকিছু নিয়ে একটা পূর্ণাঙ্গ চিত্র করে ভগবান শ্রীকৃষ্ণ সমন্বয় সাধন করেছেন।

গীতার মহিমা সম্বন্ধে প্রত্যেক গুণীজন (স্বামী বিবেকানন্দ, মহাত্মা গান্ধী, শ্রীঅরবিন্দ) ব্যাখ্যা করে গেছেন।

আসুন আমরা এই গীতা পাঠ শ্রবণ করি, এই সনাতন, সুমধুর সঙ্গীত যা অনন্ত কাল ধরে প্রবাহমান, তা যেন সকলের কানে পৌঁছে দিতে পারি, এবং আমরা যেন প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হই। জয় শ্রীকৃষ্ণ।

- Shri. Arobindo Bhatyacharya

कार्यक्रम एवं विवेचन नियोजन - सूत्र सञ्चालन समूह

कोरोना के वैश्विक संकट में एक ओर जहाँ सभी घर में बैठे थे एवं नकारात्मकता से भर चुके थे, वहीं दूसरी ओर प्रातः स्मरणीय परम पूज्य गुरुदेव स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज द्वारा संस्थापित गीता परिवार के कर्ताकर्ता एक अत्यन्त सकारात्मक ऊर्जा से पूर्ण होकर विश्वकल्याण का नवीन स्वप्न देख रहे थे। गीता परिवार के पंचसूत्री में से एक सूत्र भगवद्गीता को लेकर "हर घर गीता, हर कर गीता" इस ध्येय को अपनाकर ऑनलाइन गीता संथा वर्गों का आरम्भ बड़े सकारात्मकता और नि:स्वार्थ भाव से हुआ। साथ ही अनेक साधकों ने गीताजी को समझने की भी मांग रखी तो उसके लिये शनिवार-रविवार अर्थ विवेचन सत्रों का आरम्भ हुआ।

आज हम यह विवेचन नियोजन विभाग किस तरह कार्य करता है इस पर प्रकाश डालेंगे -

इस कार्य को सुचारू रूप से ऑनलाइन माध्यम से चलाने में तकनीकी संघ पर्दे के पीछे रहकर किसी भी कठिनाई या समय पर समस्या की कोई भी शिकायत किये बिना बड़े ही शांतता से आदरणीय गोपाल भैया नाथावत के मार्गदर्शन में कार्य करता है।

इसी के साथ प्रार्थना और दीप प्रज्ज्वलन करने वाले सेवियों से बात करके उनको सभी विषयों को समझा कर जूम प्रांगण तक पहुंचाने का कार्य नीता दीदी आसपत एवं श्रद्धा करवा दीदी के मार्गदर्शन में चलता है।

अब इस विभाग का दर्शनीय हिस्सा, जो आप सबके सामने प्रस्तुत होता है वह कैसे? इसकी संक्षिप्त जानकारी जानते हैं...! अर्थात् सूत्र संचालकों का चयन और संचालन कैसे होता है? इसको सभालने का दायित्त्व..नहीं !नहीं ! सौभाग्य मुझे मिला।

सबसे पहले तो प्रत्येक स्तर के आनंदोत्सव में जा जाकर कौन कैसी प्रस्तुति दे रहा है और कैसे बोल रहा है इसका परीक्षण किया जाता है। उनसे कांटेक्ट करके किसी भी माननीय विवेचक का परिचय करते हुये एक से डेढ़ मिनट का वीडियो मंगवाया जाता है। उसके पश्चात् ज़ूम पर दो से तीन बार उनसे पर्सनल मीटिंग करके कैमरा सेटिंग, अपीयरेंस, वेशभूषा, भाषा आदि विषय समझाये जाते हैं। लगभग 1 सप्ताह तक एक एंकर पर कार्य करने के पश्चात् उन्हें स्तर दो या तीन का सूत्र संचालन दिया जाता है। धीरे-धीरे सभी सत्रों के सूत्र संचालन बड़ी सहजता से होने लगते हैं। अब देखते हैं सूत्र संचालकों की चयन पद्धति.....! शनिवार रविवार के विवेचन के पश्चात् सोमवार का अवकाश लेकर मंगलवार से ही चुनाव प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। सूत्र संचालन ग्रुप में आने वाले विवेचन का समय, दिन और भाषा डाली जाती है। सूत्र संचालक अपने उपलब्ध समय अनुसार समय, दिन और भाषा समूह में लिखते हैं। फिर उन्हें पर्सनल में विवेचन के अध्याय का नाम और विवेचक का नाम भेज कर उनसे स्क्रिप्ट मंगवाते हैं और वह चेक होती है उसमें करेक्शन बतला कर फिर ऑडियो मंगवाते हैं। स्क्रिप्ट लगभग 3:30 मिनट के आगे बिल्कुल भी न जाये इसका बड़ी कड़ाई से ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार अत्यन्त सूक्ष्मता से यह सारा कार्य किया जाता है। यही कारण है कि लर्नगीता के अद्भुत प्रबंधन कि चर्चा चारो ओर है। किसी भी तकनीकी समस्या हेतु बैकअप टीम भी रखी जाती है। इसके अतिरिक्त व्याकरण, ट्रेनिंग, चिंतनिका, उद्घाटन समारोह, उत्सव... आदि सत्रों में भी हमारी टीम बढ़-चढ़कर साथ देती है। 20 से 25 सूत्र संचालकों का यह समूह है। जिसमें सभी बड़ी उत्सुकता और प्रसन्नता से सदैव तैयार रहते हैं। इन सभी प्रक्रिया में नमिता दीदी मेहरा बड़े ही प्रेम और धैर्य से साथ निभाती हैं। पू. स्वामीजी की कृपा से हम इसीप्रकार इस दिव्य कार्य में लगे रहें इसकी ईश्वर के चरणों में पुन: प्रार्थना है।

गीता मैत्री मिलन

गीता मिलन मैत्री इस कार्यक्रम को समझने के लिए इसके पूर्व के नेपथ्य को समझना आवश्यक है। विश्व में कभी-कभी कुछ नए शब्दों का आविर्भाव होता है, एक उदाहरण है आप लोगों में से अनेक लोगों को ब्लैकआउट का मतलब नहीं पता होगा। जिन लोगों ने सन् 1962, सन् 1965, सन् 1971 की युद्ध की विभीषिका को देखा है, वही ब्लैकआउट का मतलब समझते हैं।

उसीप्रकार लॉकडाउन शब्द को मानवजाति ने प्रथम बार सुना। एक तरफ महामारी की विभीषिका आसपास गली मोहल्लों में सुनसान वातावरण केवल एंबुलेंस अथवा शववाही वाहन के सायरन की आवाज और जब भी कोई फोन की घंटी बजी तो किसी न किसी परिजन के कोरोना से आक्रांत अथवा निधन का समाचार। उस विभीषिका के मध्य गीता परिवार एक आध्यात्मिक आंदोलन लेकर आया। जिन लोगों के पास प्रातः से संध्याकाल तक कुछ भी करने को नहीं था, अब वे पूरे दिन के लिए व्यस्त हो गयें। 40 मिनट की कक्षा पर उसके पीछे की जीवन व्यवस्था ने हम सब को एक नई राह पकड़ा दी। गीता कक्षा और गीता कण्ठस्थीकरण, सप्ताहांत में गीता विवेचन पूरी की पूरी दिनचर्या ही बदल गई।

शनैः शनैः स्थिति सामान्य होने लगी लॉकडाऊन में ढील दी जाने लगी, जनजीवन सामान्य होने लगा। तब तक गीता परिवार ने भी एक विशाल वटवृक्ष का आकार ले लिया था। परिवार के सदस्य हर दिन ज़ूम में मिलते मिलते साक्षात मिलने को आतुर होने लगे और तब हमारे गुरुदेव आचार्य गोविन्द देव गिरि जी के मार्गदर्शन में आदरणीय सञ्जय भैया, आशू भैया लेकर आए एक नवीन प्रयोग गीता मैत्री मिलन। एक अभिनव कार्यक्रम जिसमें एक शहर एवं उसके आस पास के गीता साधकों को एक स्थान पर मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यहाँ मात्र श्रीमद्भगवद्गीता पर चर्चा नहीं थी, इसके माध्यम से परस्पर एक दूसरे से साक्षात् सशरीर मिलने का आनन्द था। मित्रता को और प्रगाढ़ और प्रभावी करने का अवसर था एवं तभी इसे एक अभिनव नामकरण से सुशोभित किया गया गीता मैत्री मिलन। गीता भी मैत्री भी और मिलन भी।

साधकों और सदस्यों में परस्पर प्रतिस्पर्धा होने लगी। हर शहर हर नगर से आवेदन आने लगे। जिन शहरों के नामों का चयन हो गया, वे अपने को सौभाग्यशाली मानने लगे। आयोजन की रूपरेखा तैयार करने में तत्परता से संलग्न होने लगे। आगन्तुक अतिथियों का हवाई अड्डे पर स्वागत, उनके निवास की समुचित व्यवस्था, सांस्कृतिक कार्यक्रम, अतिथि स्वागत, मञ्च सज्जा, उद्घोषण, अल्पाहार अथवा स्वरुचि भोज सभी के ऊपर आयोजकों का सूक्ष्म चिन्तन अद्भुत, अविस्मरणीय प्रेरणादायी। ऐसा लगता था मानो अपने घर में पुत्र विवाह हो रहा है।

इन सबके पश्चात् के आनन्द की स्मृति भी रोम- रोम को पुलकित कर देती है। गीता मिलन मैत्री का वह अविस्मरणीय दिन, साधकों का उत्साह चरम पर, एक जैसे पारम्परिक सात्विक भारतीय परिधान से सुसज्जित महिला और पुरुष साधक वृन्द, ठसाठस भरा परिसर, श्रृंखला बद्ध अनुशासित श्रोता अद्भुत, अकल्पनीय दृश्य। आदरणीय सञ्जय भैया एवं आशू भैया ने जहाँ - जहाँ यह कार्यक्रम किया, उस शहर का वातावरण उस नगर का परिवेश उस स्थान की ऊर्जा ही बदल गई। वहां के साधकों का श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति, गीता परिवार के प्रति, गीता के प्रचार-प्रसार के प्रति, नये साधकों को गीता परिवार से युक्त करने के प्रति दृष्टिकोण ही बदल गया।

अंग्रेजी में एक शब्द है After Effect इस गीता मैत्री मिलन समारोह का After Effect अर्थात् उत्तर प्रभाव दीर्घस्थाई है, सदस्य नित्य नए कार्यक्रमों से युक्त हो रहे हैं। सबसे सुन्दर और प्रभावी कार्य है इस गीता मैत्री मिलन समारोह के पश्चात् गुरुदेव के स्वप्न हर घर गीता हर कर गीता अभियान और शतकोटि हनुमान चालीसा अभियान को नवीन दिशा प्राप्त हुई है। साधक प्रचार के किसी भी अवसर का भरपूर लाभ लेते हैं।

धन्य है गीता परिवार धन्य धन्य है गीता मैत्री मिलन।

अब तक के गीता मैत्री मिलन समारोहों की सूची -

गीता मैत्री मिलन, छत्तीसगढ़ - स्नेहिल मार्गदर्शन - डॉ. आशू गोयल - 8 जनवरी 2023

https: www.youtube.com live 8-TIS40Q69o



जिस दिन की छत्तीसगढ़ के सभी साधक प्रतीक्षा कर रहे थे वह शुभ दिन आज 8 जनवरी 2023 को आ गया। रायपुर के जगन्नाथ मंदिर के प्रांगण में यह गीता मैत्री मिलन संपन्न हुआ। प्रातः 9:00 बजे से कार्यक्रम आरंभ हुआ। प्रथम सत्र में गीता परिवार की उपाध्यक्षा तथा मध्यांचल प्रभारी प्रमिला माहेश्वरी दीदी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित कर ऑफलाइन प्रशिक्षण का महत्व समझाया। उसके पश्चात् गीता पाठ हुआ। अपराह्न 2:00 बजे ढोल नगाड़े के साथ गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा लर्नगीता उपक्रम के कार्यक्रम संचालक आदरणीय डॉ. आशू गोयल भैया का स्वागत किया गया। इसके उपरांत बाल साधकों द्वारा प्रार्थना की सुंदर प्रस्तुति की गई जिसके पश्चात् सभी उपस्थित मान्यवरों ने खड़े रहकर पूर्ण सम्मान के साथ छत्तीसगढ़ का राज्य गीत गाया।

गीता परिवार की दिव्य परंपरा के अनुसार कार्यक्रम का औपचारिक आरंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। दीप प्रज्वलन के लिए शशि बागड़ी जी, संतोष चांडक दीदी, चंद्रशेखर बाबू भैया, राकेश मिश्रा भैया यदि कार्यकर्ता भी आदरणीय आशू भैया और प्रमिला दीदी के साथ उपस्थित थे। दीप प्रज्वलन के शक्तिपूर्ण कार्यक्रम के पश्चात् प्रथा के अनुसार सभी उपस्थित अतिथि तथा मान्यवारों का स्वागत सत्कार किया गया।

उसके उपरांत शशि दीदी ने गीता परिवार का परिचय दिया तथा संतोष दीदी ने आशू भैया एवं प्रमिला दीदी का परिचय दिया।

प्रमिला दीदी ने अपनी प्रभावी शैली में गीता परिवार एवं गीता परिवार की ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कार्यों का प्रेरणात्मक परिचय देकर सबसे इस दिव्य कार्य के लिए समय का दान देने का अनुरोध किया।

तत्पश्चात् आ. आशू भैया ने "बिन्दु से सिंधु तक" इस संकल्पना को लेकर एक पावरप्वाइंट प्रस्तुति कि सहायता से सब

सभी को बड़े रोचक रीति से कार्यकर्त्ता के गुण एवं कार्य के विषय में समझाया। मोमबत्ती की एक बड़े सुंदर प्रात्यक्षिक के साथ उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी को एक नई दृष्टि का परिचय दिया। ज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, अभियांत्रिकी, संगीत, भाषा, नृत्य, इतिहास का महत्व देते हुए गीता परिवार द्वारा जो संस्कार दिए जाते है उनका विस्तार किया। आगे बढ़ते हुए आशू भैया ने सबको गीता परिवार के मूलभूत सिद्धांतों को एवं पंचसूत्री का विस्तार से परिचय करवा दिया।

बाद में छत्तीसगढ़ के गीताव्रती साधक बिंदु सोमानी दीदी एवं मंजूषा वैशंपायन दीदी का सम्मान किया गया। साथ-साथ भिलाई वासी वैशाली सूद दीदी की एक सुंदर पुस्तिका का आशू भैया के कर कमलों द्वारा प्रकाशन भी हुआ। इस पुस्तिका में उन्होंने पांच बातों का ज्ञान उनकी मंडला आर्ट और पेंटिंग द्वारा सजाकर प्रस्तुत किया। भक्त, ज्ञानी, गुणातीत, स्थितप्रज्ञ के लक्षण और दैवीसम्पंदा गुण इन पर आधारित इस पुस्तिका का मुख पृष्ठ ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के रूप दर्शाए हैं। इसके उपरांत आशू भैया और प्रमिला दीदी द्वारा सभी साधकों में नई ऊर्जा भरते हुए कार्यक्रम का समापन हुआ।







गीता मैत्री मिलन, संभाजीनगर, 21 जनवरी 2023

https: www.youtube.com live xWGEwEyPACI?feature share

पावन सान्निध्य : प.पू.स्वामी गोविन्दगिरिजी महाराज
(संस्थापक-गीता परिवार)

स्नेहिल मार्गदर्शन : डॉ. आशू गोयल जी
(राष्ट्रीय उपाध्यक्ष , गीता परिवार)

समय : प्रातः 9.30 से अप. 12 बजे तक



में गीता मैत्री मिलन, छत्रपति संभाजी नगर / आशीर्वचन परम पूज्य गुरुदेव के द्वारा एवम मार्गदर्शन गीता परिवार राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशूजी

गत 21 जनवरी, 2023 को "गीता परिवार मैत्री-मिलन" की एक अन्य कड़ी के रूप में छत्रपति शम्भाजीनगर स्थित तापड़िया नाट्य मन्दिर सभागार में 'गीता मैत्री समारोह' का आयोजन किया गया जहाँ बड़ी संख्या में उपस्थित होकर सदस्यों और गीता-प्रेमी साधकों ने इसे सफल बनाया।

अथर्ववेद के चौथे कांड के 10वें सूत्र का हवाला देते हुए शंखनाद द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सभी वय के लोगों और बालकों के मधुर कंठों से गीता जी के श्लोकों के गायन के साथ अनुपम रथ पर सवार योगेश्वर कृष्ण और गांडीवधारी अर्जुन की मनोरम झांकी के साथ सम्माननीय अतिथि डॉ. आशू गोयल जी ने सभागार में प्रवेश किया।

श्रीमती माधुरी जी सोमानी डॉ आशू गोयल जी को और श्रीमती कनक जी मल्ल श्री राजकुमार जी लड्ढा (अध्यक्ष गीता परिवार, मराठावाडा) को ससम्मान मंच पर लेकर गईं जहाँ सर्वप्रथम इन्होंने गीता जी का पूजन कर तत्पश्चात् दीप प्रज्ज्वलन किया। अन्य सम्माननीय अतिथि श्री प्रदीप जी राठी और श्री श्याम जी मनियार ने भी इसमें सहयोग किया। आगन्तुक अतिथियों का सम्मान श्रीमती कनक मल्ल, श्रीमती सूरज होलानी व श्रीमती ऊषा जी धूत ने पुष्प-गुच्छ, शाल व दुपट्टा पहना कर किया। सम्मानित अतिथि व मार्गदर्शक डॉ. आशू गोयल जी को पगड़ी पहनाई गयी और पांडुरंगा विट्ठल राय की मूर्ति भेंट की गयी।



परम पूज्य गुरुदेव के द्वारा एवम मार्गदर्शन गीता परिवार राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशूजी गोयल

गीता परिवार कार्यकारिणी संभाजीनगर की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी जी ने "गीता परिवार" की कार्य-प्रणाली से सबको अवगत कराते हुए यह जानकारी दी कि 'गीता परिवार, शम्भाजीनगर' के सदस्यों द्वारा सवा करोड़ सूर्य नमस्कार के लक्ष्य को पूरा किया गया। साथ ही, बाल-संस्कार, नाट्य-संस्कार, योग नृत्य प्रशिक्षण, साहस संस्कार, प्रज्ञा-संवर्द्धन आदि कार्यक्रमों के लिए कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया गया। विश्व की सबसे बड़ी ऑनलाइन कक्षा-लर्न गीता के तहत 142 से भी अधिक देशों से लगभग साढ़े पाँच लाख लोग गीता परिवार से जुड़कर गीता सीख रहे हैं जो कि 12 भाषाओं मे सिखाई जा रही है।

परम पूज्य स्वामी श्रीगोविन्द देव गिरि जी के शुभागमन पर उनका सम्मान उन्हें फेटा (पगड़ी), शाल व विट्ठल देव की तस्वीर प्रदान कर किया गया। पूज्य गुरुदेव ने आये हुए सभी 'गीताव्रतियों' का स्वागत सभी को सुवर्ण पदक पहना कर व प्रमाण-पत्र प्रदान कर किया। सबके साथ सामूहिक फ़ोटो भी ली गई। गुरुदेव के कर-कमलों द्वारा श्रीमान् विश्वास जी डोगरे द्वारा हस्तलिखित गीता पुस्तक का विमोचन भी किया गया। अपने उद्बोधन से पूर्व पूज्य गुरुदेव ने "शतकोटि हनुमान चालीसा पाठ" पूर्ण करने के तहत हनुमान चालीसा का एक पाठ सबके साथ किया। उन्होंने बतलाया कि किस तरह वेदों से लेकर गीता तक

"मैत्री" के सिद्धान्त का प्रयोग हुआ है और यह एक महत्वपूर्ण शब्द है। गीता परिवार का ध्येय ही पारिवारिक, सामाजिक मर्यादाओं के अन्तर्गत "मैत्री भाव" का रहा है। उन्होंने यह भी बतलाया कि किस प्रकार हमें गाँवों,मोहल्लों और गलियों में जाकर अधिक से अधिक लोगों को 'गीता परिवार' से जोड़ना चाहिए। जिस तरह हनुमान जी ने सीता जी के प्रति श्रद्धा के साथ लंका में प्रवेश किया, उसी प्रकार गीता के प्रति दृष्टिकोण लेकर हमें आस-पास की लंकाओं में घुसना है। उन्होंने सम्मानित 'गीताव्रतियों' से आह्वान किया कि वे कम से कम पाँच लोगों को सम्पूर्ण गीता का पाठ करवाया और अन्य कार्यकर्ता कम से कम दो लोगों को गीता से जोड़ें ऐसा आवाह्न किया। इस प्रकार हमारा 'ऋषि ऋण' कुछ कम होगा। गीता परिवार के समस्त कार्यकर्ताओं के तन, मन और धन द्वारा किये जा रहे सेवा-कार्य कि प्रशंसा करते हुए उन्होंने हेनरी वर्डस्वर्थ लौंगफेलो की प्रेरणादायक पंक्तियों को उद्धृत किया -

"The heights by great men reached and kept were not attained by sudden flight, but they, while their companions slept, were toiling upward in the night."

अपने उद्बोधन में आदरणीय आशू गोयल जी ने कहा कि आज से 36 वर्ष पूर्व प.पू. स्वामी जी ने इस 'गीता परिवार' की संकल्पना की। इसे संस्था, फ़ाउन्डेशन, ट्रस्ट या समिति न बनाकर इसे एक परिवार बनाया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार की प्रेरणा उन्हें गीता परिवार से मिलती है, वह अन्यत्र नहीं मिलती। उन्होंने आगे बतलाया कि किस प्रकार एक छोटी सी बूँद महासागर का रूप ले सकती है उसका चिन्तन हम "बिन्दु से सिन्धु" में करेंगे।

'गीता परिवार' के द्वारा किये जाने वाले विस्तृत कार्यों का 'सिन्धु-दर्शन' कराते हुए उन्होंने कहा कि गीता परिवार कार्य करने के ज्ञान की सही दृष्टि और दिशा देता है।

उन्होंने गीता परिवार के "पंचसूत्री उद्देश्य कार्यों" के बारे में भी बताया।

आगे कार्यकर्ता रूपी "बिन्दु" के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि एक उत्तम कार्यकर्ता में पालन करने योग्य ये 9 गुण होने चाहिए-

1. सेवा नहीं-साधना, 2. सहनशीलता, 3. शुचिता, 4. कार्य महत्त्वपूर्ण-मैं नहीं, 5. प्रतिस्पर्द्धा करें-प्रतिद्वन्द्विता नहीं, 6. श्रेय रखें नहीं-बाँटें, 7. चेतन बनें-जड़ नहीं, 8. कार्य में निष्ठा और 9. अपने शब्दों, कार्यों और विचारों पर निरंतर विचार और नियन्त्रण।

अपने वक्तव्य के समापन पर उन्होंने कार्यकर्ताओं की पचास 'टीम इलेवन' बनाने का आह्वान किया।

इसके बाद प्रश्नोत्तर काल, समारोह समापन पर आभार वक्तव्य हुआ। तदनन्तर प्रार्थना द्वारा समारोह का समापन किया गया।

मंच व सूत्र संचालन श्री नन्दकिशोर जी मालपाणी द्वारा किया गया।





Geeta Maitri Milan Akola - 12 मार्च 2023

https: www.youtube.com live 2zNcgoibqA0?feature share



Geeta Maitri Milan at Akola was organized with great enthusiasm with the blessings of Swami Govind Giri ji Maharaj.

It started with the welcome of honourable Dr. Ashu Goyal ji bhaiya. The Vice President of Geeta Parivaar. His entry was made graceful by the welcome dance of school going girls dancing.

Stage (Vyas peeth) was well decorated with fresh flower garlands where other Guests, members honoured and welcomed him with Bouquet and Anchor Jaya Jaju ji conveyed gratitude to him on behalf of Akola and other presented members. Ashu bhaiya ji was invited on stage to light a lamp (Deep jyoti) and the ceremony continued with the experience sharing of the journey of Geeta Parivaar by Jyoti Baheti ji, Anil Bhansari ji, Vice president Kavita ji, Vidharbha Pradesh Chief Shobha ji, Vimal Goenka ji and Pradeep Rathi ji.

After that Kalpana Bhutra ji presided over the stage and expressed her gratitude to Ashu bhaiya ji and conveyed message to the audience that – Ramayana preaches us "What to do" in life on the other hand Mahabharata preaches us "What not to do" in life and Shrimad Bhagwad Geeta teaches us "How to live life"

Vimal ji Goenka was the driving force behind this auspicious day of Maitri Milan as he initiated for this meet together on a large scale. He offered Coconut (Shreephal) and Shawl to Ashu bhaiya ji, with a big round of applause the ceremony continued conveying gratitude to media Team, Geeta Sevi from all over the world and other members presented over there.

Shri Narendra Deshpande ji, Shri Gopal ji Khandelwal, Shri Babban lal Chowdhary, Shri Pradeep Rathi ji, education society head Moti Singh Mohota ji all welcomed honourable Ashu bhaiya ji with colourful Bouquet. Shobhna Harkot ji and all other members and head of the departments presented gratitude to Pujya Govind Giri Ji Maharaj. Anchor further conveyed that 13000 participants joined online classes from Akola, Amravati and other places as per records. With the active participation of Sanjay Malpani ji with Ashu bhaiya ji and Govind Giri ji Maharaj 142 countries have become the participant of Geeta Parivaar with the Aim decided by the Guruji as follows: -

Bhagawad Bhakti

Bhagawad Gītā

Bhārata Mātā

Then we got focused on Sewa (Charity), rendering services with the concept of giving "TIME" by an individual for Geeta Parivar. Next Vimal ji Goenka of Akola produced his belief in front of all participants highlighting Santh Tukaram's statement relating Ashu Bhaiya ji's presence with HOLI & DEEPAWALI in the premises there.

Kirti Dawri ji presided over the stage and honoured all the participants including Chief Guest with her powerful words for Ashu Bhaiya ji in an honour addressing CORONA TIME PERIOD'S e-learning campaign till now with achievements and accomplishments.

Coming to the most excited and proud moment Vice president Ashu Bhaiya ji awarded 13 Geeta Vrati on stage and presented them Bouquet, Certificates and Medals. Among them 3 were school going boys with Grandmother of one of the boys famous as (DAADI -POTA JODI). One of the Geeta Vrati achieved award twice and he is proceeding towards the 3rd attempt which itself is remarkable for Geeta Parivaar. Women were awarded Geeta Vrati and the heart touched moment was when 13 years old blind girl was awarded as Geeta Vrati, that made the moment and ambience proud when she confidently and fluently conveyed message of her Geeta Vrati journey to the audience in English language paying gratitude to her teachers, Audios of Suwarna kaaki and Ashu bhaiya ji. No doubt it's an achievement for the Geeta Parivar and the soul contentment for this Mission of Pujye Govind Giri ji Maharaj. Entire Hall was echoed by the big round of applause. Ashu bhaiya ji blessed her with his heart and soul and was overwhelmed to see the happiness and confidence of her.



Finally on-stage Ashu Bhaiya ji was addressed as {APNE BHAIYA} by Sonal Goenka ji and she shared 23 years of journey of Ashu Bhaiya for the motto of GHAR GHAR GEETA. Under the supervision and motivation of Pujya Giri ji Maharaj at present 146 countries with 5.5 lakh of participants are Geeta Parivar.

Ashu bhaiya ji took initiative to share his journey of GHAR GHAR GEETA and his work done with Sanjay Malpaani ji and Guruji on 23.06.2022 where with their efforts they were succeeded to get 25000 google forms filled which was not more than a miracle rather the grace of Lord Krishna (Bhagvana) and blessings of Guruji, as he shared the data that classes started in 3 different languages over the period of 2.5 years and at present 46,000 participants are part of 24 batches,

5.5lakh from 46 countries. 5000 participants are working as GEETA SEVI now. Classes are being conducted online in 13 languages starting from 5 am in the morning till 2 am at night for 40 minutes in 18 slots which is a pride for all.

Proceeding towards the last moment Ashu bhaiya ji focused on-

"APNI BAAT APNE SE" giving parameter to evaluate yourself first (know yourself and introspect) and further explained the KARMA/ Conscious Heart (Chitt) relating it to the diary of CHITRAGUPT above as a result and witness of our own deeds (Karma). He explained no witness is required as realities of your own Karma (deeds-bad or good) are stored in your heart (GUPT CHITT) and he denoted it as CHITRA GUPT for justice above in the Heaven.



Ashu Bhaiya ji summarized it as "BE YOUR OWN CHITRA GUPT" in the six broad areas of Skills, Finances, Family, Health, Spirituality and any other sector of your choice. He focused on the above mentioned areas by giving examples of Sachin Tendulkar addressing his failures and achievements emphasizing on " BE SIMPLE , BE SAMPLE "

Coming to closure, "TEJOHAM" Hindi version book of Swami ji was announced and presented by Ashu bhaiya ji and other Chief Guests on stage and also It was distributed free to all the audience and participants. This book explains "HOW TO BECOME KARYA KARTA"

GEETA MAITRI MILAN was successfully participated by presenting MOMENTO of love and respect to Ashu bhaiya ji on Vyas Peeth (stage) with the announcement of Ram Pratishtha App to download and finally celebration ends by chanting of Shlokas in a chorus by all followed by Bhog Prasad.

Warm Regards

Anju Sharda

(Geeta Sevi)

Geeta Maitri Milan Kolkata - March 26 2023

https: www.youtube.com live FwHlQTeESoY?feature share



Kolkata, the cultural capital of India, witnessed a grand celebration of spirituality and togetherness on a delightful Sunday morning. The Geeta Maitri Milan program, held on March 26, 2023 (Chaitra Shukla Panchami of samvat 2080), transformed the Ballygunge Park into a mesmerizing realm of divinity, where individuals from all walks of life embraced the teachings of the Bhagavad-Gītā.

The atmosphere was charged with spirituality as Rinku Gupta Didi and Sangita Paramananda Didi commenced the program with a prayer (Prarthana). The audience felt an immediate connection with the divine, their hearts echoing the melodious chants that resonated through the hall. The soul-stirring Prarthana echoed with divine energy, invoking a sense of spirituality in the attendees.



A profound sense of reverence filled the auditorium as Acharya Shriramroop Ji Mishra, accompanied by several Rishikumar boys from Shri Gaurang Ved Vidyalaya, mesmerized the audience with their recitation of the Vedas, the ancient scriptures, with flawless precision. Dressed in traditional costumes and donning sacred ash (Bhasma) on their foreheads, the young Rishikumars transported everyone into a world of divine tranquility. The power of their chanting filled the auditorium, evoking a deep sense of reverence and awe.

Sandip Ji, brimming with enthusiasm, extended a heartfelt welcome to the esteemed guest, Dr. Sanjay Ji Malpani, affectionately known as Sanjay Bhaiya, the national President of Geeta Pariwar. The crowd erupted in applause, acknowledging the immense contribution of Sanjay Ji towards promoting spiritual knowledge and values. Sandip Ji also extended a warm welcome to Pradeep Ji Rathi, recognizing his dedication to the cause.

In a radiant display of unity and reverence, Dr. Sanjay Ji Malpani, Pradeep Ji Rathi, Shobha Ji Mehta, Reva Ji Vishvas, and Akhila Ji came forward to perform the ceremonial Deep Prajvalan,

lighting the sacred lamp. The ethereal glow of the lit lamps illuminated the stage, symbolizing the dispelling of darkness and the triumph of light. A devotional Bangla Geet played softly in the background, further elevating the spiritual ambiance. The stage then came alive with the resonant chants of the Ganapati Prarthana, blending harmoniously with a Bengali Ganesh Geet, invoking the blessings of Shree Ganesha.

The stage was adorned with spiritual significance as Ashok Ji Saboo applied a sacred divine mark (Tilak) on Dr. Sanjay Ji Malpani's forehead, accompanied by Vedic chants. Jawahar Ji Karmakar and Yugalkishor Ji Kothriwal Ji extended their heartfelt welcome, presenting Sanjay Ji with flowers and a shawl. Similarly, Vishwanathi Ji Rahi and Shiv Ratan Ji Mohta expressed their gratitude to Pradeep Ji Rathi with gestures of reverence.

As the program unfolded, several Geeta Vratis, the devotees who had memorized the entire Bhagavad-Gītā, were invited to the stage. Dr. Sanjay Ji Malpani, filled with admiration and respect, personally presented them with certificates, shawls, and medals. The audience applauded with pride, acknowledging the dedication and spiritual prowess of these individuals.

In a heartwarming gesture, P.P. Swami Shri Govind Dev Giri Ji Maharaj sent his blessings via a video message, which was played on the giant screens. His serene voice reverberated through the hall, spreading love and wisdom. His divine presence and heartfelt words, including a single Bengali sentence that delighted everyone, reverberated through the auditorium, infusing the atmosphere with profound spirituality.

With great honor, Dr. Sanjay Ji Malpani inaugurated the Bengali version of Sarala Paṭhanīya Śrīmadbhagavadgītā, a simplified rendition of the sacred text. The audience applauded fervently, recognizing the effort put forth to make the wisdom of the Bhagavad-Gītā accessible to a wider audience.

A delightful program unfolded, showcasing the richness of Indian culture and the universality of its spiritual teachings. Traditional solo dance performances enthralled the audience, their graceful movements telling stories of devotion and transcendence. The chorus singing of "Vande Vishvagurum" uplifted spirits, bringing a sense of collective harmony to the gathering.

A captivating dance drama (Nrutya Natika) unfolded on the stage, depicting various facets of spiritual evolution. The formation of a Yoga-Pyramid mesmerized the audience, symbolizing the ascent of the soul towards enlightenment. Two young boys, with incredible skill and agility, enthralled everyone with their performance on the rhythmic beats of the Shiva Tandav Stotra, capturing the essence of divine energy.



A moment of tranquility followed as the enchanting melodies of Rabindra Sangeet, the songs composed by Rabindranath Tagore, filled the auditorium. The soulful rendition touched the hearts of all, connecting them with the rich cultural heritage of Bengal.



Asha Ji Saboo, a prominent member of Geeta Pariwar, graced the stage and shared the journey and progress of the organization. Her passionate words resonated with the audience, highlighting the collective effort to propagate spiritual knowledge and uplift humanity.

The recitation of the 12th Adhyay (chapter) of the Bhagavad-Gītā transported the audience into the depths of Shree Krishna's divine teachings, with each verse echoing through the air, carrying timeless wisdom.

Pradeep Ji Rathi, took the opportunity to explain the features and benefits of the Ram Pratishtha app, to the eager listeners. His insightful explanation sparked curiosity and inspired many to explore the app, enabling them to deepen their understanding of the Shatkoti Hanuman Chalisa Abhiyan. The audience eagerly embraced the technological advancement, recognizing its potential to enhance their spiritual journey.

Bimal Ji Jain took the podium, and with eloquence and admiration, introduced the luminary Dr. Sanjay Ji Malpani, shedding light on his extraordinary journey and his relentless efforts to promote yoga knowledge and practice across India. In his poignant speech, he recited a poem written by Gurudev Ji himself on Sanjay Ji's 50th birthday, shedding light on the remarkable journey and tireless efforts of Sanjay Ji to promote yoga knowledge and practice in India. Bimal Ji's words revealed captivating anecdotes and lesser-known facts, weaving a tapestry of admiration and inspiration.

The highlight of the event came with Sanjay Bhaiya's captivating two-hour speech, where he unraveled the profound significance of the Bhagavad-Gītā in navigating life's challenges. Drawing inspiration from the teachings of Swami Vivekananda, he emphasized the empowerment of women (Matru Shakti) in leading Geeta Pariwar, fostering dialogue (Samvad), and maintaining a gentle smile while controlling anger. Shri Sanjay Ji emphasized the power of women, acknowledging the pivotal role they played in leading Geeta Pariwar and society as a whole. His words encouraged open dialogue and the importance of listening to others, fostering unity and understanding.



Through compelling anecdotes and wisdom from the Gītā, Sanjay Ji emphasized the importance of practicing its teachings, not merely studying them. He expressed his belief that the entire nation would be inspired by Kolkata's example, for Bengal has

always been a beacon of progress and enlightenment. Stories of courage, justice, and awakening resonated deeply, leaving an indelible impression on the audience. Sanjay Ji's words reverberated through the hearts of the attendees as he reiterated that the entire nation would look to Kolkata for inspiration, acknowledging the city's historical and cultural significance as an exemplar for the rest of the country.

With a gentle smile, Sanjay Ji emphasized the need to maintain a positive outlook, control anger, and transcend desires, drawing parallels to the teachings of the Gītā. He spoke of Bengal's significance, highlighting how the nation would look to Kolkata as an example of spiritual progress and unity. Through captivating stories and examples, he emphasized the importance of ethics and awakening the entire nation.

Amidst his discourse, he narrated the awe-inspiring tale of Hanuman Ji shrinking in front of Surasa Rakshasi and other demons while crossing the sea to Lanka. This story symbolized the need to overcome obstacles and limitations through unwavering faith and devotion.

Sanjay Ji eloquently differentiated between being merely rich and being a "Shriman," a person who embodies purity, divinity, and richness of character. His words touched the hearts of the audience, inspiring them to strive for inner growth and excellence.

As the session opened for questions and answers, Sanjay Bhaiya engaged with the audience during the Q&A session, addressing their queries with wisdom and clarity. He delved into the root causes of sinful behavior, emphasizing the importance of understanding and balancing the three Gunas (qualities) inherited from nature. He highlighted the role of Sattva Guna (the mode of goodness) in avoiding sin, advocating for a continuous connection with Santa Sahitya (religious books) to nurture spiritual growth.



Another question centered around Shree Krishna's promotion of Bhakti Yoga, to which Sanjay Ji affirmed its simplicity and effectiveness as a path to spiritual awakening and devotion.

The topic of the best mantra arose, and Sanjay Ji enlightened the audience, stating that the best mantra is the one imparted by one's Guru. He emphasized the significance of the Guru-disciple relationship and the transformative power of a personalized mantra.

The session concluded with an enlightening demonstration by Sanjay Bhaiya on the correct sitting posture, showcasing the benefits of maintaining a straight back and pressure on the thighs. The audience attentively followed his guidance, realizing the benefits of good posture and deep breathing for overall well-being.

Sanjay Bhaiya then guided everyone through a simple form of Ujjayi Pranayama, the victorious breath, teaching them to sit upright and practice Laghu Ujjayi. The auditorium filled with the soothing sound of regulated breathing, creating a serene atmosphere conducive to inner peace and introspection. The repetition of the mantra "Shri Krishna Sharanam Mam" further deepened the spiritual experience.

Urging the audience to observe a social media fast for one day, Sanjay Bhaiya advocated for the practice of Pratyahara, the withdrawal of senses. The collective agreement to abstain from platforms like WhatsApp, Facebook, and Instagram symbolized a conscious effort to disconnect from external distractions and reconnect with one's inner self.

As Sanjay Ji concluded his profound speech, Jawahar Ji Karmakar extended heartfelt gratitude to everyone present, acknowledging the collective energy that made the event an unforgettable experience.

Rupal ji Didi, radiating warmth and grace, took the stage to share a few concluding words. She invited everyone to join Team 11 and participate in the Shatkoti Hanuman Chalisa Abhiyan, a devotional hymn recitation campaign aimed at reaching the milestone of 100 crore Hanuman Chalisa recitations. Her words echoed with enthusiasm and determination, igniting a renewed sense of purpose within the attendees.



The program reached its crescendo with a soul-stirring prayer, "Yogesham Sachchidanand Vasudevam Vrajapriyam, Dharmasamsthapakam Veeram Krishnam Vande Jagadgurum" (I offer my salutations to Yogesham Sachchidanand Vasudev, dear to Vraja, the establisher of righteousness, the courageous Krishna, the guru of the world). The unified voices of the attendees echoed through the auditorium, symbolizing the power of collective devotion and shared aspirations.

In a world often fraught with chaos and turmoil, events like the Geeta Maitri Milan program remind us of the timeless wisdom and spiritual solace that can be found in ancient texts. Kolkata witnessed a remarkable gathering, where individuals immersed themselves in the teachings of the Bhagavad-Gītā, forging bonds of friendship and unity that transcend all boundaries. As the attendees made their way out of the auditorium, they carried with them a deep sense of spiritual fulfillment and a renewed commitment to embody the teachings of the Bhagavad-Gītā in their daily lives. The Geeta Maitri Milan program in Kolkata had left an indelible mark on their hearts, reminding them of the unity, love, and wisdom that bind humanity together on the path of spiritual evolution.

गीता मैत्री मिलन धुलिया - 2 अप्रैल 2023

https: www.youtube.com live dPnDdBnc7Ok

गीता परिवार सदा ही सक्रिय और क्रियाशील रहा है, इसी के अंतर्गत विभिन्न आयोजन होते रहते हैं। इस शृंखला में इस वर्ष 2 अप्रैल 2022 को धूमिल में पूर्ण वैभव के साथ गीता मैत्री मिलन समारोह आयोजित किया गया।

राधेकृष्ण राधे श्याम के मधुर संगीत के मध्य, गीता परिवार की ओर से सुनीता तांगत दीदी ने आदरणीय संजय जी मालपाणी एवं अतिथियों का सभागार में स्वागत व अभिनंदन किया। पावन योगेश्वर कृष्ण तथा भगवद्गीता की एक प्रति का पूजन एवं दीप प्रज्ज्वलन, श्री संजय जी मालपणी, श्री प्रकाश जी पाठक, गीता परिवार सचिव मनीषा जी, अध्यक्षा सुनीता राठी जी, रेखा जी व मंगला जी द्वारा किया गया।

गोवत्स पूज्य श्री राधाकृष्ण जी महाराज की उपस्थिति में कार्यक्रम और अधिक दिव्यता, भव्यता और गरिमा प्रदान की ओर बढ़ चला।

उन्होंने कहा की श्रद्धेय रामसुख देव जी की परिकल्पना थी कि हर घर गीता हो जो कि गुरुदेव श्री गोविंददेव गिरिजी के संकल्प प्रेरणा से संभव किया जा सका है। भगवद्गीता का स्वरूप विश्व व्यापक है, इसके स्पंदन से संपूर्ण विश्व धन्य हो रहा है, ऐसे भाव उन्होंने व्यक्त किये।

प्रस्तावना के लिए सुनीता दीदी राठी जी को आमंत्रित किया गया, उन्होंने गीता परिवार धुलिया की गतिविधियों, विशेष उपक्रम, कार्यक्रम एवं विविध आयामों से परिचय कराया। इसके पश्चात् आ. संजय भैया जी मालपाणी का स्वागत माल्यार्पण एवं स्मृति चिह्न द्वारा किया गया। सुनीता राठी दीदी ने मुख्य अतिथि श्री प्रकाश जी पाठक भैया का स्वागत किया। गीता परिवार की राष्ट्रीय कार्यकारिणी अध्यक्ष रेखा दीदी मुंद्रा जी का स्वागत मंगला दीदी ने किया।

गीता के अठारह अध्याय, सात सौ श्लोक कंठस्थ करने वाले साधकों का संजय भैया ने यथोचित सत्कार किया। रेखा मनोहर बरहाटे, कल्पना काबरा, नीलेश जी बेनी, राम बागुल जी को गीतव्रती होने का प्रमाण पत्र एवं मैडल प्रदान किया गया। शिल्पा जी काबरा जिन्होंने प्रथम बैच में गीताव्रती होने का गौरव पाया, उनका भी सम्मान किया गया।

रेखा दीदी ने जन समुदाय से गीता परिवार का संक्षिप्त परिचय करवाया।

शतकोटि हनुमान चालीसा यज्ञ आहुति के लिए किरण दीदी मुंद्रा जी द्वारा हनुमान चालीसा का पाठ किया गया।

शालिनी दीदी ने मुख्य अतिथि श्री प्रकाश जी पाठक का परिचय दिया। उन्होंने बताया वे चालीस वर्षों से CA के





अभ्यास के साथ अनेक शैक्षिक संस्थाओं से जुड़े हैं, बहुत अच्छे वक्ता हैं एवं विविध पुरस्कारों से सम्मानित हैं।

श्री पाठक जी ने अपने संबोधन में कहा की गीता किसी युग, किसी कालखंड के लिए नहीं अपितु परिपूर्ण ज्ञान प्रदान करने वाली ईश्वर की मुखवाणी है। हमारे जीवन के भीतर के अर्जुन के सारे प्रश्नो के उत्तर इसमें निहित हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में बल, बुद्धि एवं विनय का समावेश हो, यही प्रार्थना है।

मार्गदर्शक डॉ संजय जी मालपाणी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी से सबको मंत्र मुग्ध कर दिया। उन्होंने गीता परिवार की यात्रा को स्मरण करते हुए बताया कि एक ज़ूम मीटिंग से शुरू हुई यात्रा अब विश्व के 147 देशों के हज़ारों गीता प्रेमियों को लाभान्वित कर रही है।

उन्होंने ने बताया गीता दिव्य दृष्टि की ओर ले जाने का प्रयास है। काम, क्रोध, लोभ तीन नरक के द्वार हैं, सीधा बैठना सीखो, आत्म संयमयोग सीखो, श्वास को एक समान करो। मन बुद्धि का समन्वय आवश्यक है, जहाँ मन बुद्धि, कर्म पर समर्पित हो, वहाँ यशस्विता भगवान् पीछे पीछे लेकर आते हैं। कार्य से निष्ठा, कार्य से प्रीति करें। स्नेह दान, श्रेय दान, समय दान, कुछ योग दान करें। उन्होंने कहा हर पीड़ा एक परीक्षा होती है, हर दुःख, संघर्ष परीक्षा समर्थ बनाती है। ईश्वर की इच्छा को सहज स्वीकार करते हुए प्रसन्न रहना चाहिए। संजय जी मालपाणी जी ने इतने जटिल व गूढ़ विषय को अत्यंत सरल भाषा में प्रस्तुत कर सबको धन्य किया।

अंत में उषा काबरा दीदी ने सम्मानित अतिथि गण, सभागार में उपस्थित गीता परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कार्यक्रम की सफलता में सहभागी रहे सभी प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष भाई बहनों का भी आभार व्यक्त किया।







Geeta Maitri Milan, Hyderabad - 30 th April 2023

Like every other Hindu occasion starts, this event too started with Ganesh Vandana by anchor didi, Sajja Pratyusha didi. Geeta Maitri Milan as the name suggests is the platform to meet all the participants and Geeta sevis associated with online Geeta classes since 2020. This time the event was organised in Hyderabad on 30 th April.

The event started with humble beginnings by Geeta Pariwar's National Director, Dr. Shri Sanjay Malpani bhaiya. His head was lovingly smeared with the Kumkum tilak which is the symbol of auspiciousness.

Men in white shirts, white dhotis with white golden border shawls on their shoulders while women in traditional sarees added customary touch to the event. The background traditional drum beats mesmerised the show.

The crowd reiterated "Krishnam vande Jagadgurum" slogans and bhajans simultaneously. Deep Prajwalan was done.

Madhurashtakam and Dashavataram were presented enchantedly in a traditional Indian dance form, Bharatanatyam by some dancers embellished ethnically. Later their teacher and they were all honoured with Krishna idol for their charming performance. The one hour was so engrossing so far.

The Dias was set next with many important following speakers:-

- ★ Shrimati Sunita Dharak didi, bhagyanagar head
- ★ Shrimati Shraddha Raodeo didi, Experienced trainer
- ★ Shree Dr Sanjay bhaiya, National Director
- ★ Shree Harinarayan vyas ji, Madhyanchal head
- ★ Shree Arun ji, Telugu trainer
- ★ Sushri Rupal didi, Learngeeta, Program Coordinator

Sanjay bhaiya was honoured with a beautiful brocade shawl and alluring Krishna idol. Later Hari nyas bhaiya greeted the audience with humble prostrations to param pujya Swami Govind dev Guruji maharaj ji. In 1986 , Geeta Pariwaar came into being in Sangamner with Swamiji and late shree Omkar Nath ji Malpani Ji's continuous selfless efforts.

Mission statement "Geeta padhe padhaye aur jeevan mein laye" is worth remembering at that time.

हर घर गीता, हर कर गीता - "Geeta in every home, Geeta in Every hand". Let's come together with the motto of Geeta Pariwar and gift lifetime cherishable Geeta classes to our family, friends & acquaintances. He briefed about various offline works going since last 37 years in the form of following endeavours like weekly bal sanskar sessions, where children learn many cultural activities, yoga kendras, sanskar shivir, cultural events in communities and schools, offline Geeta classes. Many yearly events are conducted like Geeta jayanti, Vishwabandhutwa diwas

(bday of swami Vivekanand Ji), Krishnashtami etc. Some 5 yearly events like Sanskar festival, Yoga festival, Geeta festival were also organised. Special sessions are also done by Sanjay Bhaiya. Two words for mother and father, Nation builders, National shivir tejoham, Sanskar combination etc.

Covid period started online classes in the following formats -



- ★ Learngeeta
- ★ Shri Vishnunaamastotram
- ★ Ramaraksha
- ★ E - sanskaar vatika

Learn geeta highlights were six lakh plus participants and more than 700 Geeta vratis. Classes in 13 languages in 18 time slots starting from morning 5 am till 2 am (ist). More than 100 books have been published so far.

Some of the outstanding Achievements of Geeta Pariwar are -



1. 75 Crore surya namaskar Guinness book record set.
2. Geeta festival with 35,000.
3. Yoga festival with 12,500.
4. Golden book of records set for online Learngeeta classes.
5. Prime minister, Mr Modi ji's hearty appreciation is a proud moment for all Geeta pariwar members.

Rupal didi was also felicitated with the shawl, Krishna idol and tulsi plant. Smt. Neha Vyas didi venerated Sanjay bhaiya with a poem. Sanjay bhaiya began his online journey's experience with Rupal didi's call and his many doubts regarding Sanskrit grammar and pronunciation. Link creation and sharing for their first online WhatsApp group. 250 people were the max people allowed in a group. 10 groups were created on the first day. Since then no looking back. Bhaiya took us all to his memory lane to describe the details of initial trainers having difficulty while operating zoom and thus TA post was created. Soon, OGC became a family uniting activity. L1 with 2500 people was accomplished. There was a steady increase in the joining of new members. It is always a team effort with blessings from Swamiji which helped to achieve this feat. He exemplified Shraddha didi's efforts to teach jail candidates and insisted all to memorise Geeta chapters.

He motivated all to be courageous at all times. Burn our negative tendencies with regular exposure to Geeta and Krishna's sayings. "nirvair, निर्वैर" is an important attribute to be learnt. No one can have a sound sleep keeping hatred in heart. He reiterated the fact of learning Geeta from a young age and not just as a common mistakenly notion of a scripture to be learned only in old age. Courage has to be shown always.He gave an important tip to deal with failures. If one door is shut, many other doors are opened. Just keep looking and trying.

Dharma definition is also given beautifully as the start and end letter of full Geeta which is otherwise misunderstood completely in today's context of Hindu, Muslim and Christian.

Whatever we do as per our inner nature with admiration, doing our duties in the right manner is our Dharma. In the first chapter, not a single word has been spoken by Shri Krishna . He kept listening patiently to Arjuna which is the starting point of any conversation. We should be

inspired to listen in our family lives. Second chapter onwards Krishna started speaking and third chapter He's describing acute acidity and depression symptoms. Sit beside Lord's feet to get knowledge. Our smile is a true depiction of our love towards Krishna. God helps those where three times family members recite Hanuman Chalisa and then take their dinner. Change your mindset to transform deeds into karma yoga.

Anger, greed and lust are your biggest enemies and lead you to hell. Then you tend to be unconscious and blabber. So you need to control. Reading Bhagwad Geeta helps us tremendously. The choice is mine. It's between B (birth) and D (death). Sanjay bhaiya made everyone play a clap game with 1,2,3. Bhagvad-Geeta changes your mental conditioning. Habits can be changed by removing H, A, B, I, T one by one. Determination is required to tread the Geeta path.

We change ourselves, world is changed; We change ourselves and the era has changed.

QR code led form was introduced to form team 11. Behaviour should be changed with powerful thoughts. Donate your blessings, precious time, credit of the work, surplus items religiously to the noble cause.

Later, Geetavratis were honoured by Swamiji's signed certificates and medals. Everyone posed smiling proudly for a group pic.

Many including Santosh Somani didi and VVLN sarma bhaiya were felicitated.

Last but not the least, many curious questions were answered by Sanjay bhaiya very aptly with following insights -

- ★ No expectations of the desired results lead a student to perform stress less.
- ★ Many sorrows in your life have a purpose. Never accuse God for anything.
- ★ Geeta can be read in both death ceremony and any other ceremonies because it's the purest form of a scripture.
- ★ Love all.

Shraddha didi, Pratyusha didi, Riya didi and Neha didi were honoured with a token of blessings from Swamiji in the form of a shawl for their extraordinary contribution of PDF creation in Telugu, organising the Maitri day.

The event was thoroughly appreciated and enjoyed by all.

Geeta Pariwar has become a symbol of love and devotion. May Krishna krypa flows abundantly always.

गीता मैत्री मिलन गुजरात, 18 जून 2023

https: www.youtube.com live 4vTyQwbhBfI



लर्नगीता के अन्तर्गत गीता गुजरात के स्वयं सेवकों और गीता साधकों व प्रेमियों की प्रात्यक्षिक भेंट 18 जून को गुजरात के अहमदाबाद में सम्पन्न हुई। गीताजी में श्रद्धा रखने वालों इन सभी गीताप्रेमियों का मैत्री मिलन हुआ।

गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं लर्नगीता कार्यक्रम के प्रोग्राम डायरेक्टर गीता विशारद डॉ. आशू जी गोयल के साथ सुश्री ज्योति शुक्ला, सुश्री रूपल शुक्ला, सुश्री कविता वर्मा ये तीनों ही प्रोग्राम कॉर्डिनेटर दीदियों और वरिष्ठ गीता सेवियों सहित सुंदर दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। लोक गीत नृत्य "श्री कृष्ण शरणं मम" की मधुर ध्वनि पर पारंपरिक कथक प्रस्तुति व बासुरी धुन प्रस्तुति अति रमणीय थी।

आशू भैया और त्रिवेणी संगम (तीनो दीदियों) का यथोचित सम्मान - माल्यार्पण और शॉल पहना कर हुआ। समूह संचालक डिपार्टमेंट की प्रमुख कार्यकर्त्ता श्रीमती कविता तापडिया दीदी ने गीता परिवार के अनेकों उपक्रमों की जानकारी उपलब्ध कराई। उन्होंने बताया की स्वामीजी द्वारा पंचसूत्री न सिर्फ़ 159 देशों तक पहुँची है बल्कि कारागृहों में भी गीता का प्रकाश फैल रहा है। श्री दिनेश भाई अखानी, मीनाक्षी शाह दीदी, पूर्वी दीदी और कविता दीदी को आशू भैया के साथ मंच पर विराजमान होने का अवसर मिला। दिनेश भैया ने आ. आशू भैया को मार्ग- दर्शन हेतु मंच पर आमंत्रित किया।

आशू भैया ने आह्लादित होते हुए बतलाया गीता परिवार द्वारा बाल-संस्कार और गीता प्रचार गत 36 वर्षों से हो रहा हैं। 2018 में मुंबई में राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन समारोह में परम पूज्य स्वामीजी द्वारा एक स्वाभाविक प्रश्न पूछे जाने पर कि कौन गीता कंठस्थ करेगा, इस पर संजय भैया और आशू भैया को नया लक्ष्य मिला। कड़ी मेहनत से संजय भैया प्रथम गीताव्रती हुए। 2019 के गीता जयंती उत्सव में 72 गीताव्रती हुए। आगे कोरोना काल में सामान्य गतिविधियाँ ठप्प हो गई। तभी ऑनलाइन गीता संथा वर्ग चलाने की परिकल्पना हुई और इस प्रकल्प का शुभारम्भ हुआ। पहली सैम्पल क्लास फरवरी से प्रारम्भ होकर जून 2020 तक आयोजित हुई। तत्पश्चात् 2500 लोगों का प्रथम वर्ग आरंभ हुआ। जब लर्नगीता का यह उपक्रम आरंभ हुआ तो उन्होंने देखा दक्षिण, उत्तर, काशी, महाराष्ट्र, उज्जैन आदि में उच्चारण भिन्न थे। गीता परिवार की अनुसंधान समिति ने नियमों का शोधन किया। 57000 साधको के साथ रजत बैच जून 2023 में भगवद्कृपा से चल रहा है। आज तक साढ़े तीन लाख ज़ूम कक्षाएँ हो चुकीं हैं। एक आंदोलन की तरह सब गीता-सेवी व प्रेमी जुड़ गये। 5000 से अधिक स्वयं सेवकों को भगवत्कृपा से गीता- भक्ति

की प्रेरणा मिली। आपस में संवाद की अपेक्षा भीतर मन से संवाद करें। जैसे चित्रगुप्त के न्यायालय में झूठी गवाही नहीं चलती वैसे ही अपने चित्त का आँकलन करे। 6 विषयों पर अपनेआप को अंक दे। सभी विषय 100 अंक के हैं।

निम्नलिखित विषय है :-

1) ज्ञान
2) वित्त
3) स्वास्थ्य
4) परिवार
5) आध्यात्मिक
6) अन्य



सर्वश्रेष्ठ पांच की गणना की जानी चाहिए।

33 प्रतिशत से ऊपर आप उत्तीर्ण हैं।

हर विषय में 5 प्रश्न हैं, हर एक 20 अंक का।

ज्ञान - सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान है। जिसने भूत का ज्ञान कर लिया, वही अपने भविष्य का निर्धारण कर सकते हैं।

- ★ शास्त्रों का नियमित अध्ययन।
- ★ किसी एक कला में प्रवीणता।
- ★ कुछ अच्छा सुनने लिखने का नियम।
- ★ व्यावहारिक ज्ञान।
- ★ नया कार्य सीखने का प्रयास।



वित्त - स्वावलंबी रहें।

- ★ क़र्ज़ न लें।
- ★ खर्च न बढ़ायें।
- ★ संयम से खर्च करे।
- ★ न्याययुक्त धनार्जन।
- ★ दुख देकर धन न कमायें।
- ★ वर्तमान और भविष्य का धनलक्ष्य निर्धारण।

स्वास्थ्य - मानव जीवन में सुख के ढाई स्रोत हैं-गाढ़ी नींद ,कोई दवाई का सेवन नहीं, अन्य जैसे परिवार, भौतिक लाभ। पहले दो को ज़्यादा महत्व देना चाहिए ।

"हितभुक्, मितभुक् और ऋतभुक्" भोजन करें।

प्रत्येक अंग से काम लें। नियमित योग, प्राणायाम, टहलना, तैरना इत्यादि।

गीता पढ़ने वाले साधक अविकम्प योग में रहें अर्थात् शीघ्रता से विचलित नहीं हों ।

दवा से ज़्यादा परहेज़ पर ध्यान दें।

वजन का ध्यान रखें।

सदा प्रसन्न चित्त रहते हुए मुस्कुराते रहे।



परिवार - सफल जीवन के लिए त्याग, लचीलापन और अनुकूलन बहुत आवश्यक हैं।

- ★ बड़ों को प्रसन्न रखना।
- ★ बच्चों को संरक्षण देना।
- ★ पति पत्नी मित्रवत् रहें।
- ★ पहले नाता फिर रिश्ता
- ★ समाज और मित्र

आध्यात्मिक -

- ★ स्वयं की आराधना
- ★ धर्म प्रचार
- ★ देश सेवा
- ★ समाज सेवा
- ★ Be simple, Be sample.



अन्य - कोई अन्य विषयों में आप विशेषज्ञ हो सकते हैं।

कुल अंक - अपनी और अपने से बात करके 250 और उससे ऊपर अंक पाने का प्रयास करें।

टीम 11 ऑफ़लाइन सेवा दे सकते है। इसमें सेवा देने हेतु फॉर्म भरे।

आशू भैया द्वारा कई प्रश्नों के समाधान के पश्चात् गीताव्रतियों का सम्मान हुआ। कुल 63 गीताव्रतियों में से 37 उपस्थित जनों को सुवर्ण पदक, शॉल और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

1500 साधक इस गीता मैत्री मैत्रीमिलन में सम्मिलित हुए। सबने प्रसादी ग्रहण कर आशू भैया के आशीर्वचनों का लाभ उठाया। कृष्ण कृपा से हर्षोल्लास के साथ यह समारोह संपन्न हुआ। कृष्ण कृपा की यह धारा ऐसे ही अनवरत बहती रहे ऐसी प्रार्थना।

आओ गीता खेलें

Quiz

1) किस महाकाव्य में हनुमान को सबसे पहले एक पात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है?

a) रामायण

b) महाभारत

c) भगवद्गीता

d) विष्णु पुराण

2. हनुमान के पिता का क्या नाम है ?

a) केसरी

b) वायु

c) इंद्र

d) वरुण

3. हनुमान जिस वानर साम्राज्य में रहते थे उसका क्या नाम है?

a) किष्किंधा

b) अयोध्या

c) मथुरा

d) द्वारका

4. उस राक्षस राजा का क्या नाम है जिसने सीता का अपहरण कर लिया ?

a) रावण

b) हिरण्यकशिपु

c) कुंभकर्ण

d) शिशुपाल

5. रामायण में लक्ष्मण को ठीक करने के लिए हनुमान द्वारा लाई गई जड़ी-बूटी का क्या नाम है?

a) संजीवनी

b) तुलसी

c) नीम

d) ब्राह्मी

6. उस स्थान का क्या नाम है जहां हनुमान पहली बार राम और उनके भाई लक्ष्मण से मिले थे?

a) लंका

b) अयोध्या

c) किष्किंधा

d) पंचवटी

7. हनुमान किस देवता के अवतार (अवतार) माने जाते हैं?

a) शिव

b) विष्णु

c) ब्रह्मा

d) इंद्र

8. उस राक्षस का नाम क्या है जिसने राम और लक्ष्मण को सीता से दूर करने के लिए हिरण का रूप धारण किया था?

a) मारीच

b) कबंध

c) कुंभकर्ण

d) रावण



उत्तर:

1: रामायण | 2: केसरी | 3: किष्किन्धा | 4: रावण
5: संजीवनी | 6: पंचवटी | 7: शिव | 8: मारीच

Scrambled Shlokas

Words in following shlokas are misplaced. Can you correct them?

S.N.	Scrambled Shloka
1	देवर्षीणां कपिलो चित्ररथः सिद्धानां मुनिः अश्वत्थः च नारदः सर्ववृक्षाणां गन्धर्वाणां
2	न संन्यसनादेव सिद्धिं पुरुषोऽश्नुते कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं च न समधिगच्छति
3	मम प्रपद्यन्ते भजाम्यहम् पार्थ तांस्तथैव वर्त्मानुवर्तन्ते सर्वशः ये मां मनुष्याः यथा
4	व्रज मामेकं मा शुचः सर्वपापेभ्यो सर्वधर्मान्परित्यज्य मोक्षयिष्यामि त्वा शरणं अहं
5	महात्मानः परमां मामुपेत्य संसिद्धिं पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् नाप्नुवन्ति गताः
6	इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे ह्यस्य तयोर्न वशमागच्छेत्तौ व्यवस्थितौ रागद्वेषौ परिपन्थिनौ
7	च संन्यासस्य वेदितुम् पृथक्केशिनिषूदन हृषीकेश महाबाहो त्यागस्य तत्त्वमिच्छामि
8	प्राणं तथापरे प्राणेऽपानं रुद्ध्वा अपाने प्राणापानगती प्राणायामपरायणाः जुह्वति
9	सनातनस्त्वं त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता निधानम् परमं त्वमस्य विश्वस्य वेदितव्यं त्वमक्षरं पुरुषो मतो मे परं
10	त्वात्मैव हि मामेवानुत्तमां मतम् स ज्ञानी उदाराः मे युक्तात्मा एवैते गतिम् सर्व आस्थितः
11	व्यवस्थितान्दृष्ट्वा प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते पाण्डवः धनुरुद्यम्य अथ धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः

Correct Shlokas

SN	Correct Shloka
1	अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः
2	न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति
3	ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः
4	सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः
5	मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः
6	इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ
7	संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम् त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन
8	अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः
9	त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्व स्य परं निधानम् त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे
10	उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्
11	अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः



Search Words – Hanuman Chalisa



Following table contains 34 names mentioned in Hanuman Chalisa. Can you find all of them?

जा	त	सी	न	र	ज	ग	बं	द	न	र	म	सं	ह	श्री
न	ज	म	बि	घु	कं	भा	नू	ता	त	म	सु	क	सी	रा
की	ज	ह	ति	प	र	घु	बी	र	ति	गौ	ति	र	ता	ब्र
जा	गौ	द्या	रा	ति	र	ल	ख	न	प	रा	बि	सु	रा	ह्मा
म	री	घु	म	सी	घु	कु	ना	न	अं	म	द्या	व	म	र
प	सा	बे	दू	नु	ब	बे	ग्री	ज	ज	अ	वा	न	री	सु
बि	सी	ता	त	न	र	र	सी	तु	नि	रा	न	द्या	सी	ग्री
श्री	प	ति	र	ब	री	म	प	ल	पु	दा	बि	न	के	व
व	र	ब	ज	रं	गी	रा	व	सी	त्र	मा	प	नि	स	न
श्री	प	ति	ह	ब	अं	क्र	न	दा	र	र	ज	न	री	ज
सी	ता	बि	सा	र	द	र	सु	सी	बि	क्र	म	र	नं	सु
स	ह	स	ब	द	न	सी	त	र	व	ता	र	बे	द	सु
ति	ह	नु	मा	न	न	ह्मा	व	बि	भी	ष	न	सा	न	र
ता	प	व	न	कु	मा	र	तु	भ	र	त	ति	न	घु	त
ना	र	द	सी	रा	म	चं	द्र	रा	म	म	दा	ल	ता	र

Search Words – hanuman Chalisa Solution

जा	त	सी	न	र	ज	ग	बं	द	न	र	म	सं	ह	श्री
न	ज	म	बि	घु	कं	भा	नू	ता	त	म	सु	क	सी	रा
की	ज	ह	ति	प	र	घु	बी	र	ति	गौ	ति	र	ता	ब्र
जा	गौ	द्या	रा	ति	र	ल	ख	न	प	रा	बि	सु	रा	ह्मा
म	री	घु	म	सी	घु	कु	ना	न	अं	म	द्या	व	म	र
प	सा	बे	दू	नु	ब	बे	ग्री	ज	ज	अ	वा	न	री	सु
बि	सी	ता	त	न	र	र	सी	तु	नि	रा	न	द्या	सी	ग्री
श्री	प	ति	र	ब	री	म	प	ल	पु	दा	बि	न	के	व
व	र	ब	ज	रं	गी	रा	व	सी	त्र	मा	प	नि	स	न
श्री	प	ति	ह	ब	अं	क्र	न	दा	र	र	ज	न	री	ज
सी	ता	बि	सा	र	द	र	सु	सी	बि	क्र	म	र	नं	सु
स	ह	स	ब	द	न	सी	त	र	व	ता	र	बे	द	सु
ति	ह	नु	मा	न	न	ह्मा	व	बि	भी	ष	न	सा	न	र
ता	प	व	न	कु	मा	र	तु	भ	र	त	ति	न	घु	त
ना	र	द	सी	रा	म	चं	द्र	रा	म	म	दा	ल	ता	र

Volunteer's Brigade

PATRON
P. P. SWAMI JI SHRI GOVINDDEV GIRI JI MAHARAJ

CONCEPT CHIEF
Dr. Sanjay Malpani

PROGRAM DIRECTOR
Dr.Ashu Goyal

PRINCIPAL TRAINER
Sau. Suvarna Malpani, Sangamner

PROGRAM COORDINATORS
Ms. Jyoti Shukla
Ms. Rupal Shukla
Ms. Kavita Verma

TRAINER'S TRAINING DEPARTMENT
Smt. Vijaya Godbole, Dehradun
Shri Shrinivas Warnekar, Nagpur
Sau. Vandana Warnekar, Nagpur
Sau. Anita Sangamnerkar, Ayodhya

IT & SOFTWARE DEPARTMENT
Shri Pradeep Rathi, Pune
Shri Pankaj Agarwal, Lucknow
Shri Ashish Tiwari, Chitrakoot
Shri Vednath Mathur, Delhi
Shri Gagan Holani, Mumbai
Shri Vivek Sinha, USA
Smt. Minaxi Shah, Ahmedabad
Shri Manish Tomar, Morana
Shri Mitesh Khatri, Bikaner

TRAINER MANAGEMENT DEPARTMENT
Smt. Shruti Nayak, Mumbai
Smt. Manisha Bardhan, Lucknow
Smt. Anita Ravishankar, Pune
Smt. Sheetal Salke, Pune
Smt. Anuja Lahoti, Dubai
Smt. Ruchika Chaugaonkar, Dharamshala
Shri Meennath Narayan Lakhote, Bhandara

CREATIVE WRITING DEPARTMENT
Smt. Usha Prasad, Bangalore
Shri Bimal Jain, Kolkata
Smt. Shradhha Mishra, Pune (Hindi)
Smt. Shruti Sud, Gurgaon (English)
Shri Mandar Barve, Pune (Marathi)
Kum. Poushali Ghosh, Bangalore (Bengali)
Smt. Mala Narayan, Bangalore (Malayalam)
Shri Valiveti Venkata Lakshmi Narayana Sharma, Hyderabad (Telugu)
Smt. Rachita Mishra, Bhubaneswar (Odia)
Smt. Shivkamy Rajgopalan, Bengaluru (Mumbai)
Shri Manjunath Ji, Bangalore (Kannada)
Smt. Jigisha Shah, Nagpur (Gujarati)

TECHNICAL ASSISTANT DEPARTMENT
Shri Suraj Sharma, UAE
Smt. Vijaya Muchhal, USA
Shri Dinesh Pandita, Delhi
Shri Narendra Kotak, Pune
Shri Suresh Ghag,Vadodara
Smt. Alaknanda Kulkarni, Pune
Smt. Surekha Mittal,Mumbai
Smt. Manisha Bhardwaj, Abu Road
Smt. Sneha Srinivas,Chennai
Shri Nitin Bhutra,Erode Tamilnadu
Smt. Abha Agarwal ,Mumbai
Smt. Sheetal Bharadiya, Anjar, Gujarat
Shri Vidyanand Wagh, USA

LITERATURE PUBLICATION DEPARTMENT
Smt. Pooja Goyal, Lucknow (Compilation)
Smt. Pratyusha Sajja, Hyderabad (Telugu)
Shri Suresh Kumbhar, Ugar BK (Kannada)
Smt. Shruthi Kadagaonkar, Pune (Kannada)
Smt. Anupama Patil, Goa (Kannada)
Shri Gopalratnam, Tiruchirapalli (Tamil)
Smt. Banusuja R. krishnan, Los Angeles(Tamil)
Shri Swaminathan, Nasik (Tamil)
Smt. Ramesh Kumar Rateria, Calcutta (Bangla)
Shri Pramod Barik, Malkangiri (Odia)
Smt. Akhila Ekkatiri, Kozhikode (Malayalam)
Smt. Rani Ramdas, USA (Malayalam)
Ms. Hiral Patel, Satara (Gujarati)
Smt. Tarun Gogoi, Dibrugarh (Assamese)
Shri Narayan Shete, Coimbatore (Grammar)

Volunteer's Brigade

GROUP COORDINATORS DEPARTMENT
Smt. Kavita Taparia, Ahmedabad
Smt. Vini Maheshwari, Mumbai
Smt. Nisha Keny, Mumbai
Smt. Smita Mundada, Mumbai
Smt. Saroj Saboo, Hyderabad
Shri. Hanuman Prasad Baheti, Aurangabad
Shri Sunil Kapdi, Mumbai

EXAMINATION DEPARTMENT
Shri Arun Taparia, Lakhimpur Khiri

NEWSLETTER DEPARTMENT
Shri Sonali Kala, Pune
Shri Sunil Kapdi, Mumbai
Smt. Jayshri Trivedi, Mumbai

SOCIAL MEDIA DEPARTMENT
Shri Varun Pathak, Pune
Smt. Chandana Pandey, Greater Noida
Shri Abhishek Gupta

LG DISCIPLINARY COMMITEE
Shri Vikas Vaidya, Pune
Smt. Priyanka Havelia, Delhi
Smt. Nisha Keny, Mumbai
Shri Devendra Pathak, Khanrgone

BACK OFFICE DEPARTMENT
Shri Datta Bhandurge, Sangamner
Ms. Vaishnavi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Janhvi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Drishti Yadav, Lucknow
Ms. Shalini Kashyap, Lucknow
Ms. Manvi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Tamanna Singh, Lucknow
Ms. Payal Sonkar, Lucknow
Ms. Mansi Sonkar, Lucknow
Ms. Prachi Nigam, Lucknow
Shri Tushar Gupta, Lucknow

TELE, CHAT & MAIL HELPLINE DEPT.
Shri Siddharth Havelia, Delhi
Smt. Sarika Dhaundiyal, Delhi
Ms. Kajal Srivastava, Delhi
Shri Kunal Arora, Delhi
Ms. Yogyalakshmi, Delhi
Shri Aryan Gupta, Delhi

GROUP REG. DEPARTMENT
Smt. Anshu Garg, Delhi
Shri Munish Agarwal, Jalandar

SCHOOL REG. DEPARTMENT
Shri Meennath Narayan Lakhote, Bhandara
Smt.Dakshina Malladi, Mumbai

JAIL REG. DEPARTMENT
Shri Santosh Singh, Indore
Shri Rajeev Gupta, Jaipur
Shri Umesh Sharma, Mumbai (NHR3 head)

OFFLINE CLASS COORDINATION DEPARTMENT
Smt. Namita Mehra, Mumbai

CLASS MONITERING TEAM
Smt. Shraddha Raodeo, Hyderabad
Smt. VidyaPathrikar, Pune
Smt. Shashi Tripathi, Ujjain
Smt. Upasana Zanzote, Nagpur
Smt. Manisha Raghunath Inamdar, Vadodara

CHINTANIKA COORDINATORS
Shri Harinarayan Vyas, Hyderabad
Smt. Kavita Mandhane, Parbhani
Smt. Nirmala Maru, Kota

GEETA PRACHARAK COORDINATORS
Shri Vimal Goenka, Akola
Shri Geet Govind Sahu, Jagdalpur
Shri Suresh Dadhich, Mumbai

ADMISSION DEPARTMENT
Smt. Minal Dani, Bangalore
Ms. Bhagyashri Pawnikar, Chhindwara
Shri Bhavnesh Gandhi, Mumbai

CALLING & MIGRATION DEPARTMENT
Smt. Yogita Khinda, Mumbai
Shri Abhijit Joshi, Vadodara
Smt. Mrudula Asawa, Pune
Shri Vedang Rajhans, Nagpur

गीताव्रती


Smt. Aarti Sunil Joshi


Smt. Akansha Aggarwal


Shri Akhil Raghunath Anaspure


Smt. Akshata Nayak



Amita Somani


Sau Amruta Yogesh Sangvikar


Ms Anandi Nilesh Bhuyar


Shri Anantrao Jawale


Shri Aniket Shridhara Chiploonkar


Shri Anil Prabhakar Bandishti


Sau Anita Atul Pawar


Smt. Anita Vimal Soni


Sau Anjali Chapalgaonkar


Sau Anjali Dhananjay Kulkarni


Sau Aparna Arunrao Dharmadhikari


Sau Archana B Patankar


Sau Archana Gajendra Jog


Sau Archana Sudhir Mandhane


Sau Archana Sunil Sharma


Shri Arjun Rao


Shri Ashok Kumar Darjee


Shri Ashok Kumar Sharma


Smt. Ashwini Kelkar


Ms Atreyi Kaul


Ms Babita Mandhana


Sau Bhagyashree Atul Malu


Sau Bhagyashree Dilip Belgudri


Sau Bhagyashri Subhash Sane


Smt. Bharathi C Prabhu


Smt. Bhurkay Hemalata

गीताव्रती


Shri Brajesh Kumar Tripathi


Shri C Satyanarayana Sarma


Ms Chaitali Sunil Kale


Shri Chandan Charchit Padhy


Smt. Chandralekha


Sau Charulata Vilas Jawarkar


Sau Chhaya Surendra Rashinkar


Smt. Chitra Dikshit


Smt. D Sri Lakshmi


Shri Dattatreya Ramesh Choudeker


Smt. Deepa D Kamath


Sau Deshmukh Suvarna Shrikrishna

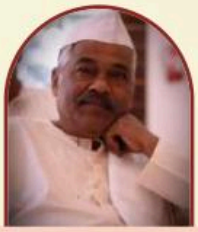

Shri Dinesh chandra Parsottam Bhatt


Sau Dr Alka Hayatnagarkar


Smt. Dr Anita Ramesh Thakur



Sau Dr Usha Diwakar Gore


Shri Dr. Damodar Ramkrishna Kulkarni


Shri Durvankur Prashant Pande


Shri Ganesh Kisanrao Ghode


Smt. Gita Virendra Patwari


Smt. Guthula Jhansi Lakshmi


Smt. Hareti Dumpala


Ms Haripriya Yogesh Khandelwal


Sau Hema Badrinarayan Laddha


Ms Hiranya Shukla


Smt. Indiradevi Garapati


Ms Ira Pandit


Ms Ishita Vasanth Achar


Smt. Jagruti Thaker


Ms Jayashree Deviprasad Bhatt

गीताव्रती


Sau Jayashree Jayant Joshi


Smt. Jayshreeben Vaishnav


Shri Jishnu Seshadri


Sau Jyotsna Sadanand Ranade


Smt. Kala Balakrishna Kulkarni


Sau Kalpana Bajarang Nakil


Sau Kalpana Pradyumnakumar Gosavi


Sau Kalpana Vijay Daga


Shri Kamalsinh Chauhan


Sau Kanchan Sunil Pathak


Shri Kartik Banbihari Mandal


Ms Kavya Bhushan


Sau Kiran Ashok Kalbhore


Sau Kiran Dalsukh Mundra


Shri Kulkarni Arun Digamber


Ms Lakshmi Deogade


Smt. Lakshmi Vempati


Sau Madhavi Prasad Nilangekar


Smt. Madhu Patwari


Shri Madhukar Shankar Jawale


Shri Madhukar Suryawanshi


Sau Madhuri Ashok Tadurwar


Sau Madhuri Kali


Sau Maitreyee Tambe


Smt. Malabika Padhy


Smt. Mamta Hitesh Masrani


Smt. Mandakini Subhash Shinde


Smt. Manisha Bardhan


Smt. Manisha Jayesh Upadhyay


Smt. Meenu Jhawar

गीताव्रती


Smt. Meera Agarwal


Sau Megha Makarand Mahajan


Sau Megha Sunil Dube


Smt. Minal M Dani



Mohan Patil


Smt. Monika Bagdi



Mrudula Hanumant Badave


Sau Mugdha Mayur Koulavkar


Smt. Nandini Kulkarni


Sau Neela Chaitanya Thakar


Smt. Nehaben Tushartbhai Joshi


Smt. Netra K Bhat


Shri Nilesh Beniram Bagul



Nilima Agashe


Amita Somani


Smt. Padmaja Satish Bhandekkar


Smt. Padmavathi Uppuluri


Smt. Pallavi Bhatt


Sau Poonam Subhash Gujarathi


Shri Prashant Eknath Mujumdar


Sau Pratibha Diwakar Mande


Smt. Pratibha Sharma


Sau Prema Bhat


Sau Prema Nade


Smt. Puja Ramawat


Smt. Punita Goel


Sau Rachna Rajan Joshi


Ragini Vijay Didolkar


Sau Rajani Bharat Belhekar


Smt. Rajani Pramod Gokhale

गीताव्रती



Shri Rajesh Arora



Shri Rajnikant Shukla



Rekhi Mittal



Shri Ramakrishna Prasanna



Shri Rambali Yadav



Smt. Rekha Mahawar



Ms Rekha Manohar Barhate



Sau Rekha Rajendra Parkar



Smt. Renu Agarwal



Smt. Revathi Sridhar



Sau Rohini Rajendra Parakh



Sau Sandhya Shriniwas Muley



Ms Sanika Sanket Rahatade



Sau Sanjaya Gunvant Kulkarni



Shri Santosh Kumar Gupta



Shri Ramjibhai Patel



Sau Ranjana R Bhat



Sau Ranjana Wani



Smt. Rashmi Verma



Sarita Choudhary



Smt. Satyavathi



Smt. Seema Agarwal



Smt. Shaila Manake



Sau Shaila Vijaykumar Athalye



Smt. Shanta Prasad Rangavajhala



Smt. Shashi Prabha Goyal



Shri Shashidhar D S



Sau Shila Ramsukh Tade



Ms Shitalben Girdharlal Nagar



Shri Shivkumar H N

गीताव्रती


Smt. Shobha Nadgir


Shri Shobha Ram


Smt. Shobha Ravindra Deshpande


Shreyasha Shrikant Deshmukh


Shri Shrikant Mulye

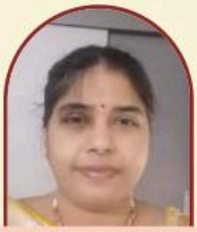

Sau Shruti Kadagaonkar


Smt. Shruti Nayak


Smt. Shubhada Ghodgaonkar


Sau Shubhangi Suresh Dixit


Smt. Shuvalaxmi Sahoo


Siddemsetty Manju



Sau Smita Girish Somani


Sau Sneha Rajendra Wategaonkar


Sau Snehal Aniket Ninave


Smt. Snehal Arun Bhagat


Smt. Sonali Mahawar



Shri Srikanth Bn


Shri Subodh Balvant Kunte


Sau Suhasini Dattatray Choudekar


Shri Sumukh B Ranade


Smt. Sunanda Dilip Patki


Smt. Sunanda Dnyanoba Kople


Smt. Sunanda Joshi


Smt. Sunanda Sudhakar Wakade


Smt. Sunita Bhatter


Sau Surekha Desai


Smt. Suvarna Walvekar


Shri Swarup Halder


Smt. Sweta Atal


Smt. Trupti Kapil Acharya

गीताव्रती


Sau Ulka Dilip Kulkarni


Smt. Uma Shetty


Smt. Uma Singh


Smt. Urmila Jagdish Agrawal


Sau Usha Anil Mahajan


Smt. Varsha Ashok Desai


Sau Varsha Vijay Patil


Shri Vasudev Ramachandra Rajpathak


Smt. Veena Ganorkar


Sau Veena Suhas Khambe


Smt. Veena Verma


Ms Venkata Sai Serenya Mandapeka


Smt. Vidya Geetha


Sau Vijaya Dattatrey Wadekar


Smt. Vimpa Vijay Sarvaiya


Shri Vinit Joshi


Sau Vrunda Samir Sapre



Ms Vyom Amit Damle


Shri Yadnyesh Rajkumar Ghuge


Shri Yadvendra Somra


Ms Yashasvi Bhushan


Shri Yashwant Bhojwani

आँकड़ों की नज़र में

Geeta Sewi Volunteers across the globe 5,000

Registered Participants from 161 Countries 654,325

Geeta Classes Conducted yet 3,48,214

Extra Classes

Gīta Guñjan - 100
Gīta Jijñasu - 92
Gīta Pāthak - 173
Gīta Pathik - 98
Gīta Vratī - 56

Total Passed in Examinations

Gīta Jijñasu - 22,059
Gīta Pāthak - 6,740
Gīta Pathik - 1,730
Gīta Vratī - 791

Grammar Sessions

44 Session in 10 languages

Total Vivechan Sessions

Hindi - 741
English – 302

विद्या धर्मेण शोभते

गीता परिवार

www.geetapariwar.org
learngeeta.com

+91 2425 222299
+91 2425 225011

All rights reserved,
Geeta Pariwar, Sangamner
Maharashtra-433605

LEARN GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन

LearnGeeta
Now on APP

Android App
https://bit.ly/LGand1

Iphone App
https://bit.y/LGiOs1

Website
http://app.learngeeta.com



https://www.learngeeta.com

https://www.youtube.com/@GeetaPariwar

https://www.facebook.com/geetaparivar

https://mobile.twitter.com/Learn_Geeta

https://www.instagram.com/geetaparivar/